SHAITAN SINGH CHOUHAN

18 Dec 1961

04:00 AM

Sendla

Model: Web-KundliDarpan

Order No: 119239701

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**17-18/12/1961**
दिन	रवि-सोमवार
जन्म समय	**04:00:00 घंटे**
इष्ट	51:51:16 घटी
स्थान	**Sendla**
राज्य	Rajasthan
देश	India

अक्षांश	24:56:16 उत्तर
रेखांश	73:12:41 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:37:09 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	03:22:50 घंटे
वेलान्तर	00:03:58 घंटे
साम्पातिक काल	09:08:05 घंटे
सूर्योदय	07:15:29 घंटे
सूर्यास्त	17:50:52 घंटे
दिनमान	10:35:22 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	हेमन्त
सूर्य के अंश	02:26:37 धनु
लग्न के अंश	18:44:46 तुला

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	तुला - शुक्र
राशि-स्वामी	**मेष - मंगल**
नक्षत्र-चरण	**अश्विनी - 4**
नक्षत्र स्वामी	केतु
योग	शिव
करण	विष्टि
गण	देव
योनि	अश्व
नाड़ी	आद्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	मृग
युँजा	पूर्व
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	ला-लाखन
पाया(राशि-नक्षत्र)	ताम्र - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	धनु

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1883	मार्गशीर्ष	27
पंजाबी	संवत : 2018	पौष	4
बंगाली	सन् : 1368	पौष	3
तमिल	संवत : 2018	मार्गड़ी	3
केरल	कोल्लम : 1137	धनु	3
नेपाली	संवत : 2018	पौष	4
चैत्रादि	संवत : 2018	मार्गशीर्ष	शुक्ल 11
कार्तिकादि	संवत : 2018	मार्गशीर्ष	शुक्ल 11

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 10
तिथि समाप्ति काल _____: 09:22:44
जन्म तिथि _____: 11
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: अश्विनी
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 29:48:34 घंटे
जन्म योग _____: अश्विनी
सूर्योदय कालीन योग ____: परिघ
योग समाप्ति काल _____: 25:41:28 घंटे
जन्म योग _____: शिव
सूर्योदय कालीन करण ____: गर
करण समाप्ति काल _____: 09:22:44 घंटे
जन्म करण _____: विष्टि
भयात _____: 53:45:04
भभोग _____: 58:16:29
भोग्य दशा काल _____: केतु 0 वर्ष 6 मा 14 दि

घात चक्र

मास _____: कार्तिक
तिथि _____: 1-6-11
दिन _____: रविवार
नक्षत्र _____: मघा
योग _____: विष्कुम्भ
करण _____: बव
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: सिंह
लग्न _____: मेष
सूर्य _____: कर्क
चन्द्र _____: मेष
मंगल _____: सिंह
बुध _____: वृष
गुरु _____: कन्या
शुक्र _____: तुला
शनि _____: मिथुन
राहु _____: वृश्चिक

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

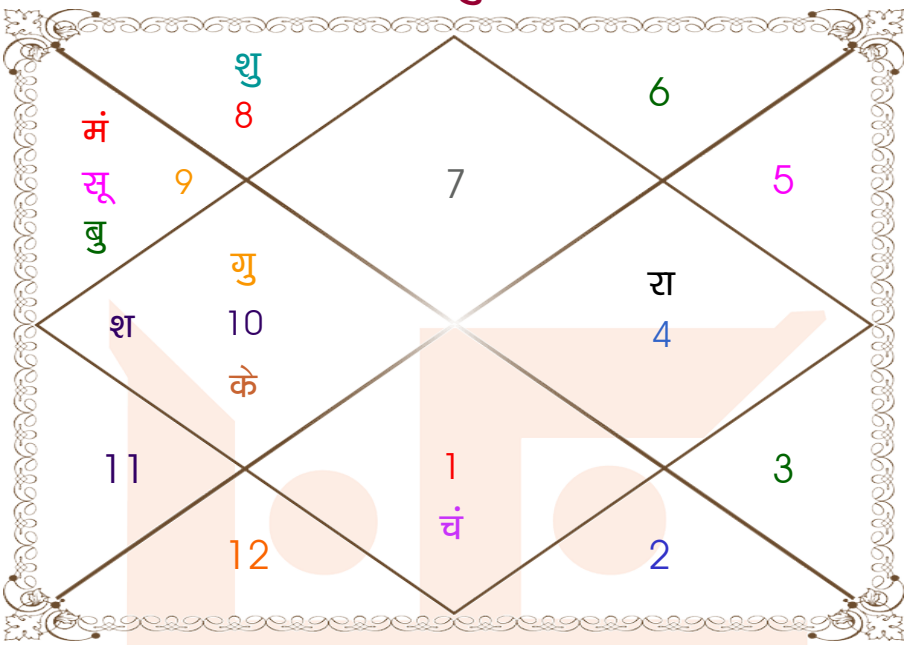

चन्द्र कुंडली

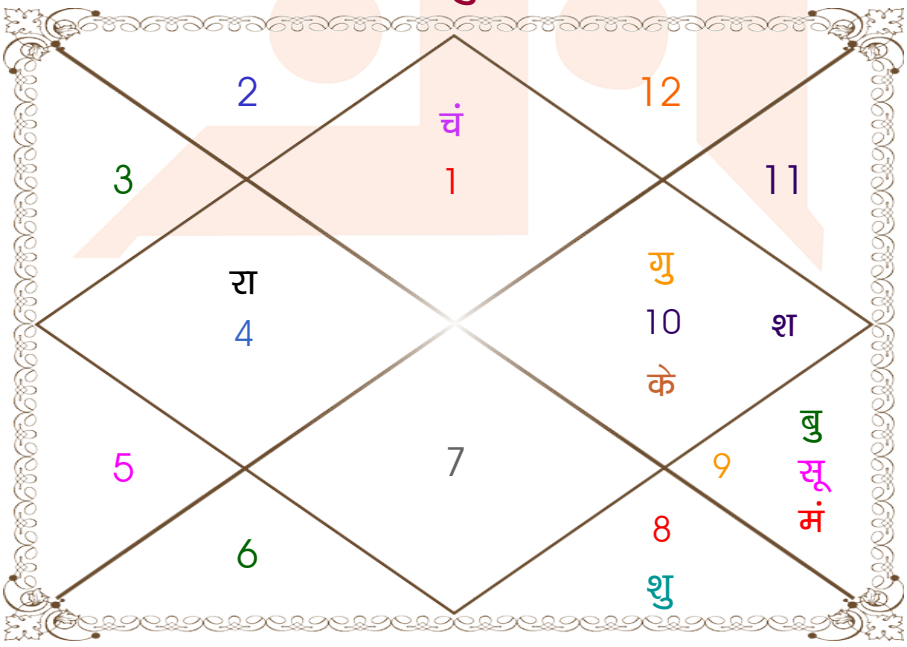

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

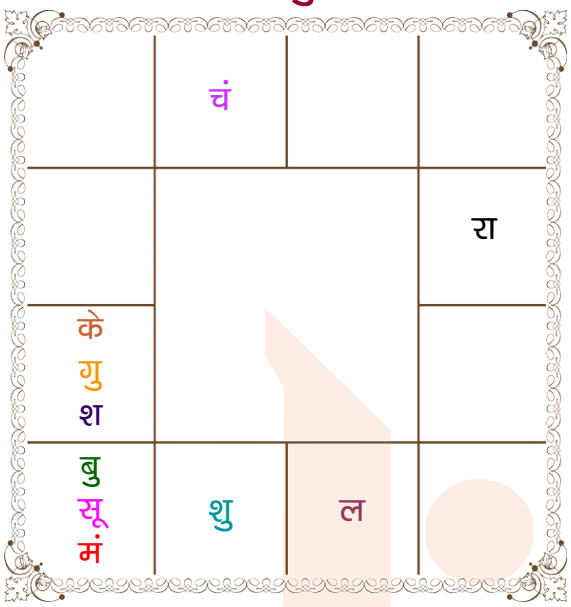

लग्न कुंडली

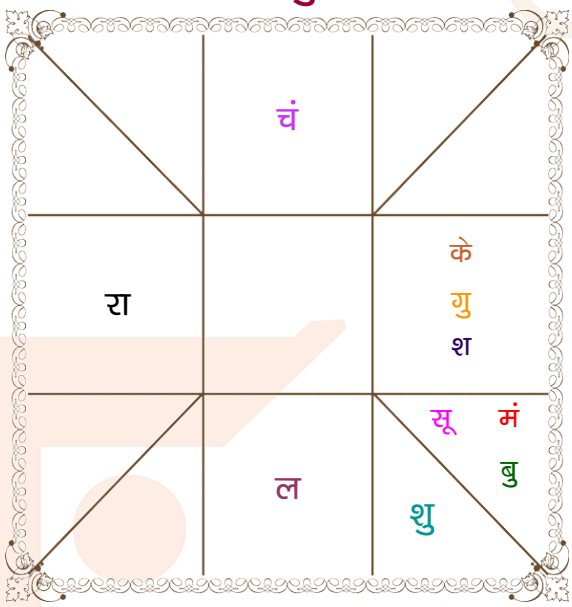

विंशोत्तरी
केतु 0वर्ष 6मा 14दि

केतु

18/12/1961

03/07/2075

केतु	03/07/1962
शुक्र	03/07/1982
सूर्य	03/07/1988
चन्द्र	03/07/1998
मंगल	03/07/2005
राहु	03/07/2023
गुरु	03/07/2039
शनि	03/07/2058
बुध	03/07/2075

योगिनी
भ्रामरी 0वर्ष 3मा 21दि

पिंगला

09/04/2025

10/04/2027

पिंगला	20/05/2025
धान्या	20/07/2025
भ्रामरी	09/10/2025
भद्रिका	18/01/2026
उल्का	20/05/2026
सिद्धा	09/10/2026
संकटा	20/03/2027
मंगला	10/04/2027

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			तुला	18:44:46	315:58:00	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	चंद्र	---
सूर्य			धनु	02:26:37	01:01:04	मूल	1	19	गुरु	केतु	शुक्र	मित्र राशि
चंद्र			मेष	12:18:12	13:40:05	अश्विनी	4	1	मंगल	केतु	बुध	सम राशि
मंगल		अ	धनु	01:34:50	00:44:47	मूल	1	19	गुरु	केतु	शुक्र	मित्र राशि
बुध		अ	धनु	03:20:30	01:34:49	मूल	2	19	गुरु	केतु	सूर्य	सम राशि
गुरु			मक	14:07:09	00:12:24	श्रवण	2	22	शनि	चंद्र	गुरु	नीच राशि
शुक्र			वृश्चि	22:45:17	01:15:28	ज्येष्ठा	2	18	मंगल	बुध	चंद्र	सम राशि
शनि			मक	04:47:54	00:06:24	उत्तराषाढ़ा	3	21	शनि	सूर्य	शनि	स्वराशि
राहु	व		कर्क	26:17:09	00:06:51	आश्लेषा	3	9	चंद्र	बुध	गुरु	शत्रु राशि
केतु	व		मक	26:17:09	00:06:51	धनिष्ठा	1	23	शनि	मंगल	गुरु	शत्रु राशि
हर्ष	व		सिंह	07:09:42	00:00:39	मघा	3	10	सूर्य	केतु	राहु	---
नेप			तुला	19:15:44	00:01:45	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	मंगल	---
प्लूटो	व		सिंह	16:48:03	00:00:10	पू०फाल्गुनी	2	11	सूर्य	शुक्र	चंद्र	---
दशम भाव			कर्क	21:13:36	--	आश्लेषा	--	9	चंद्र	बुध	शुक्र	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:19:21

लग्न-चलित

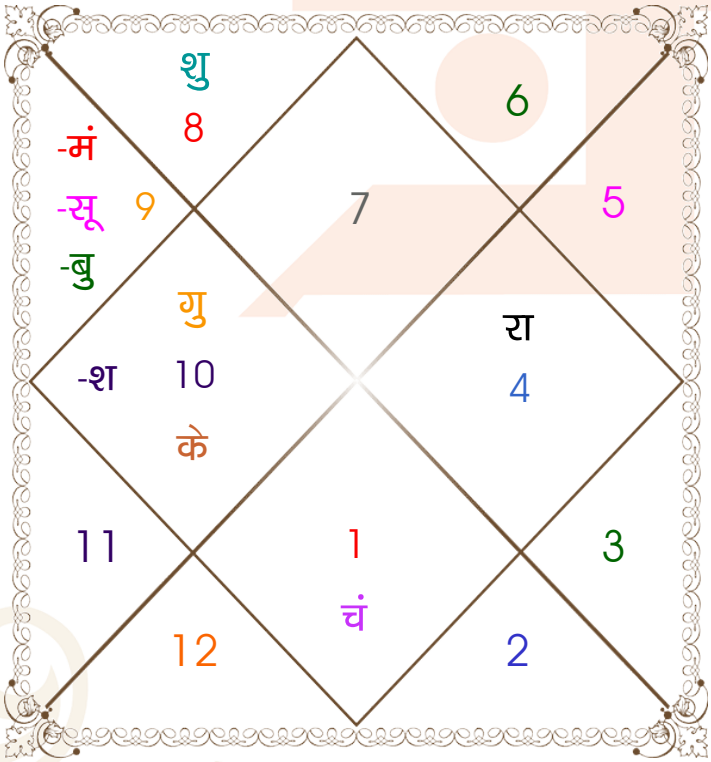

चन्द्र कुंडली

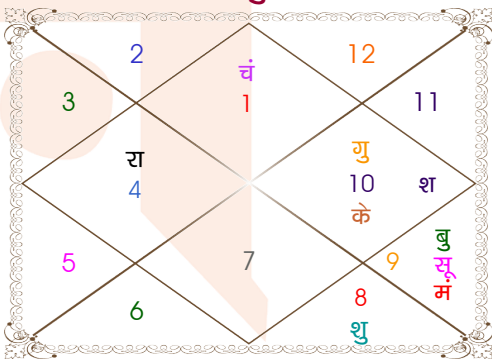

नवमांश कुंडली

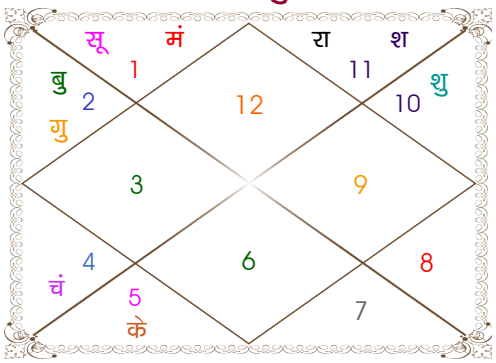

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	तुला	04:09:34	तुला	18:44:46
2	वृश्चिक	04:09:34	वृश्चिक	19:34:23
3	धनु	04:59:11	धनु	20:23:59
4	मकर	05:48:48	मकर	21:13:36
5	कुम्भ	05:48:48	कुम्भ	20:23:59
6	मीन	04:59:11	मीन	19:34:23
7	मेष	04:09:34	मेष	18:44:46
8	वृष	04:09:34	वृष	19:34:23
9	मिथुन	04:59:11	मिथुन	20:23:59
10	कर्क	05:48:48	कर्क	21:13:36
11	सिंह	05:48:48	सिंह	20:23:59
12	कन्या	04:59:11	कन्या	19:34:23

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	तुला	18:44:46
2	वृश्चिक	17:58:29
3	धनु	18:51:39
4	मकर	21:13:36
5	कुम्भ	23:26:52
6	मीन	22:58:46
7	मेष	18:44:46
8	वृष	17:58:29
9	मिथुन	18:51:39
10	कर्क	21:13:36
11	सिंह	23:26:52
12	कन्या	22:58:46

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती

चलित कुंडली

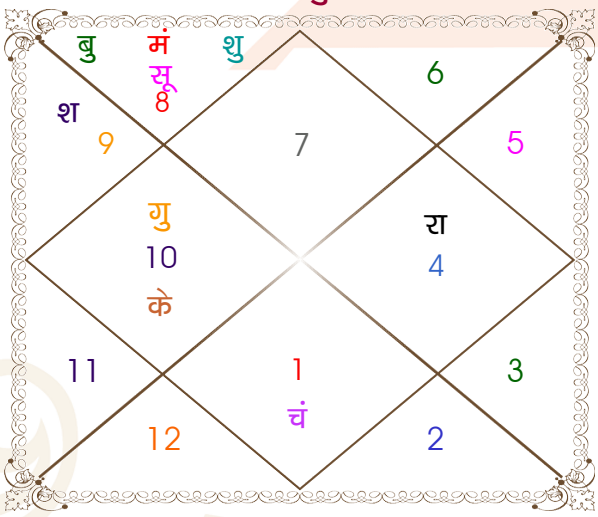

भाव कुंडली

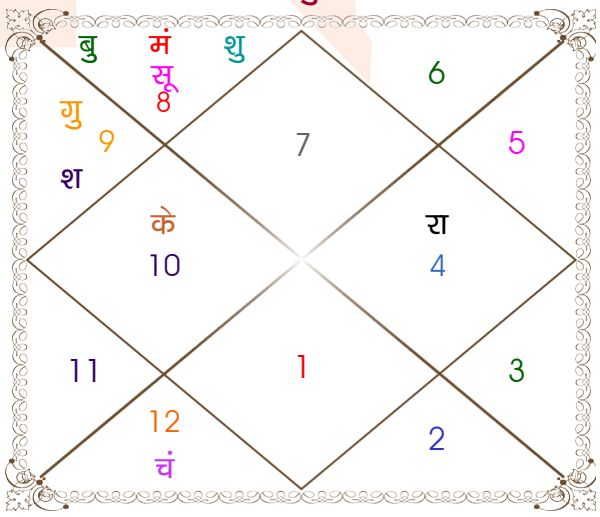

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	ज्ञाति	पितृ	बाल	मुदित	आगमन	3.88	26 %
चंद्र	भ्रातृ	मातृ	युवा	शान्त	सभा	3.98	47 %
मंगल	कलत्र	भ्रातृ	बाल	विकल	आगम	0.00	44 %
बुध	पुत्र	ज्ञाति	बाल	विकल	सभा	0.00	24 %
गुरु	अमात्य	धन	युवा	भीत	भोजन	0.18	39 %
शुक्र	आत्मा	कलत्र	कुमार	शान्त	कौतुक	2.97	62 %
शनि	मातृ	आयु	मृत	स्वस्थ	गमन	4.38	29 %
राहु	---	ज्ञान	बाल	खल	कौतुक	0.00	65 %
केतु	---	मोक्ष	बाल	खल	कौतुक	0.00	65 %
कुल						15.40	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती

चलित कुंडली

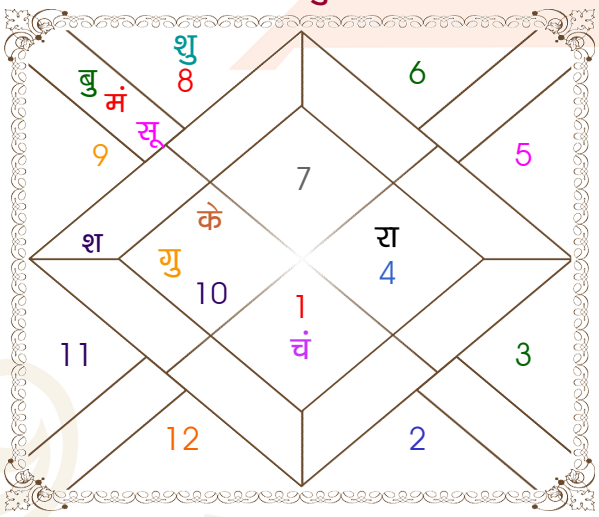

लग्न-चलित

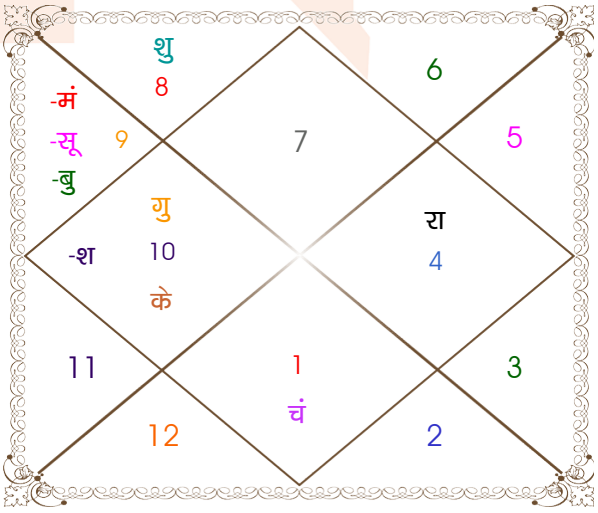

सुदर्शन चक्र

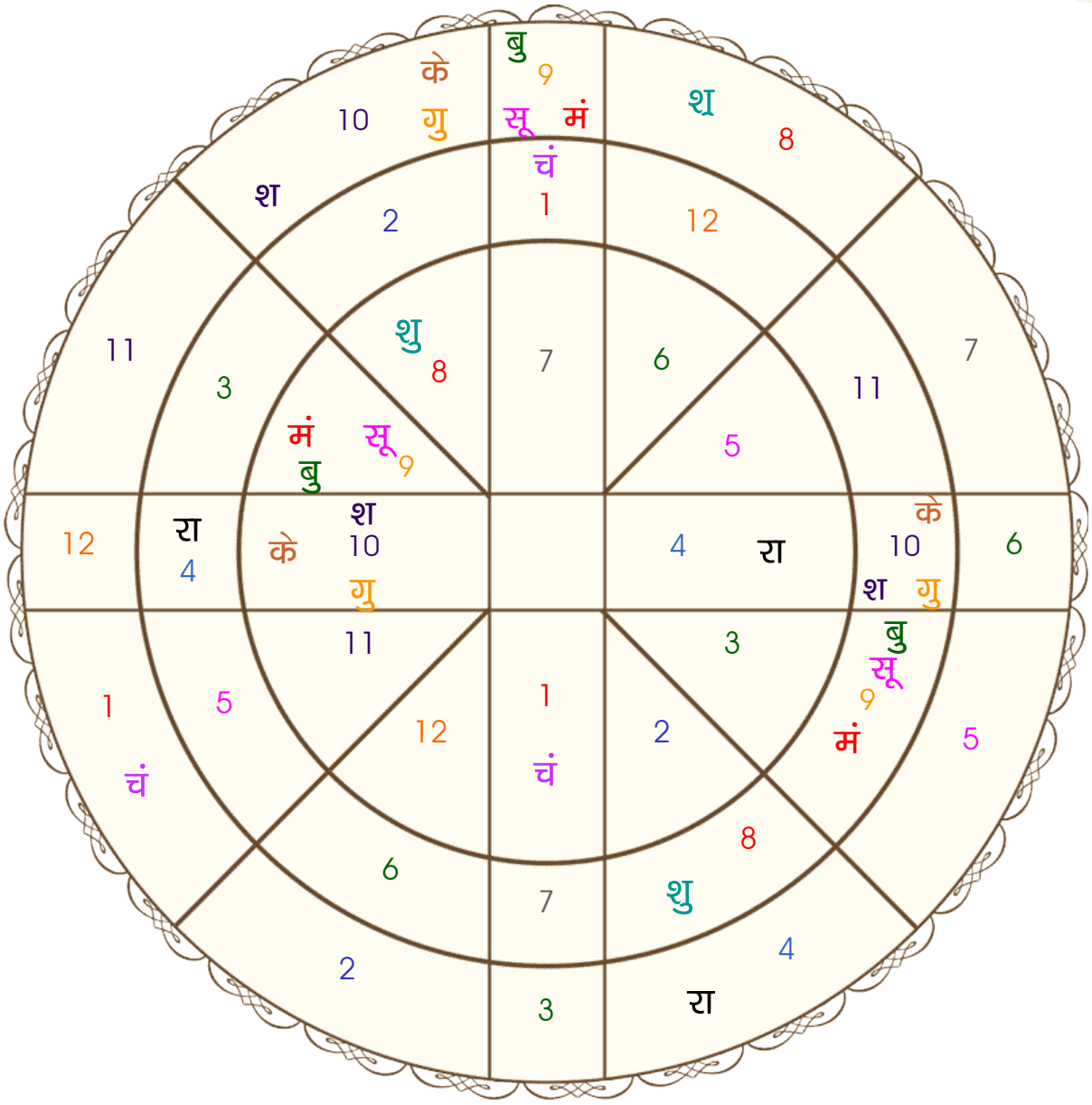

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : केतु 0 वर्ष 5 मास 26 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		धनु	02:32:30	गुरु	केतु	शुक्र	शनि
चंद्र		मेष	12:24:05	मंगल	केतु	बुध	मंगल
मंगल		धनु	01:40:42	गुरु	केतु	शुक्र	राहु
बुध		धनु	03:26:23	गुरु	केतु	सूर्य	बुध
गुरु		मक	14:13:02	शनि	चंद्र	गुरु	शनि
शुक्र		वृश्चि	22:51:10	मंगल	बुध	चंद्र	शनि
शनि		मक	04:53:47	शनि	सूर्य	शनि	गुरु
राहु	व	कर्क	26:23:02	चंद्र	बुध	गुरु	शनि
केतु	व	मक	26:23:02	शनि	मंगल	गुरु	शनि
हर्ष	व	सिंह	07:15:34	सूर्य	केतु	राहु	सूर्य
नेप		तुला	19:21:37	शुक्र	राहु	मंगल	राहु
प्लूटो	व	सिंह	16:53:56	सूर्य	शुक्र	चंद्र	बुध

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	तुला	18:50:39	शुक्र	राहु	चंद्र	बुध
2	वृश्चि	18:04:22	मंगल	बुध	बुध	गुरु
3	धनु	18:57:32	गुरु	शुक्र	राहु	शनि
4	मक	21:19:29	शनि	चंद्र	शुक्र	राहु
5	कुंभ	23:32:45	शनि	गुरु	शनि	राहु
6	मीन	23:04:39	गुरु	बुध	चंद्र	केतु
7	मेष	18:50:39	मंगल	शुक्र	राहु	शनि
8	वृष	18:04:22	शुक्र	चंद्र	बुध	केतु
9	मिथु	18:57:32	बुध	राहु	चंद्र	केतु
10	कर्क	21:19:29	चंद्र	बुध	शुक्र	बुध
11	सिंह	23:32:45	सूर्य	शुक्र	शनि	राहु
12	कन्या	23:04:39	बुध	चंद्र	सूर्य	शनि

के.पी. अयनांश : 23:13:28

फॉरच्युना : कुम्भ 28:42:14

लग्न कुंडली

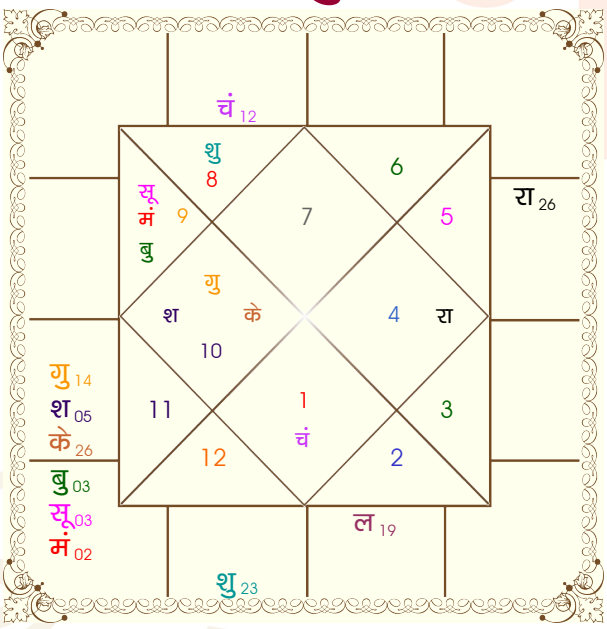

भाव कुंडली

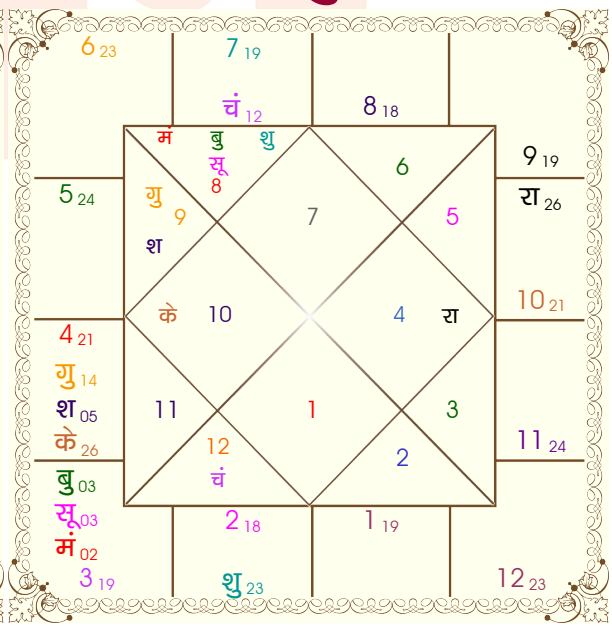

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	शुक्र-
2	सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र+ शनि, राहु, केतु+
3	गुरु, शनि,
4	सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, शनि- केतु,
5	शनि-
6	चंद्र, गुरु+
7	मंगल- केतु-
8	शुक्र-
9	बुध- शुक्र- राहु-
10	चंद्र- गुरु- राहु,
11	सूर्य- शनि-
12	बुध- शुक्र- राहु-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	2, 4, 11-
चंद्र	4, 6, 10-
मंगल	2, 4, 7-
बुध	2, 4, 9- 12-
गुरु	3, 6+ 10-
शुक्र	1- 2+ 8- 9- 12-
शनि	2, 3, 4- 5- 11-
राहु	2, 9- 10, 12-
केतु	2+ 4, 7-

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	राहु
लग्न राशि स्वामी	शुक्र
राशि नक्षत्र स्वामी	केतु
राशि स्वामी	मंगल
वार स्वामी	चन्द्र
लग्न अन्तर स्वामी	चन्द्र
राशि अन्तर स्वामी	बुध

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

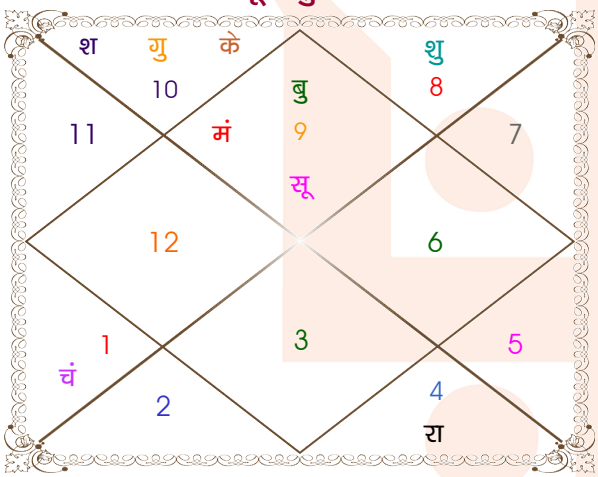

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

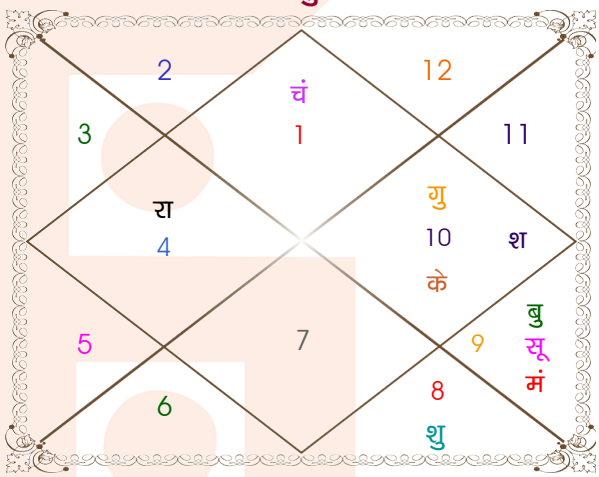

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

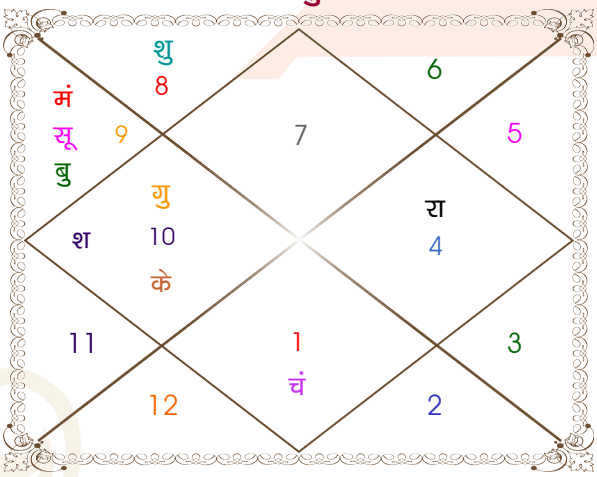

देह विचारः

होरा कुंडली

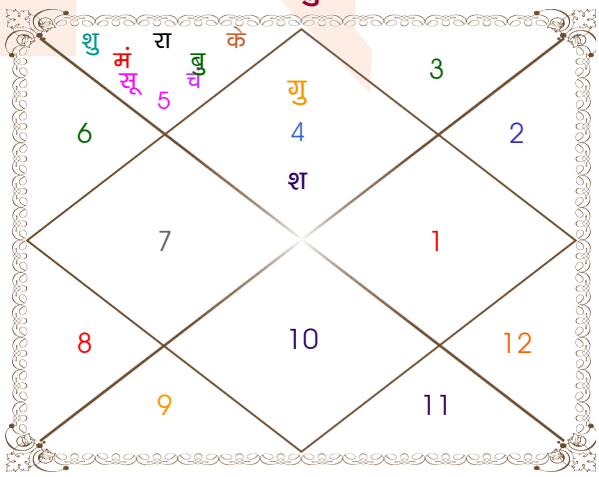

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

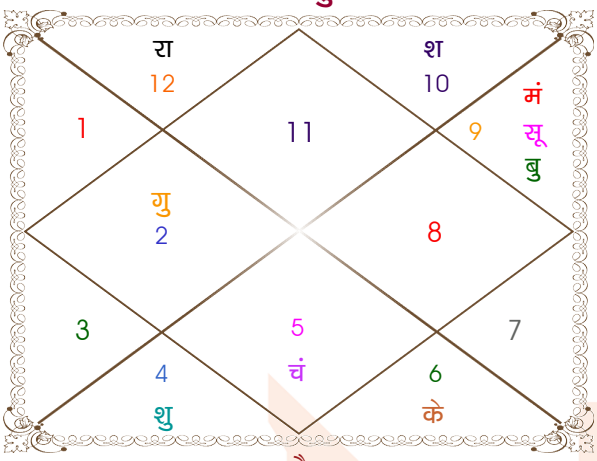

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

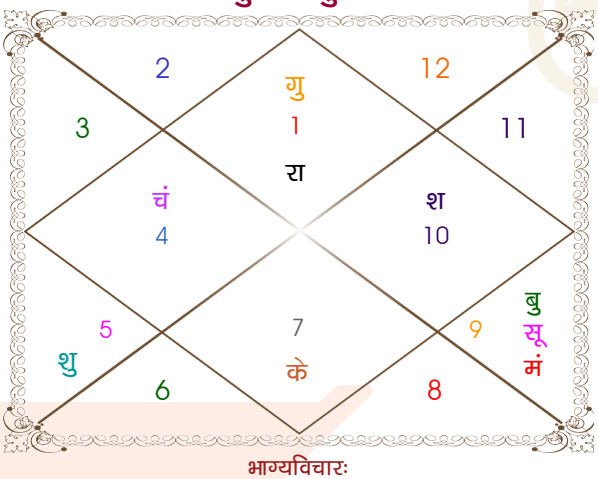

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

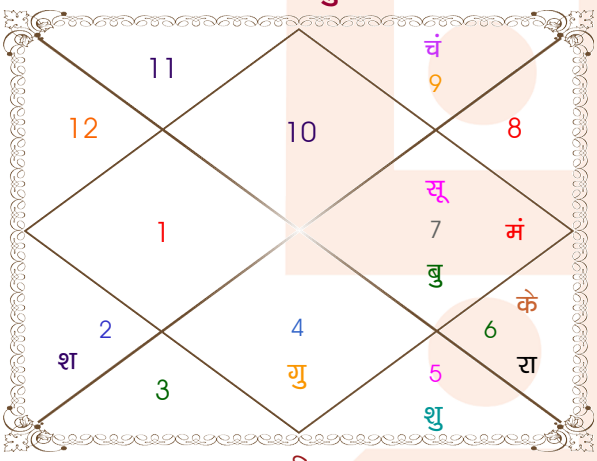

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

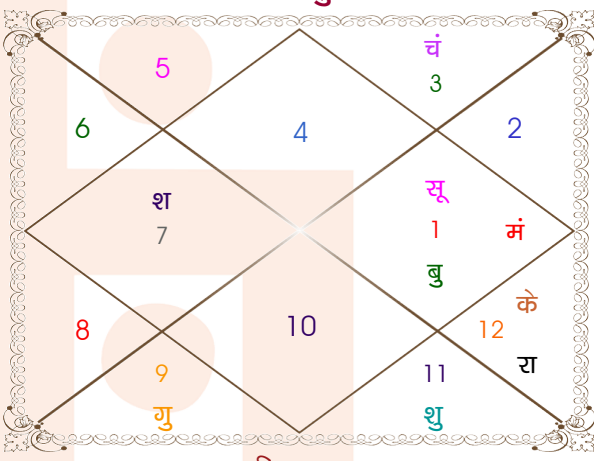

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

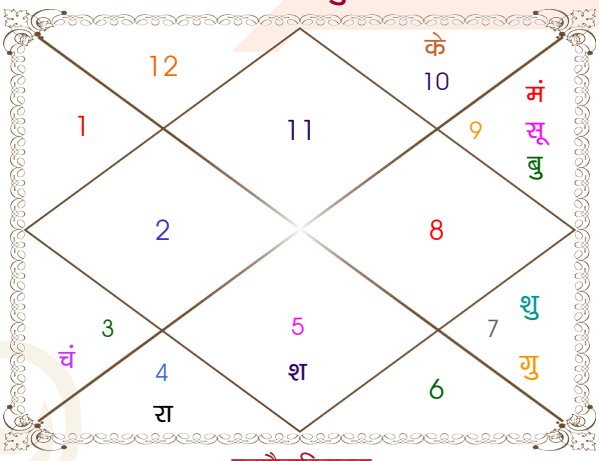

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

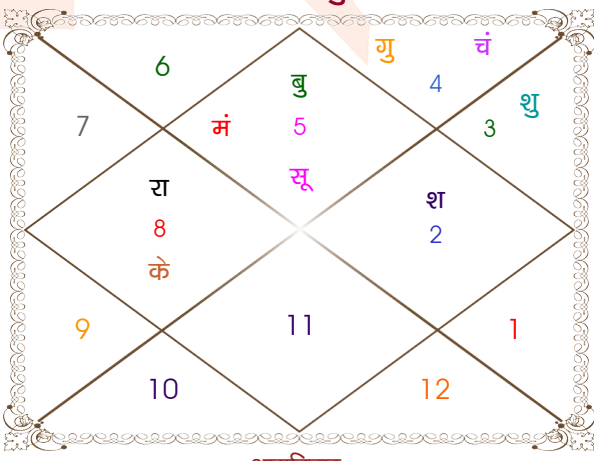

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

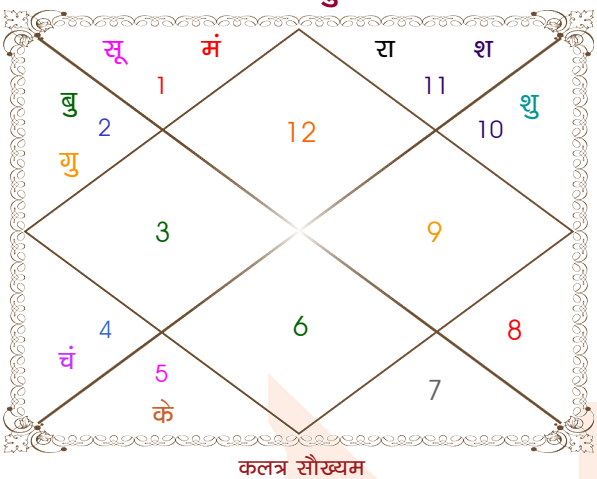

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

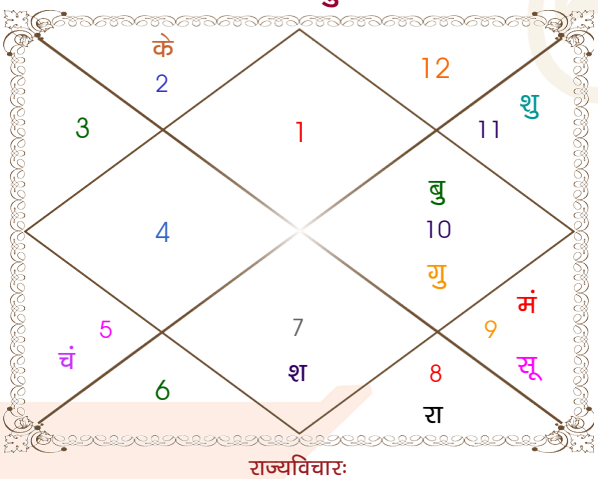

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

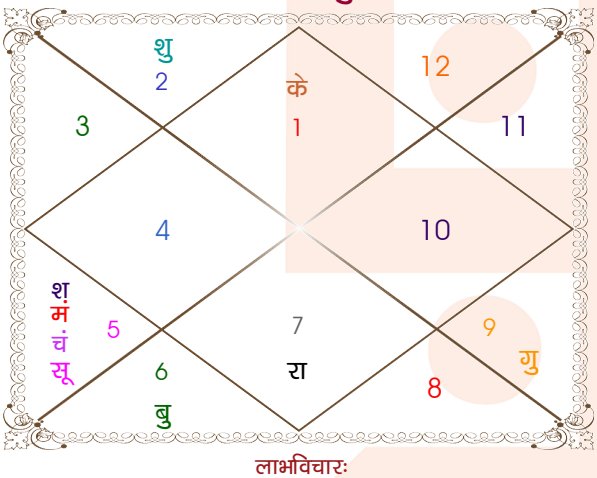

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

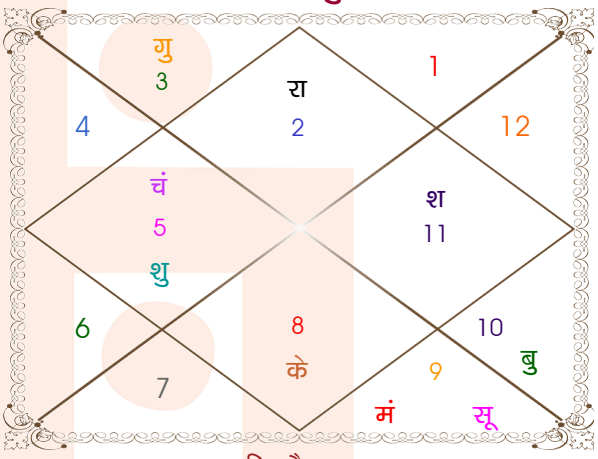

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

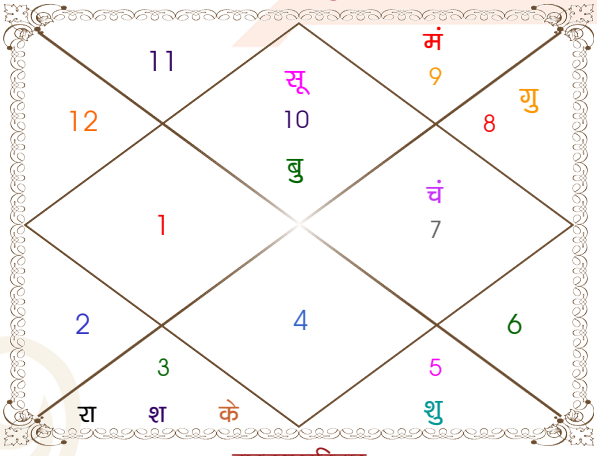

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

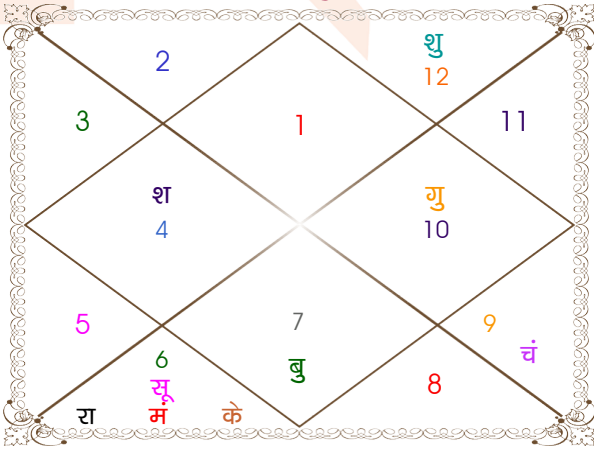

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

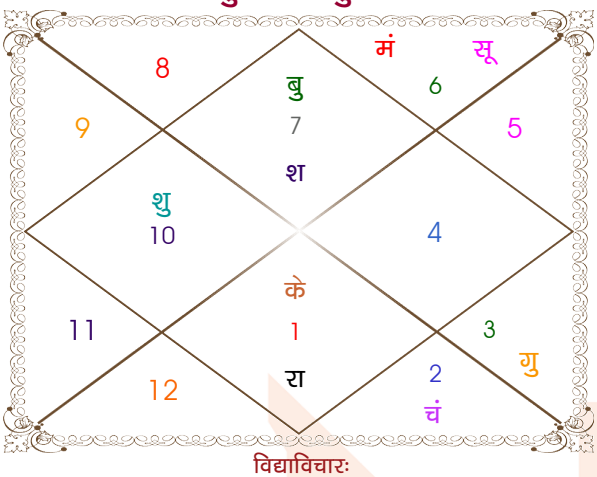

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

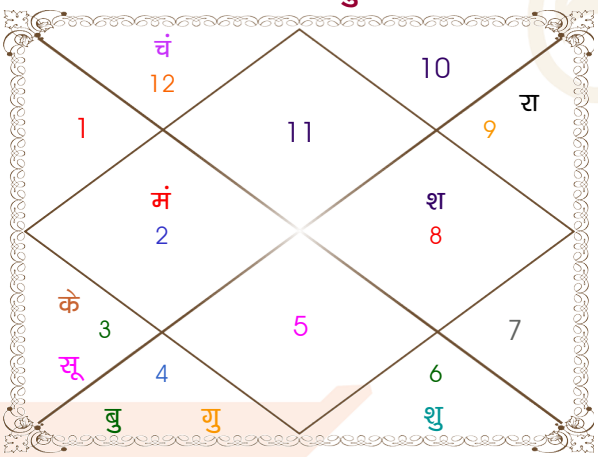

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

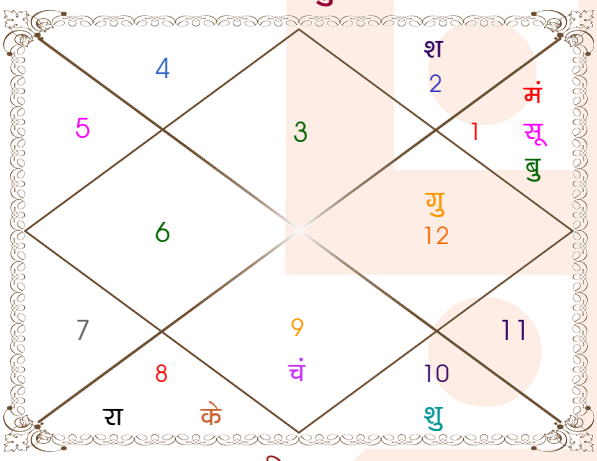

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

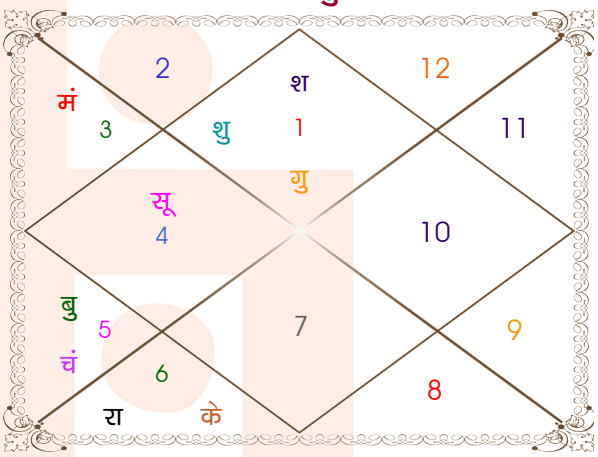

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

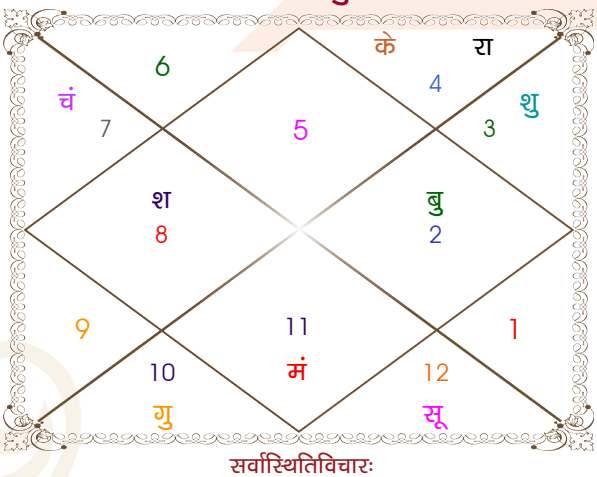

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

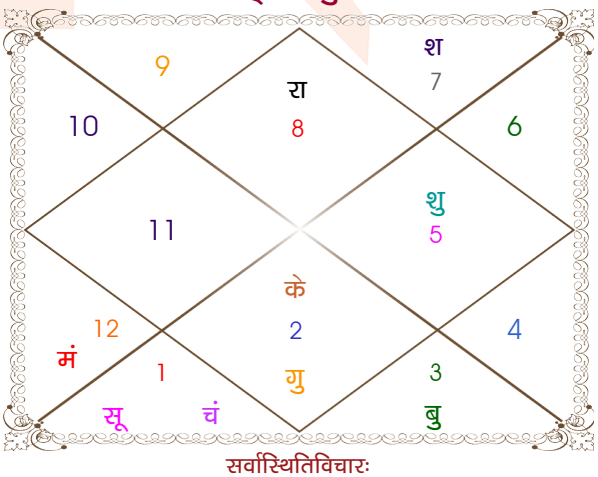

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	तुला	धनु	मेष	धनु	धनु	मक	वृश्चि	मक	कर्क	मक
होरा	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह	कर्क	सिंह	कर्क	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	कुंभ	धनु	सिंह	धनु	धनु	वृष	कर्क	मक	मीन	कन्या
चतुर्थांश	मेष	धनु	कर्क	धनु	धनु	मेष	सिंह	मक	मेष	तुला
सप्तमांश	कुंभ	धनु	मिथु	धनु	धनु	तुला	तुला	सिंह	कर्क	मक
नवमांश	मीन	मेष	कर्क	मेष	वृष	वृष	मक	कुंभ	कुंभ	सिंह
दशमांश	मेष	धनु	सिंह	धनु	मक	मक	कुंभ	तुला	वृश्चि	वृष
द्वादशांश	वृष	धनु	सिंह	धनु	मक	मिथु	सिंह	कुंभ	वृष	वृश्चि
षोडशांश	मक	मक	तुला	धनु	मक	वृश्चि	सिंह	मिथु	मिथु	मिथु
विंशांश	मेष	कन्या	धनु	कन्या	तुला	मक	मीन	कर्क	कन्या	कन्या
चतुर्विंशांश	तुला	कन्या	वृष	कन्या	तुला	मिथु	मक	तुला	मेष	मेष
सप्तविंशांश	कुंभ	मिथु	मीन	वृष	कर्क	कर्क	कन्या	वृश्चि	धनु	मिथु
त्रिंशांश	मिथु	मेष	धनु	मेष	मेष	मीन	मक	वृष	वृश्चि	वृश्चि
खवेदांश	मेष	कर्क	सिंह	मिथु	सिंह	मेष	मेष	मेष	कन्या	कन्या
अक्षवेदांश	सिंह	मीन	तुला	कुंभ	वृष	मक	मिथु	वृश्चि	कर्क	कर्क
षष्ट्यंश	वृश्चि	मेष	मेष	मीन	मिथु	वृष	सिंह	तुला	वृश्चि	वृष

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	3 व्यंजन	3 व्यंजन	4 गोपुर	4 नागपुष्प
चन्द्र	1 ---	1 ---	1 ---	3 कुसुम
मंगल	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	2 भेदक
बुध	0 ---	0 ---	1 ---	1 ---
गुरु	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	3 कुसुम
शुक्र	0 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
शनि	4 चामर	4 चामर	6 पारवत	8 चन्दनवन
राहु	0 ---	0 ---	1 ---	3 कुसुम
केतु	0 ---	0 ---	0 ---	0 ---

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	15.80	11.85	17.80	14.85	10.40	12.90	18.90	8.65	10.70
सप्तवर्ग	16.00	11.75	17.75	14.78	10.55	13.95	17.65	8.80	10.08
दशवर्ग	14.35	9.70	17.70	15.50	11.28	12.93	17.55	7.18	13.43
षोडशवर्ग	13.08	10.68	16.88	15.65	11.55	13.53	17.45	7.45	12.93

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
चंद्र	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र
मंगल	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	---	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शुक्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	---	मित्र	शत्रु	मित्र
शनि	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	---	शत्रु	शत्रु
राहु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु
केतु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	सम	शत्रु	अतिमित्र	सम	सम	अधिशत्रु	सम
चंद्र	सम	---	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	सम
मंगल	सम	सम	---	अधिशत्रु	अतिमित्र	मित्र	मित्र	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	सम	अधिशत्रु	शत्रु	---	मित्र	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
गुरु	अतिमित्र	अतिमित्र	अतिमित्र	सम	---	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शुक्र	सम	अधिशत्रु	मित्र	अतिमित्र	मित्र	---	अतिमित्र	सम	अतिमित्र
शनि	सम	सम	सम	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	---	सम	अधिशत्रु
राहु	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	---	अधिशत्रु
केतु	सम	सम	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	17	53	41	34	3	19	35
सप्तवर्गज बल	135	79	158	94	86	107	158
ओजयुग्मक बल	30	15	30	15	0	30	15
केन्द्र बल	15	60	15	15	60	30	60
द्रेष्काण बल	15	0	15	0	0	15	0
कुल स्थान बल	212	207	259	158	149	200	268
कुल दिग्बल	16	33	17	45	32	41	25
नतोन्नत बल	17	43	43	60	17	17	43
पक्ष बल	17	87	17	17	43	43	17
त्रिभाग बल	0	0	60	0	60	0	0
अब्द बल	0	0	0	0	0	15	0
मास बल	0	0	0	0	0	30	0
वार बल	45	0	0	0	0	0	0
होरा बल	0	0	60	0	0	0	0
अयन बल	0	13	0	60	6	1	56
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	79	142	180	137	127	106	116
कुल चेष्टाबल	0	0	1	8	16	5	11
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	9	-12	9	9	2	10	5
कुल षट्बल	377	421	482	381	359	406	434
रूप षट्बल	6.3	7.0	8.0	6.4	6.0	6.8	7.2
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.3	1.2	1.6	0.9	0.9	1.2	1.4
संबंधित पद	3	5	1	7	6	4	2

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	4.97	47.94	5.50	15.95	6.93	10.11	19.80
कष्ट फल	49.91	10.74	33.39	37.02	50.17	47.51	34.89

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	406	482	359	434	434	359	482	406	381	421	377	381
भावदिग्बल	60	10	10	60	20	40	30	40	20	0	50	50
भावदृष्टि बल	14	10	6	10	27	25	42	80	48	76	53	59
कुल भाव बल	479	502	376	504	481	424	554	526	449	497	480	491
रूप भाव बल	8.0	8.4	6.3	8.4	8.0	7.1	9.2	8.8	7.5	8.3	8.0	8.2
संबंधित पद	9	4	12	3	7	11	1	2	10	5	8	6

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	तुला	18:44:46	--	--	स्वाति	4	15
गुलिक	गु	कर्क	18:16:30	--	--	आश्लेषा	1	9
काल	का	सिंह	10:41:53	--	--	मघा	4	10
मृत्यु	मृ	कन्या	26:13:10	--	--	चित्रा	1	14
यमघंटक	यम	वृश्चि	10:29:20	--	--	अनुराधा	3	17
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	तुला	18:21:55	--	--	स्वाति	4	15
धूम	धू	मेष	15:46:37	--	--	भरणी	1	2
व्यतिपात	व्य	मीन	14:13:23	--	--	उ०भाद्रपद	4	26
परिवेश	परि	कन्या	14:13:23	--	--	हस्त	2	13
इन्द्रचाप	इ	तुला	15:46:37	--	--	स्वाति	3	15
उपकेतु	उप	वृश्चि	02:26:37	--	--	विशाखा	4	16

प्राणपद	:	कर्क	14:58:42	कारकाँश लग्न	:	कुंभ	26:34:23
भाव लग्न	:	तुला	13:34:13	होरा लग्न	:	सिंह	24:41:49
घटी लग्न	:	मीन	28:04:38	वर्णद लग्न	:	मेष	16:33:25

उपग्रह कुंडली

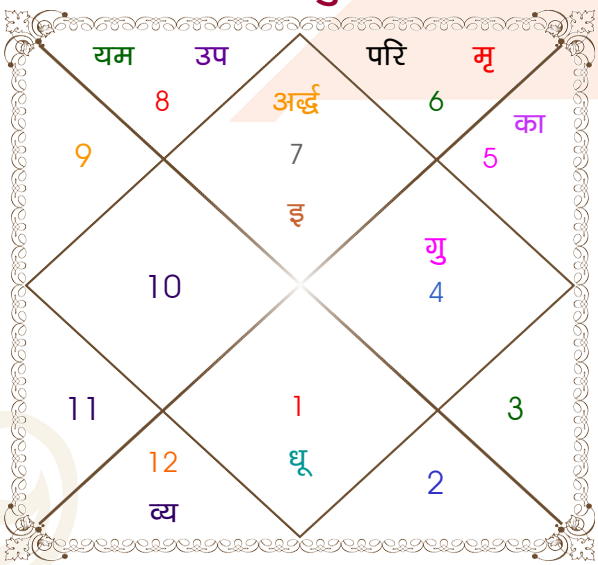

आरूढ़ कुंडली

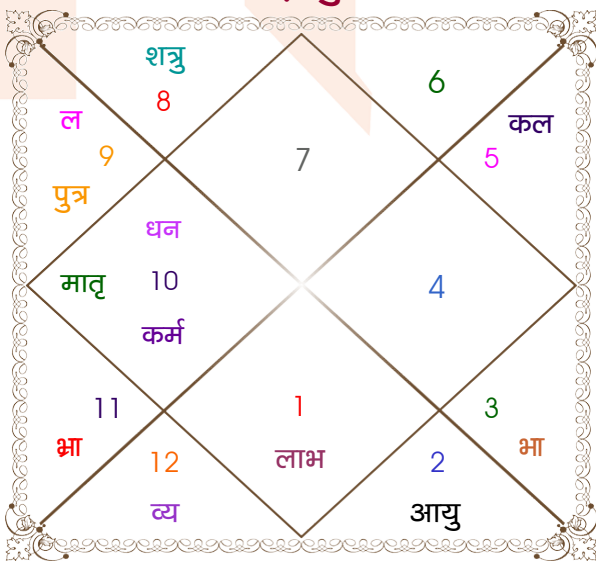

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	कुल
शनि	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	8
गुरु	0	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	4
लग्न	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	6
कुल	3	5	3	3	3	3	4	4	5	7	5	3	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	4
गुरु	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	7
मंगल	1	1	0	0	0	1	1	0	0	1	1	0	6
सूर्य	0	1	1	1	0	1	1	0	0	0	1	0	6
शुक्र	0	1	0	1	1	1	0	0	0	1	1	1	7
बुध	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	4
कुल	4	4	4	5	3	5	5	2	3	4	6	4	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	कुल
शनि	0	1	0	0	1	0	0	1	1	1	1	1	7
गुरु	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	1	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	5
शुक्र	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	4
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
चंद्र	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	3
लग्न	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	5
कुल	3	2	3	2	4	2	4	3	2	5	7	2	39

बुध का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	कुल
शनि	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	8
गुरु	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	0	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	6
लग्न	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	7
कुल	4	5	4	3	3	4	3	5	6	5	5	7	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	0	1	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	7
सूर्य	1	1	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	9
शुक्र	0	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	1	6
बुध	1	0	1	1	1	0	0	1	1	1	0	1	8
चंद्र	0	1	0	0	1	0	0	1	0	1	0	1	5
लग्न	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	9
कुल	5	4	7	4	3	4	5	6	4	6	2	6	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	कुल
शनि	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	1	7
गुरु	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	1	5
मंगल	1	0	0	1	1	0	1	0	0	1	0	1	6
सूर्य	1	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	5
चंद्र	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	0	9
लग्न	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	8
कुल	7	3	2	5	4	3	6	3	3	7	3	6	52

शनि का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	4
मंगल	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	1	0	6
सूर्य	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	7
शुक्र	0	0	0	1	0	0	0	0	1	1	0	0	3
बुध	0	0	0	0	1	0	1	1	1	1	1	0	6
चंद्र	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	3
लग्न	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	6
कुल	2	2	3	2	4	4	3	2	5	5	4	3	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	कुल
शनि	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	6
गुरु	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	9
मंगल	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	5
सूर्य	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
शुक्र	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	0	7
बुध	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	7
चंद्र	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	5	4	4	5	5	6	2	4	4	4	1	5	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	4	4	3	2	5	5	4	3	2	2	3	39
गुरु	4	3	4	5	6	4	6	2	6	5	4	7	56
मंगल	4	2	4	3	2	5	7	2	3	2	3	2	39
सूर्य	3	3	4	4	5	7	5	3	3	5	3	3	48
शुक्र	3	6	3	3	7	3	6	7	3	2	5	4	52
बुध	3	4	3	5	6	5	5	7	4	5	4	3	54
चंद्र	4	4	4	5	3	5	5	2	3	4	6	4	49
बिन्दु	23	26	26	28	31	34	39	27	25	25	27	26	337
रेखा	33	30	30	28	25	22	17	29	31	31	29	30	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	2	2	0	0	3	3	1	1	0	0	0	12
गुरु	0	0	0	3	2	1	2	0	2	2	0	5	17
मंगल	2	0	1	1	0	3	4	0	1	0	0	0	12
सूर्य	0	0	1	1	2	4	2	0	0	2	0	0	12
शुक्र	0	4	0	0	4	1	3	4	0	0	2	1	19
बुध	0	0	0	2	3	1	2	4	1	1	1	0	15
चंद्र	1	0	0	3	0	1	1	0	0	0	2	2	10
रेखा	3	6	4	10	11	14	17	9	5	5	5	8	97

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	2	2	0	0	1	1	1	1	0	0	0	8
गुरु	0	0	0	3	2	1	2	0	2	2	0	3	15
मंगल	2	0	1	1	0	2	4	0	1	0	0	0	11
सूर्य	0	0	1	1	2	3	2	0	0	2	0	0	11
शुक्र	0	1	0	0	4	1	3	4	0	0	2	1	16
बुध	0	0	0	2	3	1	2	4	1	1	0	0	14
चंद्र	1	0	0	3	0	1	1	0	0	0	2	2	10
रेखा	3	3	4	10	11	10	15	9	5	5	4	6	85

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	71	77	73	103	115	142	65
ग्रह पिंड	30	5	28	61	66	28	25
शोध्य पिंड	101	82	101	164	181	170	90

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

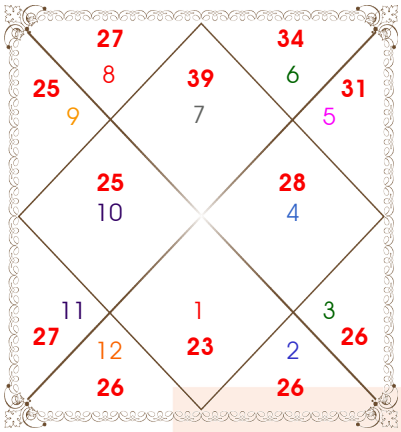

सूर्य का अष्टकवर्ग

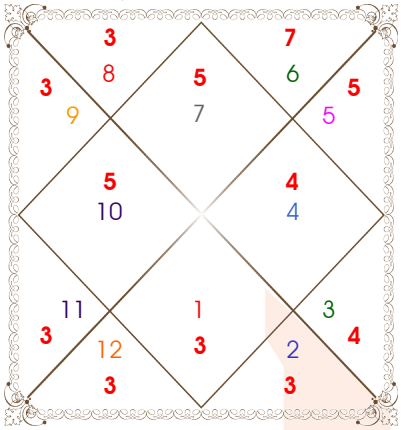

चंद्र का अष्टकवर्ग

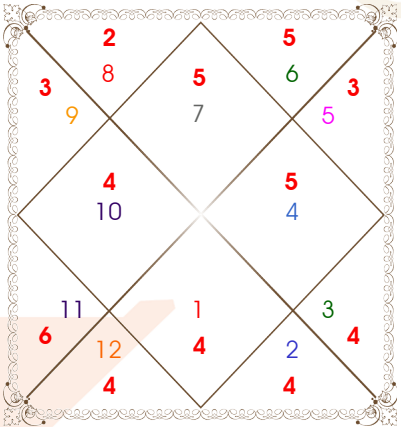

मंगल का अष्टकवर्ग

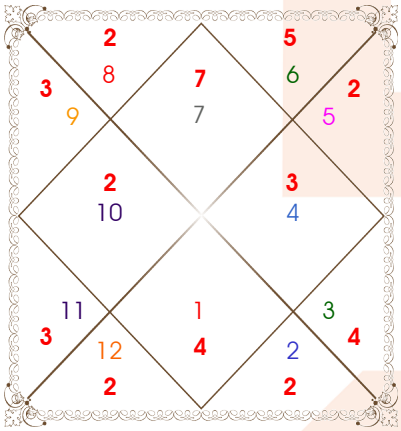

बुध का अष्टकवर्ग

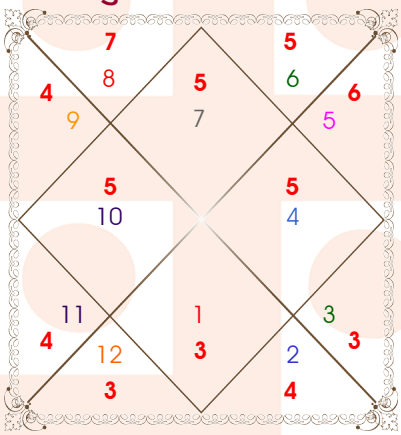

गुरू का अष्टकवर्ग

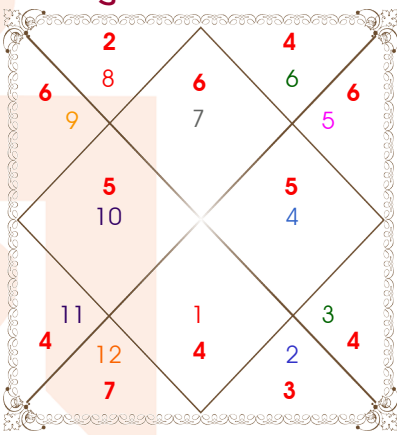

शुक्र का अष्टकवर्ग

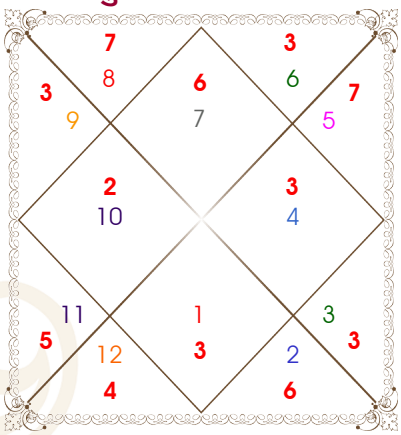

शनि का अष्टकवर्ग

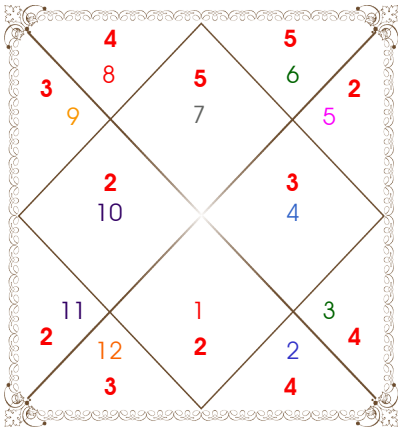

लग्न का अष्टकवर्ग

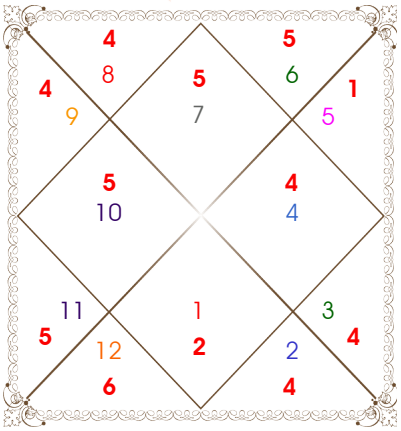

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 0 वर्ष 6 मास 14 दिन

केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष	
18/12/1961		03/07/1962		03/07/1982		03/07/1988		03/07/1998	
03/07/1962		03/07/1982		03/07/1988		03/07/1998		03/07/2005	
	00/00/0000	शुक्र	02/11/1965	सूर्य	21/10/1982	चंद्र	03/05/1989	मंगल	29/11/1998
	00/00/0000	सूर्य	02/11/1966	चंद्र	21/04/1983	मंगल	02/12/1989	राहु	18/12/1999
	00/00/0000	चंद्र	03/07/1968	मंगल	27/08/1983	राहु	03/06/1991	गुरु	23/11/2000
	00/00/0000	मंगल	02/09/1969	राहु	21/07/1984	गुरु	02/10/1992	शनि	02/01/2002
	00/00/0000	राहु	02/09/1972	गुरु	09/05/1985	शनि	03/05/1994	बुध	30/12/2002
	00/00/0000	गुरु	04/05/1975	शनि	21/04/1986	बुध	03/10/1995	केतु	28/05/2003
	00/00/0000	शनि	03/07/1978	बुध	26/02/1987	केतु	03/05/1996	शुक्र	27/07/2004
	18/12/1961	बुध	03/05/1981	केतु	03/07/1987	शुक्र	02/01/1998	सूर्य	02/12/2004
बुध	03/07/1962	केतु	03/07/1982	शुक्र	03/07/1988	सूर्य	03/07/1998	चंद्र	03/07/2005

राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
03/07/2005		03/07/2023		03/07/2039		03/07/2058		03/07/2075	
03/07/2023		03/07/2039		03/07/2058		03/07/2075		18/12/2081	
राहु	15/03/2008	गुरु	21/08/2025	शनि	06/07/2042	बुध	29/11/2060	केतु	30/11/2075
गुरु	09/08/2010	शनि	03/03/2028	बुध	15/03/2045	केतु	26/11/2061	शुक्र	29/01/2077
शनि	15/06/2013	बुध	09/06/2030	केतु	24/04/2046	शुक्र	26/09/2064	सूर्य	06/06/2077
बुध	02/01/2016	केतु	16/05/2031	शुक्र	24/06/2049	सूर्य	02/08/2065	चंद्र	05/01/2078
केतु	20/01/2017	शुक्र	14/01/2034	सूर्य	06/06/2050	चंद्र	02/01/2067	मंगल	03/06/2078
शुक्र	20/01/2020	सूर्य	02/11/2034	चंद्र	05/01/2052	मंगल	30/12/2067	राहु	21/06/2079
सूर्य	14/12/2020	चंद्र	03/03/2036	मंगल	13/02/2053	राहु	18/07/2070	गुरु	27/05/2080
चंद्र	15/06/2022	मंगल	07/02/2037	राहु	21/12/2055	गुरु	23/10/2072	शनि	06/07/2081
मंगल	03/07/2023	राहु	03/07/2039	गुरु	03/07/2058	शनि	03/07/2075	बुध	18/12/2081

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल केतु 0 वर्ष 6 मा 16 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल	
18/12/1961		03/07/1962		02/11/1965		02/11/1966		03/07/1968	
03/07/1962		02/11/1965		02/11/1966		03/07/1968		02/09/1969	
	00/00/0000	शुक्र	22/01/1963	सूर्य	20/11/1965	चंद्र	23/12/1966	मंगल	28/07/1968
	00/00/0000	सूर्य	24/03/1963	चंद्र	20/12/1965	मंगल	27/01/1967	राहु	29/09/1968
	00/00/0000	चंद्र	03/07/1963	मंगल	11/01/1966	राहु	28/04/1967	गुरु	25/11/1968
	18/12/1961	मंगल	12/09/1963	राहु	06/03/1966	गुरु	19/07/1967	शनि	01/02/1969
चंद्र	03/01/1962	राहु	13/03/1964	गुरु	24/04/1966	शनि	23/10/1967	बुध	02/04/1969
मंगल	24/01/1962	गुरु	22/08/1964	शनि	21/06/1966	बुध	17/01/1968	केतु	27/04/1969
राहु	20/03/1962	शनि	03/03/1965	बुध	12/08/1966	केतु	22/02/1968	शुक्र	07/07/1969
गुरु	07/05/1962	बुध	23/08/1965	केतु	02/09/1966	शुक्र	02/06/1968	सूर्य	28/07/1969
शनि	03/07/1962	केतु	02/11/1965	शुक्र	02/11/1966	सूर्य	03/07/1968	चंद्र	02/09/1969

शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु	
02/09/1969		02/09/1972		04/05/1975		03/07/1978		03/05/1981	
02/09/1972		04/05/1975		03/07/1978		03/05/1981		03/07/1982	
राहु	13/02/1970	गुरु	09/01/1973	शनि	03/11/1975	बुध	27/11/1978	केतु	28/05/1981
गुरु	09/07/1970	शनि	13/06/1973	बुध	15/04/1976	केतु	26/01/1979	शुक्र	07/08/1981
शनि	30/12/1970	बुध	29/10/1973	केतु	21/06/1976	शुक्र	18/07/1979	सूर्य	28/08/1981
बुध	03/06/1971	केतु	24/12/1973	शुक्र	31/12/1976	सूर्य	07/09/1979	चंद्र	03/10/1981
केतु	06/08/1971	शुक्र	05/06/1974	सूर्य	27/02/1977	चंद्र	03/12/1979	मंगल	28/10/1981
शुक्र	05/02/1972	सूर्य	23/07/1974	चंद्र	03/06/1977	मंगल	01/02/1980	राहु	31/12/1981
सूर्य	30/03/1972	चंद्र	13/10/1974	मंगल	09/08/1977	राहु	05/07/1980	गुरु	25/02/1982
चंद्र	30/06/1972	मंगल	08/12/1974	राहु	30/01/1978	गुरु	20/11/1980	शनि	04/05/1982
मंगल	02/09/1972	राहु	04/05/1975	गुरु	03/07/1978	शनि	03/05/1981	बुध	03/07/1982

सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु	
03/07/1982		21/10/1982		21/04/1983		27/08/1983		21/07/1984	
21/10/1982		21/04/1983		27/08/1983		21/07/1984		09/05/1985	
सूर्य	09/07/1982	चंद्र	05/11/1982	मंगल	29/04/1983	राहु	16/10/1983	गुरु	29/08/1984
चंद्र	18/07/1982	मंगल	16/11/1982	राहु	18/05/1983	गुरु	28/11/1983	शनि	14/10/1984
मंगल	24/07/1982	राहु	13/12/1982	गुरु	04/06/1983	शनि	19/01/1984	बुध	25/11/1984
राहु	10/08/1982	गुरु	06/01/1983	शनि	24/06/1983	बुध	06/03/1984	केतु	12/12/1984
गुरु	24/08/1982	शनि	04/02/1983	बुध	12/07/1983	केतु	25/03/1984	शुक्र	29/01/1985
शनि	11/09/1982	बुध	02/03/1983	केतु	20/07/1983	शुक्र	19/05/1984	सूर्य	13/02/1985
बुध	26/09/1982	केतु	13/03/1983	शुक्र	10/08/1983	सूर्य	04/06/1984	चंद्र	09/03/1985
केतु	02/10/1982	शुक्र	12/04/1983	सूर्य	17/08/1983	चंद्र	02/07/1984	मंगल	26/03/1985
शुक्र	21/10/1982	सूर्य	21/04/1983	चंद्र	27/08/1983	मंगल	21/07/1984	राहु	09/05/1985

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र	
09/05/1985		21/04/1986		26/02/1987		03/07/1987		03/07/1988	
21/04/1986		26/02/1987		03/07/1987		03/07/1988		03/05/1989	
शनि	03/07/1985	बुध	04/06/1986	केतु	05/03/1987	शुक्र	02/09/1987	चंद्र	28/07/1988
बुध	21/08/1985	केतु	22/06/1986	शुक्र	26/03/1987	सूर्य	21/09/1987	मंगल	15/08/1988
केतु	10/09/1985	शुक्र	13/08/1986	सूर्य	02/04/1987	चंद्र	21/10/1987	राहु	29/09/1988
शुक्र	07/11/1985	सूर्य	28/08/1986	चंद्र	12/04/1987	मंगल	11/11/1987	गुरु	09/11/1988
सूर्य	25/11/1985	चंद्र	23/09/1986	मंगल	20/04/1987	राहु	05/01/1988	शनि	27/12/1988
चंद्र	24/12/1985	मंगल	11/10/1986	राहु	09/05/1987	गुरु	23/02/1988	बुध	08/02/1989
मंगल	13/01/1986	राहु	27/11/1986	गुरु	26/05/1987	शनि	21/04/1988	केतु	26/02/1989
राहु	06/03/1986	गुरु	07/01/1987	शनि	15/06/1987	बुध	11/06/1988	शुक्र	18/04/1989
गुरु	21/04/1986	शनि	26/02/1987	बुध	03/07/1987	केतु	03/07/1988	सूर्य	03/05/1989

चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध	
03/05/1989		02/12/1989		03/06/1991		02/10/1992		03/05/1994	
02/12/1989		03/06/1991		02/10/1992		03/05/1994		03/10/1995	
मंगल	15/05/1989	राहु	22/02/1990	गुरु	07/08/1991	शनि	02/01/1993	बुध	16/07/1994
राहु	16/06/1989	गुरु	06/05/1990	शनि	23/10/1991	बुध	24/03/1993	केतु	15/08/1994
गुरु	15/07/1989	शनि	01/08/1990	बुध	31/12/1991	केतु	27/04/1993	शुक्र	09/11/1994
शनि	18/08/1989	बुध	18/10/1990	केतु	28/01/1992	शुक्र	02/08/1993	सूर्य	05/12/1994
बुध	17/09/1989	केतु	19/11/1990	शुक्र	19/04/1992	सूर्य	31/08/1993	चंद्र	17/01/1995
केतु	29/09/1989	शुक्र	18/02/1991	सूर्य	13/05/1992	चंद्र	18/10/1993	मंगल	16/02/1995
शुक्र	04/11/1989	सूर्य	17/03/1991	चंद्र	23/06/1992	मंगल	20/11/1993	राहु	05/05/1995
सूर्य	14/11/1989	चंद्र	02/05/1991	मंगल	21/07/1992	राहु	15/02/1994	गुरु	13/07/1995
चंद्र	02/12/1989	मंगल	03/06/1991	राहु	02/10/1992	गुरु	03/05/1994	शनि	03/10/1995

चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु	
03/10/1995		03/05/1996		02/01/1998		03/07/1998		29/11/1998	
03/05/1996		02/01/1998		03/07/1998		29/11/1998		18/12/1999	
केतु	15/10/1995	शुक्र	12/08/1996	सूर्य	11/01/1998	मंगल	12/07/1998	राहु	26/01/1999
शुक्र	20/11/1995	सूर्य	12/09/1996	चंद्र	26/01/1998	राहु	03/08/1998	गुरु	18/03/1999
सूर्य	30/11/1995	चंद्र	01/11/1996	मंगल	06/02/1998	गुरु	23/08/1998	शनि	18/05/1999
चंद्र	18/12/1995	मंगल	07/12/1996	राहु	05/03/1998	शनि	16/09/1998	बुध	11/07/1999
मंगल	31/12/1995	राहु	08/03/1997	गुरु	29/03/1998	बुध	07/10/1998	केतु	02/08/1999
राहु	31/01/1996	गुरु	28/05/1997	शनि	27/04/1998	केतु	16/10/1998	शुक्र	05/10/1999
गुरु	29/02/1996	शनि	02/09/1997	बुध	23/05/1998	शुक्र	09/11/1998	सूर्य	25/10/1999
शनि	03/04/1996	बुध	27/11/1997	केतु	03/06/1998	सूर्य	17/11/1998	चंद्र	25/11/1999
बुध	03/05/1996	केतु	02/01/1998	शुक्र	03/07/1998	चंद्र	29/11/1998	मंगल	18/12/1999

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र	
18/12/1999		23/11/2000		02/01/2002		30/12/2002		28/05/2003	
23/11/2000		02/01/2002		30/12/2002		28/05/2003		27/07/2004	
गुरु	01/02/2000	शनि	26/01/2001	बुध	22/02/2002	केतु	07/01/2003	शुक्र	07/08/2003
शनि	26/03/2000	बुध	24/03/2001	केतु	15/03/2002	शुक्र	01/02/2003	सूर्य	28/08/2003
बुध	14/05/2000	केतु	17/04/2001	शुक्र	14/05/2002	सूर्य	09/02/2003	चंद्र	03/10/2003
केतु	02/06/2000	शुक्र	23/06/2001	सूर्य	01/06/2002	चंद्र	21/02/2003	मंगल	28/10/2003
शुक्र	29/07/2000	सूर्य	14/07/2001	चंद्र	02/07/2002	मंगल	02/03/2003	राहु	31/12/2003
सूर्य	15/08/2000	चंद्र	16/08/2001	मंगल	23/07/2002	राहु	24/03/2003	गुरु	25/02/2004
चंद्र	13/09/2000	मंगल	09/09/2001	राहु	15/09/2002	गुरु	13/04/2003	शनि	03/05/2004
मंगल	03/10/2000	राहु	09/11/2001	गुरु	02/11/2002	शनि	07/05/2003	बुध	02/07/2004
राहु	23/11/2000	गुरु	02/01/2002	शनि	30/12/2002	बुध	28/05/2003	केतु	27/07/2004

मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि	
27/07/2004		02/12/2004		03/07/2005		15/03/2008		09/08/2010	
02/12/2004		03/07/2005		15/03/2008		09/08/2010		15/06/2013	
सूर्य	02/08/2004	चंद्र	20/12/2004	राहु	28/11/2005	गुरु	10/07/2008	शनि	21/01/2011
चंद्र	13/08/2004	मंगल	01/01/2005	गुरु	08/04/2006	शनि	26/11/2008	बुध	17/06/2011
मंगल	21/08/2004	राहु	02/02/2005	शनि	11/09/2006	बुध	30/03/2009	केतु	17/08/2011
राहु	09/09/2004	गुरु	02/03/2005	बुध	29/01/2007	केतु	20/05/2009	शुक्र	06/02/2012
गुरु	26/09/2004	शनि	05/04/2005	केतु	28/03/2007	शुक्र	13/10/2009	सूर्य	29/03/2012
शनि	16/10/2004	बुध	05/05/2005	शुक्र	08/09/2007	सूर्य	26/11/2009	चंद्र	24/06/2012
बुध	03/11/2004	केतु	18/05/2005	सूर्य	27/10/2007	चंद्र	07/02/2010	मंगल	24/08/2012
केतु	11/11/2004	शुक्र	22/06/2005	चंद्र	18/01/2008	मंगल	30/03/2010	राहु	27/01/2013
शुक्र	02/12/2004	सूर्य	03/07/2005	मंगल	15/03/2008	राहु	09/08/2010	गुरु	15/06/2013

राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र	
15/06/2013		02/01/2016		20/01/2017		20/01/2020		14/12/2020	
02/01/2016		20/01/2017		20/01/2020		14/12/2020		15/06/2022	
बुध	25/10/2013	केतु	24/01/2016	शुक्र	21/07/2017	सूर्य	06/02/2020	चंद्र	29/01/2021
केतु	18/12/2013	शुक्र	28/03/2016	सूर्य	14/09/2017	चंद्र	04/03/2020	मंगल	02/03/2021
शुक्र	22/05/2014	सूर्य	17/04/2016	चंद्र	14/12/2017	मंगल	23/03/2020	राहु	23/05/2021
सूर्य	08/07/2014	चंद्र	18/05/2016	मंगल	16/02/2018	राहु	12/05/2020	गुरु	04/08/2021
चंद्र	23/09/2014	मंगल	10/06/2016	राहु	31/07/2018	गुरु	24/06/2020	शनि	30/10/2021
मंगल	17/11/2014	राहु	06/08/2016	गुरु	24/12/2018	शनि	16/08/2020	बुध	15/01/2022
राहु	05/04/2015	गुरु	27/09/2016	शनि	15/06/2019	बुध	01/10/2020	केतु	16/02/2022
गुरु	08/08/2015	शनि	26/11/2016	बुध	17/11/2019	केतु	20/10/2020	शुक्र	19/05/2022
शनि	02/01/2016	बुध	20/01/2017	केतु	20/01/2020	शुक्र	14/12/2020	सूर्य	15/06/2022

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु	
15/06/2022		03/07/2023		21/08/2025		03/03/2028		09/06/2030	
03/07/2023		21/08/2025		03/03/2028		09/06/2030		16/05/2031	
मंगल	07/07/2022	गुरु	15/10/2023	शनि	14/01/2026	बुध	28/06/2028	केतु	29/06/2030
राहु	03/09/2022	शनि	16/02/2024	बुध	25/05/2026	केतु	16/08/2028	शुक्र	25/08/2030
गुरु	24/10/2022	बुध	05/06/2024	केतु	18/07/2026	शुक्र	31/12/2028	सूर्य	11/09/2030
शनि	24/12/2022	केतु	21/07/2024	शुक्र	19/12/2026	सूर्य	11/02/2029	चंद्र	09/10/2030
बुध	16/02/2023	शुक्र	27/11/2024	सूर्य	04/02/2027	चंद्र	21/04/2029	मंगल	29/10/2030
केतु	10/03/2023	सूर्य	05/01/2025	चंद्र	22/04/2027	मंगल	08/06/2029	राहु	19/12/2030
शुक्र	13/05/2023	चंद्र	11/03/2025	मंगल	15/06/2027	राहु	10/10/2029	गुरु	02/02/2031
सूर्य	01/06/2023	मंगल	26/04/2025	राहु	01/11/2027	गुरु	29/01/2030	शनि	28/03/2031
चंद्र	03/07/2023	राहु	21/08/2025	गुरु	03/03/2028	शनि	09/06/2030	बुध	16/05/2031

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु	
16/05/2031		14/01/2034		02/11/2034		03/03/2036		07/02/2037	
14/01/2034		02/11/2034		03/03/2036		07/02/2037		03/07/2039	
शुक्र	25/10/2031	सूर्य	28/01/2034	चंद्र	13/12/2034	मंगल	23/03/2036	राहु	18/06/2037
सूर्य	13/12/2031	चंद्र	22/02/2034	मंगल	10/01/2035	राहु	13/05/2036	गुरु	13/10/2037
चंद्र	03/03/2032	मंगल	11/03/2034	राहु	24/03/2035	गुरु	27/06/2036	शनि	01/03/2038
मंगल	29/04/2032	राहु	24/04/2034	गुरु	28/05/2035	शनि	20/08/2036	बुध	03/07/2038
राहु	22/09/2032	गुरु	02/06/2034	शनि	13/08/2035	बुध	08/10/2036	केतु	23/08/2038
गुरु	30/01/2033	शनि	18/07/2034	बुध	21/10/2035	केतु	28/10/2036	शुक्र	16/01/2039
शनि	03/07/2033	बुध	28/08/2034	केतु	18/11/2035	शुक्र	23/12/2036	सूर्य	01/03/2039
बुध	18/11/2033	केतु	14/09/2034	शुक्र	08/02/2036	सूर्य	09/01/2037	चंद्र	13/05/2039
केतु	14/01/2034	शुक्र	02/11/2034	सूर्य	03/03/2036	चंद्र	07/02/2037	मंगल	03/07/2039

शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य	
03/07/2039		06/07/2042		15/03/2045		24/04/2046		24/06/2049	
06/07/2042		15/03/2045		24/04/2046		24/06/2049		06/06/2050	
शनि	24/12/2039	बुध	23/11/2042	केतु	08/04/2045	शुक्र	03/11/2046	सूर्य	11/07/2049
बुध	28/05/2040	केतु	19/01/2043	शुक्र	14/06/2045	सूर्य	31/12/2046	चंद्र	09/08/2049
केतु	31/07/2040	शुक्र	02/07/2043	सूर्य	05/07/2045	चंद्र	06/04/2047	मंगल	29/08/2049
शुक्र	30/01/2041	सूर्य	20/08/2043	चंद्र	07/08/2045	मंगल	13/06/2047	राहु	20/10/2049
सूर्य	26/03/2041	चंद्र	10/11/2043	मंगल	31/08/2045	राहु	03/12/2047	गुरु	06/12/2049
चंद्र	26/06/2041	मंगल	06/01/2044	राहु	31/10/2045	गुरु	05/05/2048	शनि	30/01/2050
मंगल	29/08/2041	राहु	02/06/2044	गुरु	24/12/2045	शनि	04/11/2048	बुध	20/03/2050
राहु	10/02/2042	गुरु	11/10/2044	शनि	26/02/2046	बुध	17/04/2049	केतु	09/04/2050
गुरु	06/07/2042	शनि	15/03/2045	बुध	24/04/2046	केतु	24/06/2049	शुक्र	06/06/2050

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध	
06/06/2050		05/01/2052		13/02/2053		21/12/2055		03/07/2058	
05/01/2052		13/02/2053		21/12/2055		03/07/2058		29/11/2060	
चंद्र	24/07/2050	मंगल	29/01/2052	राहु	19/07/2053	गुरु	22/04/2056	बुध	05/11/2058
मंगल	27/08/2050	राहु	29/03/2052	गुरु	05/12/2053	शनि	16/09/2056	केतु	26/12/2058
राहु	21/11/2050	गुरु	22/05/2052	शनि	19/05/2054	बुध	25/01/2057	शुक्र	22/05/2059
गुरु	07/02/2051	शनि	26/07/2052	बुध	13/10/2054	केतु	20/03/2057	सूर्य	05/07/2059
शनि	09/05/2051	बुध	21/09/2052	केतु	13/12/2054	शुक्र	21/08/2057	चंद्र	16/09/2059
बुध	30/07/2051	केतु	14/10/2052	शुक्र	04/06/2055	सूर्य	06/10/2057	मंगल	06/11/2059
केतु	02/09/2051	शुक्र	21/12/2052	सूर्य	26/07/2055	चंद्र	22/12/2057	राहु	17/03/2060
शुक्र	07/12/2051	सूर्य	10/01/2053	चंद्र	21/10/2055	मंगल	14/02/2058	गुरु	13/07/2060
सूर्य	05/01/2052	चंद्र	13/02/2053	मंगल	21/12/2055	राहु	03/07/2058	शनि	29/11/2060

बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल	
29/11/2060		26/11/2061		26/09/2064		02/08/2065		02/01/2067	
26/11/2061		26/09/2064		02/08/2065		02/01/2067		30/12/2067	
केतु	20/12/2060	शुक्र	18/05/2062	सूर्य	11/10/2064	चंद्र	14/09/2065	मंगल	23/01/2067
शुक्र	18/02/2061	सूर्य	08/07/2062	चंद्र	06/11/2064	मंगल	15/10/2065	राहु	18/03/2067
सूर्य	08/03/2061	चंद्र	02/10/2062	मंगल	24/11/2064	राहु	31/12/2065	गुरु	06/05/2067
चंद्र	08/04/2061	मंगल	02/12/2062	राहु	10/01/2065	गुरु	10/03/2066	शनि	02/07/2067
मंगल	29/04/2061	राहु	06/05/2063	गुरु	20/02/2065	शनि	31/05/2066	बुध	22/08/2067
राहु	22/06/2061	गुरु	21/09/2063	शनि	11/04/2065	बुध	13/08/2066	केतु	12/09/2067
गुरु	09/08/2061	शनि	03/03/2064	बुध	25/05/2065	केतु	12/09/2066	शुक्र	12/11/2067
शनि	06/10/2061	बुध	28/07/2064	केतु	12/06/2065	शुक्र	07/12/2066	सूर्य	30/11/2067
बुध	26/11/2061	केतु	26/09/2064	शुक्र	02/08/2065	सूर्य	02/01/2067	चंद्र	30/12/2067

बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र	
30/12/2067		18/07/2070		23/10/2072		03/07/2075		30/11/2075	
18/07/2070		23/10/2072		03/07/2075		30/11/2075		29/01/2077	
राहु	18/05/2068	गुरु	06/11/2070	शनि	28/03/2073	केतु	12/07/2075	शुक्र	09/02/2076
गुरु	19/09/2068	शनि	17/03/2071	बुध	14/08/2073	शुक्र	06/08/2075	सूर्य	01/03/2076
शनि	13/02/2069	बुध	12/07/2071	केतु	11/10/2073	सूर्य	13/08/2075	चंद्र	05/04/2076
बुध	25/06/2069	केतु	29/08/2071	शुक्र	23/03/2074	चंद्र	26/08/2075	मंगल	30/04/2076
केतु	19/08/2069	शुक्र	14/01/2072	सूर्य	12/05/2074	मंगल	04/09/2075	राहु	03/07/2076
शुक्र	21/01/2070	सूर्य	25/02/2072	चंद्र	02/08/2074	राहु	26/09/2075	गुरु	29/08/2076
सूर्य	08/03/2070	चंद्र	04/05/2072	मंगल	28/09/2074	गुरु	16/10/2075	शनि	04/11/2076
चंद्र	25/05/2070	मंगल	21/06/2072	राहु	22/02/2075	शनि	08/11/2075	बुध	04/01/2077
मंगल	18/07/2070	राहु	23/10/2072	गुरु	03/07/2075	बुध	30/11/2075	केतु	29/01/2077

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

गुरु - शनि - शनि	
21/08/2025 03:13	
14/01/2026 15:22	
शनि	13/09/2025 07:56
बुध	04/10/2025 02:04
केतु	12/10/2025 15:10
शुक्र	06/11/2025 01:12
सूर्य	13/11/2025 09:00
चंद्र	25/11/2025 14:01
मंगल	04/12/2025 03:07
राहु	26/12/2025 02:32
गुरु	14/01/2026 15:22

गुरु - शनि - बुध	
14/01/2026 15:22	
25/05/2026 17:23	
बुध	02/02/2026 05:03
केतु	09/02/2026 20:34
शुक्र	03/03/2026 16:54
सूर्य	10/03/2026 06:12
चंद्र	21/03/2026 04:22
मंगल	28/03/2026 19:53
राहु	17/04/2026 11:47
गुरु	04/05/2026 23:16
शनि	25/05/2026 17:23

गुरु - शनि - केतु	
25/05/2026 17:23	
18/07/2026 16:48	
केतु	28/05/2026 20:57
शुक्र	06/06/2026 20:51
सूर्य	09/06/2026 13:37
चंद्र	14/06/2026 01:34
मंगल	17/06/2026 05:08
राहु	25/06/2026 07:27
गुरु	02/07/2026 12:10
शनि	11/07/2026 01:17
बुध	18/07/2026 16:48

गुरु - शनि - शुक्र	
18/07/2026 16:48	
19/12/2026 22:00	
शुक्र	13/08/2026 09:40
सूर्य	21/08/2026 02:44
चंद्र	02/09/2026 23:10
मंगल	11/09/2026 23:04
राहु	05/10/2026 02:15
गुरु	25/10/2026 15:44
शनि	19/11/2026 01:46
बुध	10/12/2026 22:06
केतु	19/12/2026 22:00

गुरु - शनि - सूर्य	
19/12/2026 22:00	
04/02/2027 04:22	
सूर्य	22/12/2026 05:31
चंद्र	26/12/2026 02:03
मंगल	28/12/2026 18:49
राहु	04/01/2027 17:22
गुरु	10/01/2027 21:25
शनि	18/01/2027 05:14
बुध	24/01/2027 18:32
केतु	27/01/2027 11:18
शुक्र	04/02/2027 04:22

गुरु - शनि - चंद्र	
04/02/2027 04:22	
22/04/2027 06:58	
चंद्र	10/02/2027 14:35
मंगल	15/02/2027 02:32
राहु	26/02/2027 16:07
गुरु	08/03/2027 22:52
शनि	21/03/2027 03:53
बुध	01/04/2027 02:03
केतु	05/04/2027 14:00
शुक्र	18/04/2027 10:26
सूर्य	22/04/2027 06:58

गुरु - शनि - मंगल	
22/04/2027 06:58	
15/06/2027 06:23	
मंगल	25/04/2027 10:32
राहु	03/05/2027 12:50
गुरु	10/05/2027 17:34
शनि	19/05/2027 06:40
बुध	26/05/2027 22:11
केतु	30/05/2027 01:45
शुक्र	08/06/2027 01:39
सूर्य	10/06/2027 18:26
चंद्र	15/06/2027 06:23

गुरु - शनि - राहु	
15/06/2027 06:23	
01/11/2027 01:28	
राहु	06/07/2027 02:02
गुरु	24/07/2027 14:11
शनि	15/08/2027 13:36
बुध	04/09/2027 05:31
केतु	12/09/2027 07:49
शुक्र	05/10/2027 11:00
सूर्य	12/10/2027 09:33
चंद्र	23/10/2027 23:09
मंगल	01/11/2027 01:28

गुरु - शनि - गुरु	
01/11/2027 01:28	
03/03/2028 10:25	
गुरु	17/11/2027 12:15
शनि	07/12/2027 01:04
बुध	24/12/2027 12:33
केतु	31/12/2027 17:16
शुक्र	21/01/2028 06:45
सूर्य	27/01/2028 10:48
चंद्र	06/02/2028 17:33
मंगल	13/02/2028 22:17
राहु	03/03/2028 10:25

गुरु - बुध - बुध	
03/03/2028 10:25	
28/06/2028 17:17	
बुध	20/03/2028 01:11
केतु	26/03/2028 21:23
शुक्र	15/04/2028 10:32
सूर्य	21/04/2028 07:17
चंद्र	01/05/2028 01:51
मंगल	07/05/2028 22:03
राहु	25/05/2028 12:17
गुरु	10/06/2028 03:36
शनि	28/06/2028 17:17

गुरु - बुध - केतु	
28/06/2028 17:17	
16/08/2028 00:20	
केतु	01/07/2028 12:53
शुक्र	09/07/2028 14:04
सूर्य	12/07/2028 00:01
चंद्र	16/07/2028 00:37
मंगल	18/07/2028 20:13
राहु	26/07/2028 02:05
गुरु	01/08/2028 12:37
शनि	09/08/2028 04:08
बुध	16/08/2028 00:20

गुरु - बुध - शुक्र	
16/08/2028 00:20	
31/12/2028 23:56	
शुक्र	08/09/2028 00:16
सूर्य	14/09/2028 21:51
चंद्र	26/09/2028 09:49
मंगल	04/10/2028 11:00
राहु	25/10/2028 03:44
गुरु	12/11/2028 13:17
शनि	04/12/2028 09:37
बुध	23/12/2028 22:46
केतु	31/12/2028 23:56

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

गुरु - बुध - सूर्य		गुरु - बुध - चंद्र		गुरु - बुध - मंगल		गुरु - बुध - राहु	
31/12/2028 23:56		11/02/2029 09:25		21/04/2029 09:13		08/06/2029 16:17	
11/02/2029 09:25		21/04/2029 09:13		08/06/2029 16:17		10/10/2029 20:43	
सूर्य	03/01/2029 01:37	चंद्र	17/02/2029 03:24	मंगल	24/04/2029 04:50	राहु	27/06/2029 07:21
चंद्र	06/01/2029 12:24	मंगल	21/02/2029 03:59	राहु	01/05/2029 10:41	गुरु	13/07/2029 20:44
मंगल	08/01/2029 22:21	राहु	03/03/2029 12:22	गुरु	07/05/2029 21:14	शनि	02/08/2029 12:38
राहु	15/01/2029 03:23	गुरु	12/03/2029 17:08	शनि	15/05/2029 12:45	बुध	20/08/2029 02:52
गुरु	20/01/2029 15:51	शनि	23/03/2029 15:18	बुध	22/05/2029 08:57	केतु	27/08/2029 08:44
शनि	27/01/2029 05:09	बुध	02/04/2029 09:52	केतु	25/05/2029 04:34	शुक्र	17/09/2029 01:28
बुध	02/02/2029 01:53	केतु	06/04/2029 10:28	शुक्र	02/06/2029 05:44	सूर्य	23/09/2029 06:29
केतु	04/02/2029 11:50	शुक्र	17/04/2029 22:26	सूर्य	04/06/2029 15:41	चंद्र	03/10/2029 14:52
शुक्र	11/02/2029 09:25	सूर्य	21/04/2029 09:13	चंद्र	08/06/2029 16:17	मंगल	10/10/2029 20:43

गुरु - बुध - गुरु		गुरु - बुध - शनि		गुरु - केतु - केतु		गुरु - केतु - शुक्र	
10/10/2029 20:43		29/01/2030 06:00		09/06/2030 08:01		29/06/2030 05:17	
29/01/2030 06:00		09/06/2030 08:01		29/06/2030 05:17		25/08/2030 00:53	
गुरु	25/10/2029 13:57	शनि	19/02/2030 00:07	केतु	10/06/2030 11:52	शुक्र	08/07/2030 16:33
शनि	12/11/2029 01:26	बुध	09/03/2030 13:48	शुक्र	13/06/2030 19:24	सूर्य	11/07/2030 12:44
बुध	27/11/2029 16:44	केतु	17/03/2030 05:19	सूर्य	14/06/2030 19:16	चंद्र	16/07/2030 06:22
केतु	04/12/2029 03:17	शुक्र	08/04/2030 01:40	चंद्र	16/06/2030 11:02	मंगल	19/07/2030 13:54
शुक्र	22/12/2029 12:50	सूर्य	14/04/2030 14:58	मंगल	17/06/2030 14:53	राहु	28/07/2030 02:27
सूर्य	28/12/2029 01:18	चंद्र	25/04/2030 13:08	राहु	20/06/2030 14:28	गुरु	04/08/2030 16:15
चंद्र	06/01/2030 06:04	मंगल	03/05/2030 04:39	गुरु	23/06/2030 06:06	शनि	13/08/2030 16:10
मंगल	12/01/2030 16:36	राहु	22/05/2030 20:33	शनि	26/06/2030 09:40	बुध	21/08/2030 17:20
राहु	29/01/2030 06:00	गुरु	09/06/2030 08:01	बुध	29/06/2030 05:17	केतु	25/08/2030 00:53

गुरु - केतु - सूर्य		गुरु - केतु - चंद्र		गुरु - केतु - मंगल		गुरु - केतु - राहु	
25/08/2030 00:53		11/09/2030 01:58		09/10/2030 11:46		29/10/2030 09:01	
11/09/2030 01:58		09/10/2030 11:46		29/10/2030 09:01		19/12/2030 12:16	
सूर्य	25/08/2030 21:20	चंद्र	13/09/2030 10:47	मंगल	10/10/2030 15:36	राहु	06/11/2030 01:06
चंद्र	27/08/2030 07:25	मंगल	15/09/2030 02:33	राहु	13/10/2030 15:11	गुरु	12/11/2030 20:44
मंगल	28/08/2030 07:17	राहु	19/09/2030 08:49	गुरु	16/10/2030 06:49	शनि	20/11/2030 23:03
राहु	30/08/2030 20:39	गुरु	23/09/2030 03:43	शनि	19/10/2030 10:23	बुध	28/11/2030 04:55
गुरु	02/09/2030 03:12	शनि	27/09/2030 15:41	बुध	22/10/2030 06:00	केतु	01/12/2030 04:30
शनि	04/09/2030 19:58	बुध	01/10/2030 16:16	केतु	23/10/2030 09:50	शुक्र	09/12/2030 17:02
बुध	07/09/2030 05:55	केतु	03/10/2030 08:02	शुक्र	26/10/2030 17:23	सूर्य	12/12/2030 06:24
केतु	08/09/2030 05:47	शुक्र	08/10/2030 01:40	सूर्य	27/10/2030 17:15	चंद्र	16/12/2030 12:40
शुक्र	11/09/2030 01:58	सूर्य	09/10/2030 11:46	चंद्र	29/10/2030 09:01	मंगल	19/12/2030 12:16

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : भ्रामरी 0 वर्ष 3 मास 21 दिन

भ्रामरी 4 वर्ष	भद्रिका 5 वर्ष	उल्का 6 वर्ष	सिद्धा 7 वर्ष	संकटा 8 वर्ष
18/12/1961	10/04/1962	10/04/1967	09/04/1973	09/04/1980
10/04/1962	10/04/1967	09/04/1973	09/04/1980	09/04/1988
00/00/0000	भद्रि 19/12/1962	उल्क 09/04/1968	सिद्ध 19/08/1974	संक 18/01/1982
00/00/0000	उल्क 20/10/1963	सिद्ध 09/06/1969	संक 10/03/1976	मंग 10/04/1982
00/00/0000	सिद्ध 09/10/1964	संक 09/10/1970	मंग 20/05/1976	पिंग 19/09/1982
00/00/0000	संक 18/11/1965	मंग 09/12/1970	पिंग 09/10/1976	धांय 20/05/1983
00/00/0000	मंग 08/01/1966	पिंग 10/04/1971	धांय 10/05/1977	भ्राम 09/04/1984
00/00/0000	पिंग 20/04/1966	धांय 09/10/1971	भ्राम 18/02/1978	भद्रि 20/05/1985
18/12/1961	धांय 19/09/1966	भ्राम 09/06/1972	भद्रि 08/02/1979	उल्क 19/09/1986
धांय 10/04/1962	भ्राम 10/04/1967	भद्रि 09/04/1973	उल्क 09/04/1980	सिद्ध 09/04/1988

मंगला 1 वर्ष	पिंगला 2 वर्ष	धान्या 3 वर्ष	भ्रामरी 4 वर्ष	भद्रिका 5 वर्ष
09/04/1988	09/04/1989	10/04/1991	10/04/1994	10/04/1998
09/04/1989	10/04/1991	10/04/1994	10/04/1998	10/04/2003
मंग 19/04/1988	पिंग 20/05/1989	धांय 10/07/1991	भ्राम 19/09/1994	भद्रि 19/12/1998
पिंग 09/05/1988	धांय 20/07/1989	भ्राम 09/11/1991	भद्रि 10/04/1995	उल्क 20/10/1999
धांय 09/06/1988	भ्राम 09/10/1989	भद्रि 09/04/1992	उल्क 09/12/1995	सिद्ध 09/10/2000
भ्राम 19/07/1988	भद्रि 18/01/1990	उल्क 09/10/1992	सिद्ध 18/09/1996	संक 18/11/2001
भद्रि 08/09/1988	उल्क 20/05/1990	सिद्ध 10/05/1993	संक 09/08/1997	मंग 08/01/2002
उल्क 08/11/1988	सिद्ध 09/10/1990	संक 08/01/1994	मंग 19/09/1997	पिंग 20/04/2002
सिद्ध 18/01/1989	संक 20/03/1991	मंग 08/02/1994	पिंग 09/12/1997	धांय 19/09/2002
संक 09/04/1989	मंग 10/04/1991	पिंग 10/04/1994	धांय 10/04/1998	भ्राम 10/04/2003

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

उल्का 6 वर्ष	सिद्धा 7 वर्ष	संकटा 8 वर्ष	मंगला 1 वर्ष	पिंगला 2 वर्ष
10/04/2003	09/04/2009	09/04/2016	09/04/2024	09/04/2025
09/04/2009	09/04/2016	09/04/2024	09/04/2025	10/04/2027
उल्क 09/04/2004	सिद्ध 19/08/2010	संक 18/01/2018	मंग 19/04/2024	पिंग 20/05/2025
सिद्ध 09/06/2005	संक 10/03/2012	मंग 10/04/2018	पिंग 09/05/2024	धांय 20/07/2025
संक 09/10/2006	मंग 20/05/2012	पिंग 19/09/2018	धांय 09/06/2024	भ्राम 09/10/2025
मंग 09/12/2006	पिंग 09/10/2012	धांय 20/05/2019	भ्राम 19/07/2024	भद्रि 18/01/2026
पिंग 10/04/2007	धांय 10/05/2013	भ्राम 09/04/2020	भद्रि 08/09/2024	उल्क 20/05/2026
धांय 09/10/2007	भ्राम 18/02/2014	भद्रि 20/05/2021	उल्क 08/11/2024	सिद्ध 09/10/2026
भ्राम 09/06/2008	भद्रि 08/02/2015	उल्क 19/09/2022	सिद्ध 18/01/2025	संक 20/03/2027
भद्रि 09/04/2009	उल्क 09/04/2016	सिद्ध 09/04/2024	संक 09/04/2025	मंग 10/04/2027

धान्या 3 वर्ष	भ्रामरी 4 वर्ष	भद्रिका 5 वर्ष	उल्का 6 वर्ष	सिद्धा 7 वर्ष
10/04/2027	10/04/2030	10/04/2034	10/04/2039	09/04/2045
10/04/2030	10/04/2034	10/04/2039	09/04/2045	09/04/2052
धांय 10/07/2027	भ्राम 19/09/2030	भद्रि 19/12/2034	उल्क 09/04/2040	सिद्ध 19/08/2046
भ्राम 09/11/2027	भद्रि 10/04/2031	उल्क 20/10/2035	सिद्ध 09/06/2041	संक 10/03/2048
भद्रि 09/04/2028	उल्क 09/12/2031	सिद्ध 09/10/2036	संक 09/10/2042	मंग 20/05/2048
उल्क 09/10/2028	सिद्ध 18/09/2032	संक 18/11/2037	मंग 09/12/2042	पिंग 09/10/2048
सिद्ध 10/05/2029	संक 09/08/2033	मंग 08/01/2038	पिंग 10/04/2043	धांय 10/05/2049
संक 08/01/2030	मंग 19/09/2033	पिंग 20/04/2038	धांय 09/10/2043	भ्राम 18/02/2050
मंग 08/02/2030	पिंग 09/12/2033	धांय 19/09/2038	भ्राम 09/06/2044	भद्रि 08/02/2051
पिंग 10/04/2030	धांय 10/04/2034	भ्राम 10/04/2039	भद्रि 09/04/2045	उल्क 09/04/2052

संकटा 8 वर्ष	मंगला 1 वर्ष	पिंगला 2 वर्ष	धान्या 3 वर्ष	भ्रामरी 4 वर्ष
09/04/2052	09/04/2060	09/04/2061	10/04/2063	10/04/2066
09/04/2060	09/04/2061	10/04/2063	10/04/2066	18/12/2069
संक 18/01/2054	मंग 19/04/2060	पिंग 20/05/2061	धांय 10/07/2063	भ्राम 19/09/2066
मंग 10/04/2054	पिंग 09/05/2060	धांय 20/07/2061	भ्राम 09/11/2063	भद्रि 10/04/2067
पिंग 19/09/2054	धांय 09/06/2060	भ्राम 09/10/2061	भद्रि 09/04/2064	उल्क 09/12/2067
धांय 20/05/2055	भ्राम 19/07/2060	भद्रि 18/01/2062	उल्क 09/10/2064	सिद्ध 18/09/2068
भ्राम 09/04/2056	भद्रि 08/09/2060	उल्क 20/05/2062	सिद्ध 10/05/2065	संक 09/08/2069
भद्रि 20/05/2057	उल्क 08/11/2060	सिद्ध 09/10/2062	संक 08/01/2066	मंग 19/09/2069
उल्क 19/09/2058	सिद्ध 18/01/2061	संक 20/03/2063	मंग 08/02/2066	पिंग 09/12/2069
सिद्ध 09/04/2060	संक 09/04/2061	मंग 10/04/2063	पिंग 10/04/2066	धांय 18/12/2069

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	9
भाग्यांक	2
मित्र अंक	1, 3, 6, 9, 2
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	27,36,45,54,63
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	कर्क, धनु
मित्र लग्न	मकर, मिथुन, सिंह
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	100%	सुख, सन्तति सुख
मोती	चंद्र	69%	दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
पन्ना	बुध	69%	पराक्रम, भाग्योदय, कम खर्च
हीरा	शुक्र	69%	धन, दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य
लहसुनिया	केतु	67%	सुख
गोमेद	राहु	61%	व्यावसायिक उन्नति, दम्पति
माणिक्य	सूर्य	41%	पराक्रम हानि, हानि
मूंगा	मंगल	34%	पराक्रम हानि, दाम्पत्य कष्ट, धन हानि
पुखराज	गुरु	25%	ग्रह कलेश, पराक्रम हानि, शत्रु व रोग

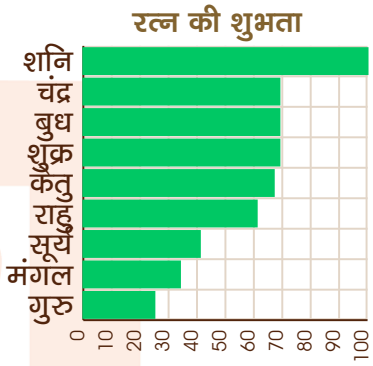

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
केतु	03/07/1962	16%	56%	47%	69%	25%	75%	89%	47%	80%
शुक्र	03/07/1982	16%	56%	34%	75%	25%	81%	100%	67%	73%
सूर्य	03/07/1988	58%	75%	47%	69%	38%	56%	89%	47%	55%
चंद्र	03/07/1998	52%	81%	34%	75%	25%	69%	100%	47%	55%
मंगल	03/07/2005	52%	75%	55%	56%	38%	69%	100%	47%	73%
राहु	03/07/2023	16%	56%	9%	69%	25%	75%	100%	73%	55%
गुरु	03/07/2039	52%	75%	47%	56%	50%	56%	100%	61%	67%
शनि	03/07/2058	16%	56%	9%	75%	25%	75%	100%	67%	55%
बुध	03/07/2075	52%	56%	34%	81%	25%	75%	100%	61%	67%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए नीलम रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है।

नीलम आपका कारक रत्न है। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

इसे धारण करने से आपके जीवन में विशेष ऊर्जा का प्रवाह होगा। आपकी प्रतिभा बढ़ेगी। इस रत्न को धारण करने से आपके रुके हुए कार्य बन सकते हैं। स्वास्थ्य व सुख सम्पत्ति का लाभ मिल सकता है। आपको कार्य करने पर जो श्रेय नहीं मिल पाता है वह प्राप्त होने लगेगा। इस रत्न को धारण करने से आपको कुछ ही समय में सुख की अनुभूति होगी। अतः यह रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के जीवन पर्यन्त धारण करें तो लाभ होगा।

आपके लिए मोती, पन्ना, हीरा, लहसुनिया एवं गोमेद रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

माणिक्य, मूंगा व पुखराज रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

नीलम

आपकी कुंडली में शनि चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न आपको धैर्य संपन्न और लोभरहित रखेगा। इस रत्न के प्रभाव से आप व्यसनहीन, न्यायप्रिय और अतिथियों का सत्कार करने वाले व्यक्ति बनेंगे। आपको प्रचुर मात्रा में धन की प्राप्ति होगी। नीलम रत्न शीघ्र फल देने वाला रत्न है। रत्न के फलस्वरूप आपके पास विभिन्न प्रकार के वाहन होंगे। जन्मस्थान से दूर रहकर आपको तरक्की की प्राप्ति होगी।

नौकरी, विवाह, संतान आदि के लिए भी यह रत्न आपके अनुकूल सिद्ध होगा।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में शनि चतुर्थेश एवं पंचमेश है। शनि का रत्न नीलम आपके लिए विशेष रूप से शुभ रत्न है। आप इसे धारण कर शनि की शुभता प्राप्त कर सकते है। नीलम रत्न आपको पौराणिक विषयों से शिक्षा प्राप्ति के अवसर दे सकता है। यह रत्न आपके संतान स्वास्थ्य को प्रबल कर अनुकूल बनाए रखेगा। नीलम रत्न शुभता से आपके अपनी संतान से संबंध मजबूत हो सकते है। ज्ञान प्राप्ति के लिए यह रत्न आपको सर्वोत्तम फल प्रदान कर सकता है। रत्न प्रभाव से कुटुंब में वृद्धि, भूमि-भवन के मामलों में शुभ परिणाम प्राप्त हो सकते है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र सप्तम भाव में स्थित है। आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। मोती रत्न धारण से आपके स्वभाव की चंचलता की कमी होगी। यह रत्न आपकी नेतृत्त्व करने की क्षमता बढ़ायेगा। रत्न शुभता से आपको अनेक यात्राएं करनी पड़ सकती है। मोती रत्न आपकी स्फूर्ति बढ़ायेगा। जीवन साथी से आपके संबंध आत्मीय रहेंगे। मोती रत्न आपको आपके व्यवसाय में अच्छी सफलता देगा। रत्न प्रभाव से आपको एक से अधिक बार व्यापार क्षेत्र में बदलाव करने पड़ सकते है।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में चंद्र दशम भाव के स्वामी है। चंद्र आपके लिए शुभ ग्रह है। चंद्र का मोती रत्न धारण करने से आपको कर्म क्षेत्र में अपनी योग्यता दिखाने के अवसर देगा। रत्न शुभता से आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता आ सकती है। आजीविका क्षेत्र से जुड़ी मानसिक चिंताओं का समाधान भी यह रत्न कर सकता है। मोती रत्न आपको राजनीति में अग्रणी रखेगा। मोती रत्न व्यवसायिक सफलता, सूझ-बूझ की योग्यता, मनोविश्लेषक, कलात्मक कार्यो से आय प्राप्ति के योग बना सकता है। रत्न शुभता से आपकी धार्मिक प्रवृति का विकास होकर आपको समाजसेवी संगठन या न्यासों के संचालण कार्य से सम्मान दिला सकता है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः

काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ऊँ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध तीसरे भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पना धारण करना चाहिए। पन्ना रत्न आपको व्यापारी सफलता देगा। व्यापारी वर्ग से मित्रवत संबंध स्थापित करेगा। व्यापारादि कार्यों रुचि आती है। आपको भाई-बंधुओं से लाभ प्राप्ति के संयोग बनेगें। रत्न प्रभाव से शौर्य, पराक्रम और वीरता के स्थान पर बुद्धि बल का प्रयोग अधिक करेंगे। लेखन और कला के पक्ष से भी पन्ना रत्न अनुकूल फल देगा। यह रत्न आपको विचार एवं भाव अभिव्यक्ति की योग्यता देगा। स्मरणशक्ति बढ़ाने के लिये आप यह रत्न धारण कर सकते है।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में बुध नवमेश व द्वादशेश है। बुध ग्रह आपके लिए शुभ है। यहां बुध लग्नेश शुक्र का मित्र भी है इसलिए ओर अधिक शुभ हो गया है। इसकी शुभता प्राप्त करने के लिए आप बुध रत्न पन्ना धारण करें। पन्ना रत्न आपके लिए भाग्योदय रत्न सिद्ध हो सकता है। इस रत्न को धारण कर आप दांपत्य जीवन के सुखों में वृद्धि कर सकता है। बुध रत्न पन्ना आपको धर्म, पुण्य, भाग्य, गुरु, देवता, तीर्थ यात्रा, दान इत्यादि विषयों से संलग्न कर सकता है। यह रत्न आपको बौद्धिक कार्यो में भाग्य का सहयोग दे सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुंड़ली में शुक्र दूसरे भाव में स्थित है। शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए उत्तम रहेगा। हीरा रत्न संयुक्त परिवार विचारधारा को बढ़ायेगा। हीरे की शक्तियों से आप अपने काम निकालने में सफल होंगे। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको व्यवसायिक कुशलता देगा। यह रत्न आपको मधुरभाषी बनायेगा। सेवा क्षेत्रों में आपकी अभिरुचि बनेंगी। शुक्र रत्न हीरा आपके लिए धन और सम्मान प्रदायक भी है। हीरे रत्न की शुभता से आप धनवान, यशस्वी, साहसी एवं भाग्यवान होंगे।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में शुक्र लग्नेश एवं अष्टमेश है। शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए शुभ रहेगा। स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए भी आप हीरा रत्न धारण कर सकते है। शुक्र रत्न हीरा आपके शरीर, आयु, मस्तिष्क, आपका स्वभाव और संपूर्ण व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाये रखने में सहयोगी हो सकता है। हीरा अष्टमेश का भी रत्न होने के कारण आपको मानसिक चिंताओं से बचाएगा, दुर्भाग्य का नाश, ससुराल से मधुर संबंध, अस्पताल आदि विषयों में राहत दे सकता है। अपने स्वास्थ्य और आयुवृद्धि के लिए आप हीरा रत्न धारण कर सकते है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको केतु रत्न लहसुनिया या इसके उपरत्न धारण करने चाहिए। लहसुनिया रत्न आपको धन-धान्य से समृद्ध करेगा। आप अपने दायित्वों का निर्वाह कुशलता के साथ करेंगे। आपका उत्साह भाव देखते ही बनेगा। माता सुख में कुछ कमी हो सकती है। रत्न प्रभाव से आप चंचल स्वभाव के हो सकते है। देश विदेश से धनार्जन योगा। पैतृक धन में वृद्धि होगी। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। घर भूमि भवन के विषयों से सुख की प्राप्ति होगी। लहसुनिया रत्न धारण से केतु ग्रह की शुभता बढ़ती है और अशुभता कम होती है।

केतु मकर राशि में स्थित है व इसका स्वामी शनि चतुर्थ भाव में स्थित है। अतः

लहसुनिया रत्न धारण करने से आपकी मानसिक परेशानियों में कमी होगी। यह रत्न आपको सुख शांति, पारिवारिक सौहार्द और भूमि-भवन के विषयों में लाभ देगा। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको सरकार व सगे संबंधियों से सुख-सहयोग की स्थिति बनाए रखेगा। तथा यह रत्न आपको परदेश का सुख देगा तथा आपके मातृ सुख में वृद्धि करेगा। इसके अतिरिक्त इस रत्न को धारण करने से आपको भौतिक सुख-सुविधाओं का सुख भोगने के प्रर्याप्त अवसर प्राप्त होंगे। यह रत्न आपकी संतोष भावना को बढ़ाएगा। आपको सेवकों का सुख प्राप्त होगा। शैक्षिक पक्ष से भी इस रत्न की शुभता आपके साथ बनी हुई है।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे ल ॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु दशम भाव में स्थित है। अतः आप राहु रत्न गोमेद धारण करें। गोमेद रत्न आपको बलवान और निडर बनाएगा। गोमेद की शुभता से आप बुद्धिमान, परोपकारी, सफल, सम्मानित, कीर्तिमान और श्रेष्ठ बनेंगे। रत्न शुभता से आप कार्यक्षेत्र में अपने शत्रुओं को परास्त करने में सफल होंगे। रत्न शुभता आपको व्यापारिक निपुणता और यात्राओं से लाभ देगी। गोमेद रत्न की अनुकूलता आपको अदालती कामों में विजय देगी। इसके अलावा रत्न प्रभाव से आपके कामों में नियमितता आयेगी।

राहु कर्क राशि में स्थित है व इसका स्वामी चन्द्र सप्तम भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपके वात रोगों में कमी होगी। यह रत्न आपके दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाएगा। इस रत्न की शुभता से आपके अपने जीवनसाथी से स्नेह और सौहार्द के संबंध प्रगाढ़ होंगे। आपके स्वभाव में मधुरता आएगी। आप बंधुप्रिय, मधुर भाषी और स्वतंत्र व्यवसाय कार्य में सफल होंगे। इस रत्न से आपका अपने साझेदार और साथी पर विश्वास भाव मजबूत होगा। विदेश स्थानों से धन लाभ प्राप्त करना आपके लिए सहज होगा। एवं यह रत्न आपको विदेश में सम्मान दिलाएगा। आपको विदेश भ्रमण के अवसर प्राप्त होंगे।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं

जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य तीसरे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य आपको रेल यात्रा की अवधि के दौरान कष्ट दे सकता है। छोटे भाई-बहनों का अभाव आपको हो सकता है। माणिक्य रत्न प्रभाव से आपमें धैर्यहीनता, पुरुषार्थ एवं स्वाभिमानी गुणों की कमी आ सकती है। आपमें कठोरता और अनुशासनप्रियता की भावना अधिक हो सकती है। रत्न प्रभाव से आपमें चारित्रिक दोष आ सकते है। कुछ बुरी आदतें भी आपमें आ सकती है। चोरी का भय अथवा मामा या पडोसियों को कुछ कष्ट हो सकते है। अधीनस्थ कर्मचारियों का सहयोग कम मिलेगा। सूर्य रत्न माणिक्य आपमें उदारता की कमी, आत्मा व चित्त की शुद्धि की कमी भी कर सकता है।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में सूर्य एकादश भाव के स्वामी है। कुंडली के अन्य ग्रह योगों के कारण सूर्य को अपने शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आप अपने जीवन लक्ष्य को समय पर प्राप्त करने में असफल हो सकते है। यह रत्न आपकी उच्चाकांक्षाओं पर नियंत्रण लगा सकता है। धन-संपत्ति तथा बड़े भाई बहनों के लिए रत्न की प्रतिकूलता बनी हुई है। यह रत्न आपका अरिष्ट कर सकता है। रत्न प्रभाव से आप विपत्तियों में पड़ सकते है। सूर्य रत्न माणिक्य आपको राज सत्ता और सरकारी पद पर कार्य करने में परेशानियां दे सकता है। माणिक्य रत्न संतान में कमी, भोगा-विलास तथा आंडबर प्रिय और तानाशाही की प्रवृति आपको दे सकता है।

मूंगा

आपकी कुंड़ली में मंगल तीसरे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर रेल यात्राओं के दौरान आपका कर्मचारियों से लड़ाई झगड़ा हो सकता है। यह रत्न आपको असंतोष एवं तनाव दे सकता है। मूंगा रत्न प्रभाव से आपके पिता का स्वभाव क्रोधी एवं रुखा हो सकता है। आपको धनहानि और अलगाव का सामना करना पड़ सकता है। आपके पिता को मुकद्दमेबाजी और शत्रुओं से हानि के योग बन सकते है। यह रत्न आपके भाग्य में कुछ कमी कर सकता है। मूंगा रत्न आपको कानों या बाजुओं से संबंधित तकलीफें दे सकता है। अत्यधिक क्रोध के चलते आपके अपने मित्रों से संबंध खराब हो सकते है।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में मंगल द्वितीय भाव एवं सप्तम भाव के स्वामी है। मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर आपको कुटुंब सुख और धन संचय में परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। रत्न प्रभाव से आपको परिश्रम और बुद्धि का सहयोग पूर्ण रूप से नहीं

मिल पाएगा। यह रत्न आपको सभा में भाषण देने में संकोच भाव दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपका वैवाहिक जीवन कष्टमय हो सकता है। मूंगा रत्न धारण से आपका जीवन साथी अत्यधिक क्रोध करने वाला हो सकता है। रत्न प्रभाव आपके जीवन साथी में अत्यधिक जोश, ऊर्जा और उत्तेजना दे सकता है। इस रत्न को धारण करने के बाद व्यापारिक साझेदार से अनबन हो सकती है। ग्रहस्थ जीवन में तनाव, क्लेश और अंशान्ति की स्थिति बन सकती है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु चतुर्थ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आप सामान्य से अधिक महत्वाकांक्षी और शुभकर्मो से दूर रहने वाले हो सकते है। अपना घर प्राप्त करने में आपको लम्बी प्रतिक्षा करनी पड सकती है। यह रत्न वाहन सुख में कमी कर सकता है। पुखराज रत्न प्रभाव से आपको अपनी योग्यतानुसार सम्मान नहीं मिल पाएगा। आपके व्यय चिकित्सा और व्यर्थ के विषयों पर अधिक होने के योग बन सकते है। पुखराज रत्न के प्रभाव से आपका व्यापार मंद गति से आगे बढ़ेगा। सरकार द्वारा दंड का सामना भी आपको करना पड़ सकता है। सुख-सुविधाओं का अभाव आपको महसूस हो सकता है।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में गुरु तृतीयेश एवं षष्ठेश है। गुरु ग्रह की शुभता में कमी के कारण गुरु रत्न पुखराज की अनुकूलता आपके लिए नहीं बन रही है। अतः इस रत्न को धारण करने पर आपमें आत्मविश्वास की कमी हो सकती है। कार्यो को करने से पूर्व ही आपके मन में नकारात्मक भाव आ सकते है। तीसरे भाव के स्वामी का रत्न होने के कारण यह रत्न आपमें साहस और पुरुषार्थ की कमी कर सकता है। योग्यता और कुशलता से धन अर्जित करने में इस रत्न की प्रतिकूलता आपके लिए बनी हुई है। गुरु रत्न पुखराज धारण आपकी उच्च शिक्षा और नौकरी दोनों क्षेत्रों में बेहतर परिणाम प्राप्त करने में परेशानियां दे सकता है। बौद्धिक क्षमता का सहयोग आपको समय पर नहीं मिल पाएगा।

दशानुसार रत्न विचार

गुरु
(03/07/2023 - 03/07/2039)

गुरु की दशा में आपका नीलम व मोती रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, गोमेद, पन्ना, हीरा, माणिक्य व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(03/07/2039 - 03/07/2058)

शनि की दशा में आपका नीलम, पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, मोती व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(03/07/2058 - 03/07/2075)

बुध की दशा में आपका नीलम, पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, गोमेद, मोती व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा व पुखराज रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - ओपल

आपका जन्म तुला राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी शुक्र होता है। शुक्र ज्योतिषशास्त्र में शुभ ग्रह माना जाता है, शुक्र को असुरों का देव भी माना जाता है। सभी विलासिता देने वाला शुक्र ग्रह होता है जो जातक को सभी सुख, समृद्धि और ऐश्वर्य प्रदान करता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः तुला राशि के लग्न वाले जातकों को तुला राशि के स्वामी ग्रह शुक्र को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। शुक्र ग्रह के लिये ओपल रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी शुक्र राजा के सलाहकार का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को राज दरबार में सलाहकार तुल्य अधिकार प्राप्त तथा उच्च पदाधिकारी का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को अपने जीवन साथी का सहयोग भी प्राप्त होता है। शुक्र ग्रह यौन अंगों एवं यौन सुखों आदि का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको यौन रोग हों या यौन सुख से संबंधित कष्ट हो तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है।

ओपल रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि अनामिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में सूर्य की अंगुली मानी जाती है और सभी ग्रह सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाने के कारण उसको ग्रहों का राजा माना जाता है। ओपल रत्न शुक्र का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात शुक्रवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल शुक्र की होरा में श्रेष्ठ होता है। शुक्रवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय शुक्र की होरा का होता है। ओपल को यदि शुक्रवार के साथ-साथ शुक्र के नक्षत्र अर्थात् भरणी, पूर्वाफाल्गुनी और पूर्वाषाढ़ा में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

ओपल को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर सफेद रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, शुक्र के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

शुक्र का मंत्र - ऊँ शुं शुक्राय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि शुक्र से संबंधित पदार्थ जैसे चावल, चांदी, सफेद कपड़ा सवा मीटर का दान करें तो ओपल रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी शुक्र का 108 बार प्रतिदिन स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें या दुर्गा मां की पूजा-स्तुति तथा दुर्गा चालीसा का पाठ करें तो यह ओपल रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शुक्रवार को दुर्गा सप्तशती का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

तुला लग्न वाले जातक यदि ओपल रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

रूद्राक्ष

रूद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रूद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रूद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रूद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रूद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रूद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रूद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रूद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रूद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रूद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रूद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रूद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रूद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली तुला लग्न की है। तुला लग्न का स्वामी शुक्र होने के कारण आपके व्यक्तित्व में शुक्र का प्रभाव दिखाई देता हैं। आपका स्वभाव सौम्यता लिये होता है। आप व्यवहार पसंद हैं। वायु तत्व होने के कारण आप अक्सर योजनाएं बनाते हुए मिल जाते हैं परन्तु उन पर क्रियान्वयन नहीं कर पाते। आपको भोग विलास की वस्तुओं का उपभोग करना और खरीदना ज्यादा पसंद हो सकता है। नई टेक्नोलॉजी का स्वागत करते है। नये चिन्तन व परीक्षण करने वाले (क्रियटिव) होते हैं और संगीत, गायन, नृत्य, एक्टिंग आदि चीजे पसंद करते हैं।

आप अपनी साज-सज्जा और कपड़ों पर विशेष रूप से ध्यान रखते हैं। आपको वात संबंधी पेरशानी अधिक रहती है। आप बहुत जल्दी ही हर माहौल में समझौता कर लेते हैं।

हमेशा आपका अलग ही रूप देखने को मिलता है। आप मे हाजिर जवाब क्षमता अद्भूत है। आप एक जगह टिक कर नहीं बैठ सकते। आदर्शवादी और साहित्यप्रिय होने के कारण आपकी लेखन क्षमता भी अच्छी होती है।

कुंडली के 12 भावों में से 3 भाव विशेष रूप से अशुभ भाव होने के कारण अनिष्ट करने का सामर्थ्य रखते हैं। 6, 8 व 12 वें भाव को त्रिक भावों के नाम से जाना जाता है। तथा त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं कहा जाता है। इन भावों का संबन्ध जिन भी ग्रहों व भावेशों से बनता है उनकी शुभता में कमी आती है। कुंडली के आठवें घर से मृत्यु, दुर्घटना, क्लेश, विघ्न, अकाल मत्यु और परेशानियों का विचार किया जाता है। कुंडली का बारहवां भाव व्यय भाव, हानि भाव, मोक्ष भाव, बंधन भाव तथा शयन भाव के नाम से जाना जाता हैं। त्रिक भावों में यह सबसे अंतिम भाव हैं। उपरोक्त विषयों के अलावा इस भाव से कोर्ट कचहरी, अस्पताल, कारावास आदि का विश्लेषण भी किया जाता हैं। इस भाव में किसी भावेश का बैठना या इस भावेश का किसी ग्रह या भावेश से सम्बन्ध अशुभता समझा जाता हैं।

इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

आपके तुला लग्न के लिए गुरु षष्टेश व तृतीयेश हैं। षष्टेश व तृतीयेश गुरु आपके धन में अल्पता, ऋणग्रस्तता, संतानविरोधी, न्यायालयों में अधिक व्यय, जीवन साथी से अनबन तथा जीवन में समय समय पर धोखो की स्थिति उत्पन्न कर सकता हैं।

शुक्र अष्टमेश व लग्नेश है आप चतुराई से धन-संग्रह, कुटुम्बियों से परेशानियां, स्वास्थ्य में न्यूनता दे सकता हैं। शुक्र अष्टमेश है, इसलिए आपके वैवाहिक सुखों में कमी का कारण बन सकता हैं। जीवन साथी के प्रति निष्ठावान रहने से गृहस्थ जीवन के कष्टों में कमी कर सकते है।

बुध द्वादशेश और नवमेश हैं। नवमेश व द्वादशेश बुध आपके लिए व्यय, हानियों और दंड की स्थिति बना सकते हैं। इसके अतिरिक्त यह आपके विवेक, वाक्शक्ति, भाग्य, धर्म, यश में कमी भी करेंगे। आपमें तुरन्त निर्णय की क्षमता, न्यायालयों पर व्यय, राज्य व भाग्य के क्षेत्र में हानि दे सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 4, 5, 6 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए

आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	09/04/1966-03/11/1966	20/12/1966-17/06/1968	17/06/1968-07/03/1969
साढेसाती द्वितीय ढैया	17/06/1968-17/06/1968	07/03/1969-28/04/1971	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	28/04/1971-10/06/1973	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	23/07/1975-07/09/1977	----------	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	21/12/1984-01/06/1985	17/09/1985-17/12/1987	----------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	17/04/1998-07/06/2000	----------	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	----------

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढेसाती तृतीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	शत्रु व रोग
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	दाम्पत्य कलह
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	दुर्घटना से बचाव
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	व्यावसायिक परेशानी
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	धन

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति तृतीय भाव में है। यह भाव पराक्रम मित्र एवं भाई बहनों का प्रतिनिधि भाव है तथा मंगल इनका कारक है अतः तृतीय भाव में मंगल की स्थिति शुभ मानी जाती है। इसके प्रभाव से आप एक पराक्रमी पुरुष होंगे तथा अपने समस्त सांसारिक कार्य कलापों को आप निर्भय होकर सम्पन्न करेंगे तथा इनमें आपको समय समय पर इच्छित सफलता प्राप्त होगी। साथ ही भाई बहनों से भी आवश्यक सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी तथा अपने परिश्रम एवं पराक्रम से आप संचार साधनों को भी अर्जित करने में समर्थ रहेंगे।

कुंडली में तृतीयस्थ मंगल की चतुर्थ दृष्टि षष्ठ भाव पर पड़ेगी इसके प्रभाव से शत्रु वर्ग को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगे तथा प्रतियोगी परीक्षाओं मुकद्दमों या चुनाव आदि में आपको जीवन में सामान्यतया सफलताएं मिलती रहेंगी। साथ ही इच्छित मात्रा में धनऐश्वर्य की भी प्राप्ति होगी परन्तु पित गर्मी अथवा रक्त विकार संबंधी किसी परेशानी से शारीरिक कष्ट हो सकता है। नवम भाव पर सप्तमस्थ दृष्टि से धर्म एवं धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि अल्प मात्रा में रहेगी तथा भाग्य की अपेक्षा कर्म करने पर ही आप अधिक विश्वास करेंगे। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से कार्य क्षेत्र में आप स्वपराक्रम एवं योग्यता से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। यद्यपि इनमें आपको न्यूनाधिक समस्याओं एवं व्यवधानों का भी सामना करना पड़ेगा परन्तु अंततोगत्वा आप अपने उद्देश्य की पूर्ति में सफल रहेंगे। लेकिन पिता के स्वास्थ्य के लिए यह स्थिति मध्यम रहेगी परन्तु समाज में वे सम्मानीय पुरुष होंगे तथा अन्य जनों से पूर्ण आदर प्राप्त करेंगे।

इस प्रकार मंगल की इस स्थिति के प्रभाव से आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुख शान्ति से परिपूर्ण रहेगा तथा परिवार का यथोचित पालन करने में आप समर्थ रहेंगे।

पारिवारिक जनों से आपको यथोचित सहयोग एवं प्रोत्साहन मिलता रहेगा जिससे आप उत्साह पूर्वक अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में घातक नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्यमान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। परिणामस्वरूप जातक जन्म से ही परिवार से अलग रहता है। माता-पिता का स्नेह अधिक नहीं मिलता है। जातक के अनेक शत्रु होते हैं। वे समय-समय पर नुकसान पहुँचाते रहते हैं। नाना-नानी या दादा-दादी का प्रायः वियोग होता है। इस योग के प्रभाव से सन्तान कभी अस्वस्थ हो जाते हैं और जातक चिन्ता व परेशानी के घेरे में आ जाता है।

इस योग के प्रभाव से जातक को व्यापार व्यवसाय में थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है। नौकरी व्यवसाय में भी कभी कुछ व्यवधान उपस्थित हो जाता है पर कालान्तर में वह स्वतः नष्ट हो जाता है। जातक को भागीदारी में मनमुटाव की स्थिति पैदा हो जाती है और सरकारी अधिकारियों से कभी अनबन भी हो जाती है।

इस योग के कारण जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी अशान्त या कष्टमय हो जाता है। घर में सुख-शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। सुख-प्राप्ति के लिए विशेष रूप से संघर्ष करना पड़ता है और मित्र गण समय पर धोखा दे जाते हैं। परिणामस्वरूप जातक को आंशिक रूप में नुकसान उठाना पड़ता है। आय में कमी रहती है। फलस्वरूप आर्थिक संकट समय-समय पर घेर लेता है। लेकिन इतना सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक अच्छा समय आता है जिसमें जातक को विशेष रूप से प्रसिद्धि मिलती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।

11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम् भाव का स्वामी शनि है तथा उस पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में शनि के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 18 है। एक एवं आठ के योग से आपका मूलांक 9 बनता है। मूलांक नौ का स्वामी मंगल है। एक का सूर्य तथा आठ का शनि। इन तीनों ही ग्रहों का प्रभाव न्यूनाधिक मात्रा में आपके जीवन में आयेगा। मूलांक नौ के प्रभाव से आप एक साहसी व्यक्ति रहेंगे तथा साहस भरे कार्यों में आपकी रुचि रहेगी। जब कभी आप दुःसाहसी होंगे तब आपको हानि उठानी पड़ेगी।

आप अनुशासन पसन्द करेंगे। कार्यक्षेत्र में अपना एकाधिकार या प्रभुत्व चाहेंगे तथा ऐसे कार्यों में आपकी विशेष रुचि रहेगी जहाँ आप स्वतंत्र रूप से मुखिया की भूमिका निभायेंगे। आपके स्वभाव में फुर्तीलापन एवं जल्दवाजी होगी। आप चाहेंगे कि हर कार्य शीघ्र एवं फुर्ती से हो। इसमें व्यवधान आने पर आपका क्रोध बढ़ेगा क्योंकि रुकावटों को आप बर्दाश्त नहीं कर पायेंगे।

एक अंक का स्वामी सूर्य एवं आठ अंक का स्वामी शनि होने से हर सफलता के मध्य अवरोध, रुकावटें आयेंगी। जिनसे आपकी तेज बढ़ती उन्नति में ब्रेक लगेगा तथा आपकी महत्वाकांक्षा देर से पूरी होगी। इससे कई योजनायें शुरू होने के बाद रुक जायेंगी या धीमी गति को प्राप्त करेंगी। जिसमें आपका तन-मन-धन तीनों का व्यय होगा। आपको खुशामदी, चापलूस व्यक्तियों से हानि मिलेगी। अतः ऐसे व्यक्तियों से सावधान रहें जो आपकी अत्यधिक चापलूसी करें।

मंगल का मूलांक होने से आपको अपने जीवन में काफी संघर्ष करना पड़ेगा एवं जो भी सफलता मिलेगी वह कड़ी मेहनत, भाग-दौड़ के बाद ही प्राप्त होगी। मंगल, सूर्य, शनि के संयुक्त प्रभाववश आपका जीवन विध्न-बाधाओं, कठिनाईयों, आलोचनाओं को पार कर स्वयं की मेहनत एवं लगन द्वारा उच्चता के शिखर पर पहुँचेगा।

भाग्यांक दो का स्वामी चन्द्र ग्रह को माना गया है। इसके प्रभाव से आपकी कल्पनाशक्ति उन्नत किश्म की होगी। बौद्धिक स्तर आपका उच्च कोटि का रहेगा एवं बुद्धि जन्य कार्यों में आपकी विशेष अभिरुचि रहेगी। शारीरिक श्रम साध्य कार्यों में आपकी दिलचस्पी कम रहेगी। चन्द्रमा जिस तरह घटता-बढ़ता रहता है, उसी प्रकार आपके भाग्य का सितारा भी कभी तो एकदम ऊँचाईयों को प्राप्त करेगा और कभी आप एकदम घोर अंधकार में अपने आप को पायेंगे। ऐसे समय में धैर्य रखना आपके लिए अनिवार्य हो जाता है, क्योंकि आपके भाग्य का सितारा भी पुनः पूर्णिमा की तरह प्रकाशित होगा। धैर्य न रखना आपकी कमजोरियों में रहेगा।

भाग्य आपका बदलता रहेगा। एक स्थिर मुकाम पर कभी भी नहीं पहुँचेगा। आपको सम्पूर्ण जीवन में भाग्योदय की कुछ कमी खटकती रहेगी। आपको अधिकारियों से लाभ रहेगा तथा धन-धान्य से आप सुखी रहेंगे। आपको अपनी चलायमान प्रकृति पर नियंत्रण रखना होगा अन्यथा एक के बाद एक कार्यों को बीच में छोड़कर आगे बढ़ने की प्रवृत्ति वश आपके कार्य देर से सफल होंगे और कभी असफल भी होंगे।

आपका मूलांक 9 है तथा भाग्यांक 2 है। मूलांक 9 का स्वामी मंगल है तथा भाग्यांक 2 का स्वामी चंद्र है। मूलांक 9 एवं भाग्यांक 2 के बीच सम संबंध है। मंगल-चंद्र के योग से साहसिक कार्यों के द्वारा आपको अच्छे धन की प्राप्ति होगी। रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में आपकी कल्पना शक्ति एवं साहस द्वारा आपको अच्छी आर्थिक सफलताएं जीवन पर्यंत मिलती रहेंगी। रोजगार में आपकी उन्नति शीघ्रातिशीघ्र होगी एवं आपको प्रतिस्पर्धा तथा संघर्षों का कम मात्रा में सामना करना पड़ेगा। लेकिन खुशामदी तथा चापलूस व्यक्तियों के कारण आपको जीवन के विभिन्न मोड़ों पर हानि प्राप्त होगी। इनसे संभल कर चलना आपके लिए नितांत आवश्यक रहेगा। आपको ऐसा ही रोजगार पंसद आएगा, जिसमें आपका प्रभुत्व तथा एकाधिकार बना रहे। प्रतिद्वंदियों को आप अधिक समय तक सहन नही कर पाएंगे एवं उन पर विजय प्राप्त करने की आपकी निरंतर कोशिश बनी रहेगी। आपको ऐसे कार्यक्षेत्र पसंद आएंगे, जिनमें अधिक साहस की आवश्यकता रहती है। आपकी सामाजिक स्थिति उच्च दर्जे की रहेगी तथा आप समाज में मान-सम्मान प्राप्त करेंगे।

आपका भाग्योदय 29 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ होगा तथा 38 वर्ष की अवस्था से आप विशेष उन्नति करेंगे एवं 47 वर्ष की अवस्था पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 9 की 3 एवं 6 से मित्रता है तथा भाग्यांक 2 की 7 एवं 9 से मित्रता है। अतः आपके जीवन में 2, 3, 6, 7, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे तथा आपके जीवन में प्रमुख घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से सम संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के प्रभाव न्यूनाधिक मात्रा में आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन, या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए फरवरी, मार्च, जून, जुलाई, सितंबर के महीने विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे दिन, ऐसी तारीख, ऐसे मास तथा वर्ष में प्रारंभ करें, जब आपके मूलांक-भाग्यांक में मेल स्थापित हो तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

मूलांक 9 एवं भाग्यांक 2 के प्रभाववश ईस्वी सन् जिनका योग 2, 3, 6, 7, 9 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 2, 3, 6, 7, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

2 . 11, 20, 29, 38, 47, 56, 65, 74
3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75
6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69,
7 . 16, 25, 34, 43, 52, 61, 70,
9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार बनेंगी।

ग्रह फल

सूर्य

तृतीय भाव में सूर्य हो तो जातक, सरकार से सम्मान प्राप्त, कवि, भाई और सम्बन्धियों के कारण दुःखी, पराक्रमी, प्रतापशाली, लब्धप्रतिष्ठ एवं बलवान् होता है।

धनु राशि में रवि हो तो जातक विवेकी, योगमार्गरत, बुद्धिमान्, धनी, आस्तिक, व्यवहार कुशल, दयालु, शान्त, लोकप्रिय एवं शीघ्र क्रोधित होने वाला होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य तृतीय भाव में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा यदा कदा ही शारीरिक अस्वस्थता रहेगी। साथ ही उनकी आयु भी उत्तम रहेगी। पिता से आप जीवन में समस्त शुभकार्यों में सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही आप में शक्ति, साहस एवं पराक्रम बढाने के लिए वे नित्य यत्नशील रहेंगे। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगे तथा अवसरानुकूल आपको उचित उपदेश तथा निर्देश भी देते रहेंगे।

आप भी उनके प्रति हार्दिक स्नेह एवं सम्मान का भाव रखेंगे तथा प्रायः उनकी आज्ञा का पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी कुछ मतभेदों को छोड़कर सामान्य रूप से मधुर ही रहेंगे। उनकी सेवा करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे तथा जीवन में उनको पूर्ण आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे उन्हें कोई दुःख या कष्ट न हो। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्यतया शुभ ही समझे जाएंगे।

चन्द्र

सप्तमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सभ्य, धैर्यवान् नेता, विचारक, प्रावासी, जलयात्रा करने वाला, व्यापारी, अभिमानी, वकील, कीर्तिमान, शीतल स्वभाववाला एवं स्फूर्तिवान् होता है।

मेष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक स्थिर सम्पत्तिवान्, शूर, दृढ़ शरीरवाला, बन्धुहीन, कामी, उतावला, जलभीरू, यात्रा करने का शौकीन ,आत्माभिमानी एवं साहसी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित हैं। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में आपको सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके विवाह कराने में वे मुख्य भूमिका निभाएंगी तथा व्यापार आदि कार्यों में भी आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान प्रदर्शित करेंगे एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे एवं परस्पर मतभेदों का भी अभाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार का सहयोग भी प्रदान करने के लिए आप

हमेशा तत्पर रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्य रूप से शुभ ही रहेंगे।

मंगल

तृतीयभाव में मंगल हो तो जातक कटुभाष, भ्रतृकष्टकारक, प्रदीप्त जठराग्निवाला, बलवान्, बन्धुहीन, सर्वगुणी, साहसी, धैर्यवान् प्रसिद्ध एवं शूरवीर होता है।

धनु राशि में मंगल हो तो जातक चतुर राजनैतिक नेता, कम सन्तान, लोकप्रिय प्रसिद्ध, उच्चप्रशासकीय पद प्राप्त करने वाला, कठोर, शठ, क्रूर, परिश्रमी एवं पराधीन होता है।

आपके जन्म समय में मंगल तृतीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। शक्ति, साहस तथा पराक्रम से वे युक्त रहेंगे। साथ ही जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको यथायोग्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। धन धान्य से भी वे युक्त रहेंगे एवं समयानुसार आपकी आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख में आपकी पूरी सहायता करेंगे।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी एवं सर्वदा विषम परिस्थितियों में भी उनका पूर्ण सहयोग करेंगे। आप के परस्पर संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा मतवैमिन्यता के कारण उनमें कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु वह अल्प समय के लिए रहेगा कुछ समय बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही आप सुख दुःख में भी उनको अपनी ओर से पूर्ण सहायता प्रदान करेंगे। इस प्रकार आप भाई बहिनों के सुख मध्यम रूप से ही अर्जित कर सकेंगे।

बुध

तृतीयभाव में बुध हो तो जातक सद्गुणी, कार्यदक्ष, परिश्रमी, मित्रप्रेमी, भीरू, धर्मात्मा, यात्राशील, व्यवसायी, चंचल, अल्पभ्रातृवान्, विलासी, सन्ततिवान्, कवि, सम्पादक, सामुद्रिकशास्त्र का ज्ञाता एवं लेखक होता है।

धनु राशि में बुध हो तो जातक विद्वान्, समाज में सम्मानित, गुणी, सुगठित शरीर, अविवेकी, अच्छा संगठनकर्त्ता, चतुर, ईमानदार, उदार, प्रसिद्ध, राजमान्य, लेखक, सम्पादक एवं वक्ता होता है।

गुरु

चतुर्थभाव में गुरु हो तो जातक शौकीन मिजाज, सुन्दरदेही, आरामतलब, परिश्रमी, ज्योतिषी, उच्चशिक्षा प्राप्त, कमसन्तान, सरकार द्वारा सम्मानित, माँ से स्नेह करने वाला, कार्यरत, उद्योगी, लोकमान्य, यशस्वी एवं व्यवहारज्ञ होता है।

मकर राशि में गुरु हो तो जातक प्रवासी, द्रव्यहीन, व्यर्थपरिश्रमी, चंचलचित्त, धूर्त्त, असभ्य आचरण, दुःखी एवं ईर्ष्यालु होता है।

शुक्र

द्वितीयभाव में शुक्र हो तो जातक भाग्यवान्, साहसी, समयज्ञ, मिष्टान्नभोजी, यशस्वी, लोकप्रिय, जौहरी, दीर्घजीवी, कवि, कुटुम्बयुक्त, सुखी एवं धनवान् होता है।

वृश्चिक राशि में शुक्र हो तो जातक-नास्तिक, कुकर्मी, स्त्रीद्वेषी दरिद्री, गुह्य रोगी, ऋणी, क्रोधी, स्वतन्त्र एवं अन्यायी होता है।

शनि

चतुर्थभाव में शनि हो तो जातक अपयशी, बलहीन, धूर्त, कपटी, शीघ्रकोपी, कृशदेही, उदासीन,वातपित्तयुक्त एवं भाग्यवान् होता है।

मकर राशि में शनि हो तो जातक कुशा बुद्धि, परिश्रमी, आस्तिक भोगी, मिथ्याभाषी, शिल्पकार, प्रवासी, अच्छा घरेलू जीवन, विद्वान्, सन्देह करनेवाला, बदला लेने वाला एवं दार्शनिक होता है।

राहु

दशम भाव में राहु हो तो जातक मितव्ययी, वाचाल, सन्ततिक्लेशी चन्द्रमा से युक्त राहु के होने पर राजयोग कारक अनियमित कार्यकर्त्ता एवं आलसी होता है।

कर्क राशि में राहु हो तो जातक चतुर, उदार, रोगी, अनेकों शत्रुओं वाला, धोखेबाज, धनहीन एवं पराजि होता है।

केतु

चतुर्थ भाव में केतु हो तो जातक, कार्यहीन, चंचल, वाचाल एवं निरुत्साही होता है।

मकर राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमशील, पराक्रमी जन्म स्थान छोड़कर जाने वाला, प्रसिद्ध एवं तेजस्वी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। सामान्यतया तुला लग्न में उत्पन्न जातक सुन्दर स्वस्थ एवं दर्शनीय होते हैं तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होता है जिससे अन्य लोग उनसे प्रभावित रहते हैं। इनकी प्रवृति हास्य प्रिय होती है तथा बच्चों के प्रति इनके मन में प्रबल स्नेह का भाव विद्यमान रहता है। सुन्दर दृश्यों एवं वस्तुओं के प्रति भी इनमें आकर्षण रहता है। स्वभाविक रूप से ये अन्य जनों को किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं देते है तथा सबके साथ समानता का व्यवहार करते हैं जिससे समाज में ये सम्मानित प्रतिष्ठित तथा प्रसिद्ध रहते हैं। कला के प्रति इनका भावनात्मक लगाव रहता है तथा अच्छे कार्यों से ये अपनी आजीविका अर्जित करते हैं। नीति ज्ञान में ये चतुर होते हैं अतः राजनीति के क्षेत्र में इनको नेतृत्व प्राप्त हो जाता है परन्तु इनका कोई निश्चित सिद्धांत नहीं होता तथा समयानुसार ये परिवर्तन करते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक सौष्ठव व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे। आपकी प्रवृति हास्यप्रिय होगी तथा गम्भीरता आपको विशेष अच्छी नहीं लगेगी। बच्चों के प्रति आपके मन में स्नेह का भाव रहेगा तथा प्राकृतिक दृश्यों के प्रति आपके मन में आकर्षण रहेगा। साथ ही कला से आपका भावनात्मक सम्बन्ध रहेगा।

आप सभी लोगों से समानता का व्यवहार करेंगे तथा आपके मन में किसी भी प्रकार का भेद भाव नहीं रहेगा अपने कार्यक्षेत्र में आपका प्रभाव रहेगा तथा आपके अधिकारी एवं सहयोगी आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। आप किसी नवीन सिद्धांत या ग्रन्थ आदि की भी रचना कर सकते हैं जिससे आपको यश की प्राप्ति होगी।

लग्न में लग्नेश शुक्र की राशि के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक शांति एवं सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा बुद्धिमता से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे तथा इनमें आपको इच्छित सफलताएं भी मिलती रहेंगी। आपकी प्रवृति विलासी होगी तथा भौतिकता के प्रति अत्यधिक आकर्षण रहेगा जिससे आपकी प्रवृति काफी व्ययशील होगी। आपकी प्रवृति भ्रमण प्रिय होगी तथा यात्रा आदि भी समय समय पर सम्पन्न करते रहेंगे। कला एवं संगीत में आप निपुण होंगे तथा कार्य करने में अत्यंत ही दक्ष होंगे।

आप में सहनशीलता का भाव विद्यमान होगा तथा धैर्यपूर्वक कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता की प्रतीक्षा करने में समर्थ होंगे। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आपको समय समय पर धनार्जन होता रहेगा। आप में शारीरिक बल की भी प्रचुरता रहेगी फलतः परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करके आप जीवन में मनोवांछित सफलताओं को अर्जित करेंगे जिससे समाज में आपका प्रभाव रहेगा तथा सभी लोग आपका आदर करेंगे। साथ ही यश भी दूर दूर तक व्याप्त रहेगा।

धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा अवसरानुकूल आप धार्मिक कृत्यों को नियमपूर्वक सम्पन्न करेंगे। जिससे आपको मानसिक शांति की अनुभूति होगी। मित्र वर्ग के

मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगे तथा उनसे आपको वांछित लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में वृश्चिक राशि उदित हुई है जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में अपने प्रयत्न एवं परिश्रम से धनार्जन करने में सफल रहेंगे। आपको पैतृक सम्पति की प्राप्ति अल्प मात्रा में ही होगी परन्तु बहुमूल्य रत्न तथा धातुओं को आप अपनी योग्यता तथा लगन से अर्जित करने में अवश्य सफलता प्राप्त करेंगे। आपकी रूचि जायदाद या भूमि संबंधी क्रय विक्रय या सम्बन्धित कार्यो में रहेगी जिससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ होगा। आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा परिवार के सहयोग से जीवन में इच्छित उन्नति तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। लेकिन आपात्काल में स्वयं को व्यवस्थित करने में असुविधा की अनुभूति करेंगे।

पारिवारिक जनों की प्रसन्नता तथा सुविधा कार्यो में आप सतत यत्नशील रहेंगे तथा पारिवारिक शान्ति एवं सुख संसाधनों पर काफी व्यय करेंगे जिससे वे लोग सन्तुष्ट रह सकें। आपकी वाणी प्रभावशाली रहेगी तथा अन्य जनों को तर्क पूर्ण वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे तथा आपसे लोग सहमत भी रहेंगे। मिष्ठान के आप प्रिय रहेंगे तथा इसके भक्षण से आपको किंचित प्रसन्नता प्राप्त होगी लेकिन प्रौढ़ावस्था में आप नेत्र संबंधी कष्ट प्राप्त कर सकते है इसके अतिरिक्त धार्मिक परम्पराओं का आप पूर्ण पालन करेंगे तथा शुभ एवं मंगल कार्य भी समय समय पर करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सज्जन पुरूषों के प्रति आपके मन में हमेशा आदर का भाव रहेगा।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय तृतीय भाव में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति उत्तम रहेगी तथा किसी भी वस्तु या विषय को काफी समय तक याद रखने मे समर्थ रहेंगे। भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनका आपको वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही वे आपके प्रति कर्तव्य परायण तथा विश्वास पात्र रहेंगे। आप भी पारिवारिक शान्ति के लिए उनकी गलतियों को क्षमा करने में समर्थ रहेंगे। सत्य के प्रति आपकी पूर्ण आस्था रहेगी तथा अपने सिद्धांत के भी पक्के होंगे चाहे इससे आपको कोई परेशानी या समस्याएं ही उत्पन्न क्यों न हों। इसके अतिरिक्त आप एक स्पष्टवादी व्यक्ति होंगे तथा जिसे सही समझेंगे उसे सबके समक्ष कह देंगे चाहे उसका प्रभाव कुछ भी हो।

आप एक साहसी तथा पराक्रमी पुरूष होंगे तथा नेतृत्व के गुणों से भी युक्त रहेंगे। साथ ही किसी भी मनुष्य या वस्तु के गुणावगुणों को परखकर ही उसको बारे में अपने राय प्रदान करेंगे। आप सद्विचारों के व्यक्ति होंगे तथा धार्मिक विचारों की भी प्रधानता रहेगी। आधुनिक संचार संसाधनों से आप युक्त रहेंगे यथा दूरभाष, दूरदर्शन या वाहन आदि से युक्त रहकर सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। साथ ही संगीत एवं हस्त कला के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा यदा कदा इसमें भी अपना समय व्यतीत करेंगे। आपकी समीपस्थ या दूर देशों की यात्राएं समय समय पर होती रहेंगी तथा इनसे आपको वांछित लाभ भी प्राप्त होगा। आपकी अध्ययन के प्रति रूचि रहेगी तथा धार्मिक ग्रन्थ, साहित्य तथा वैज्ञानिक पुस्तकों का आप रूचिपूर्वक अध्ययन करेंगे इसके अतिरिक्त आप किसी संस्था के पदाधिकारी एवं दीन दुःखियों के प्रति दयालु रहेंगे जिससे समाज में सम्माननीय समझे जाएंगे।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है तथा केतु भी चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आपको समस्त सांसारिक सुखों की प्राप्ति होगी तथा आधुनिक सुख संसाधनों एवं उपकरणों का भी उपभोग करेंगे परंतु इस को प्राप्त करने में आपको काफी परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करना पड़ेगा। अतः आपको निराश नहीं होना चाहिए तथा परिश्रम पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करना चाहिए।

जीवन में आपको चल एवं अचल सम्पत्ति की भी प्राप्ति होगी तथा न्यूनाधिक मात्रा में इसका उपभोग करेंगे। नाना या नानी से भी किंचित मात्रा में चल या अचल सम्पत्ति प्राप्ति के योग बनते हैं। इसके अतिरिक्त स्वपरिश्रम से भी आप धन सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे लेकिन विवादित सम्पत्ति से आपको दूर ही रहना चाहिए तथा इससे किसी भी प्रकार से संबंधित नहीं होना चाहिए अन्यथा आपको अनावश्यक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा।

प्रारंभ में आप मध्यम घर में निवास करेंगे परन्तु मध्यावस्था के बाद आापको अच्छे घर की प्राप्ति होगी तथा आपका घर आधुनिक सुख सुविधाओं से युक्त होगा। इसकी सुन्दरता एवं आकर्षण बनाए रखने के लिए आप व्यक्तिगत रूप से तत्पर होंगे। इसके साथ ही प्रारंभ में वाहन सुख मध्यम होगा परंतु मध्यावस्था के बाद पूर्ण सुख प्राप्त करने में समर्थ होंगे।

आपकी माता जी तेजस्वी, बुद्धिमान एवं भौतिकतावादी महिला होंगी तथा परिवार के सदस्यों पर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा। अपनी व्यवहार कुशलता से वे सबको सन्तुष्ट तथा प्रभावित रखने में समर्थ होंगी। परिवार के सभी सदस्य भी उनको उचित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव होगा तथा समयानुसार आपको आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान कलेंगी। आपकी उन्नति में उनका प्रमुख योगदान होगा लेकिन आप दोनों के मध्य मतभेदों की अधिकता होगी जिससे संबंधों में मधुरता कम ही होगी अतः सामंजस्य स्थापित करना चाहिए।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से आप परिश्रम से ही सफलताएं अर्जित करेंगे तथापि छोटी कक्षाओं में आपको इच्छित सफलताएं मिल जाएगी लेकिन स्नातक परीक्षा उतीर्ण करने में पर्याप्त परिश्रम करना पड़ेगा। अतः स्नातक परीक्षा की अपेक्षा किसी तकनीकी पाठ्यक्रम का डिप्लोमा आदि करें तो इस क्षेत्र में अल्प परिश्रम से ही आपको वांछित सफलता मिल सकती है जिससे आपके आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी तथा उज्ज्वल भविष्य को बनाने में समर्थ होंगे।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा आपके सभी कार्य-कलापों में उत्कृष्ट बुद्धिमता की छाप होगी। इससे सभी लोग आपसे प्रभावित होंगे तथा आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आप में सही समय में तत्काल सही निर्णय लेने की शक्ति भी विद्यमान होगी जिससे समान्यत्या कार्यो में आपको सिद्धि प्राप्त होगी वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म में आपकी पूर्ण रूचि होगी तथा उनके ज्ञानार्जन से सामाजिक प्रभाव में वृद्धि करेंगे। संगीत कला एवं कविता तथा पाश्चात्य साहित्य के प्रति आपकी ज्ञानार्जन की इच्छा होगी तथा स्वपरिश्रम से इस क्षेत्र का न्यूनाधिक ज्ञान अर्जित करने में समर्थ होंगे।

पंचमभावा में शनि की राशि के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में आपकी विशेष रूचि होगी तथा मनोरंजन शान्ति एवं आत्म सन्तुष्टि के लिए आप प्रेम-प्रसंग स्थापित करेंगे। आपके प्रेम में भौतिक तथा भावात्मक दोंनो प्रकार का आकर्षण विद्यमान होगा। अतः इस क्षेत्र में आपको मर्यादा तथा नैतिकता का अवश्य ध्यान रखना चाहिए जिससे अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना न करना पड़े।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा कन्या संतति अधिक होगी। आपकी संतति बुद्धिमान योग्य एवं पराक्रमी होगी तथा इन्हीं गुणों से जीवन में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना होगी तथा उनकी आज्ञा का पालन भी करेंगे। शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को वे माता-पिता की सलाह से सम्पन्न करेंगे। इससे आपस में सद्भाव एवं विश्वास का भाव बना रहेगा। पिता की अपेक्षा माता के प्रति बच्चों का विशेष अपनत्व का भाव होगा एवं अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान वे माता के माध्यम से ही सम्पन्न करेंगे लेकिन आदर का भाव दोनों के प्रति समान होगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में माता-पिता की तन-मन-धन से सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। अतः इस संदर्भ में आप भाग्यशाली व्यक्ति होंगे।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति योग्य सिद्ध होगी तथा प्रारंभ से ही वे अध्ययन के क्षेत्र में विशेष उन्नति एवं सफलताएं अर्जित करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा का पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा उसमें आवश्यक व्यय करके आधुनिक परिवेश में उन्हें शिक्षा दिलाएंगे। वे भी स्वभाव से मृदु, सुन्दर, सक्रिय एवं व्यवहार कुशल होंगे तथा अन्य जनों को अपने कार्य कलापों तथा बुद्धिमता से प्रभावित एवं प्रसन्न रखेंगे जिससे वे वांछित स्नेह तथा सम्मान प्रदान करेंगे। इससे आपकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा संतति पर आप गौरवान्वित होंगे।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है अतः इसके प्रभाव से आप को जीवन में किसी उच्चाधिकार प्राप्त व्यक्ति से विरोध का सामना करना पड़ेगा साथ ही आपके शत्रु भी सामाजिक मान सम्मान में न्यूनता करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेंगे। जिससे समाज में आपके प्रभाव में अल्पता आएगी। आपके सेवक आज्ञाकारी तथा विश्वास पात्र रहेंगे तथा ईमानदारी से आपकी सेवा में हमेशा तत्पर रहेंगे लेकिन यदि आप उनको उचित पारिश्रमिक प्रदान नहीं करेंगे तो वे घर में किसी प्रकार की चोरी आदि भी कर सकते है अतः ऐसी समस्याओं का निराकरण पहले ही कर लेना चाहिए।

आपकी प्रवृत्ति अधिक से अधिक धन संग्रह करने की रहेगी साथ ही कई प्रकार से पूंजीनिवेश भी करेंगे परन्तु इसमें हानि की अवस्था में आपको ऋण आदि लेना पड़ सकता है लेकिन आपको कर्ज देने वाले विशेष सहयोग नहीं देंगे तथा विलम्ब की अवस्था में आपके सम्मान को प्रभावित करेंगे। अतः धन व्यय या पूंजीनिवेश आदि के कार्यो में आपको अत्यधिक बुद्धिमता एवं सतर्कता का परिचय देना चाहिए। इसके साथ ही अवसरानुकूल बन्धुवर्ग या संबन्धी भी आर्थिक मामलों में आपको हानि प्रदान कर सकते हैं। अतः ऐसे समय में स्थिति को पूर्ण समझकर ही कार्य करने चाहिए।

जीवन में सम्बन्धियों या अन्य जनों से मुकद्दमे बाजी का भी संकेत मिलता है। इसका संबंध आर्थिक, जमीन जायदाद या कुछ फौजदारी मामलों से हो सकता है। साथ ही यदा कदा दाम्पत्य जीवन में भी मधुरता के भाव में न्यूनता आ सकती है। मामा मामियों से आपके संबंध सामान्य ही रहेंगे तथा परस्पर विशेष सहयोग के भाव में न्यूनता रहेगी। शारीरिक स्वस्थता बनाए रखने के लिए उचित खान पान का प्रयोग करें। जब कभी आपको अत्यधिक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा तब आप गुप्त कार्यो के द्वारा शान्ति एवं सफलता अर्जित करने की सोचेंगे इसमें या तो पूजा संबन्धी कार्य हो सकता है अन्यथा आप अपने कठोर कार्यो से प्रतिशोध की भावना से पूर्ण करेंगे जिससे आपको न्यूनाधिक रूप से लाभ एवं उपलब्धियां अर्जित हो सकती है।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है तथा चन्द्रमा भी सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है सामान्यतया मेष राशि की सप्तम भाव में स्थिति के प्रभाव से जातक का सहयोगी तेजस्वी पित प्रकृति साहसी एवं पराक्रमी होता है तथा सप्तमस्थ चन्द्रमा के प्रभाव से वह सुशील सहिष्णु शिक्षित एवं बुद्धिमान होता है

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील स्वभाव की होगी परन्तु तेजस्विता का भाव विद्यमान रहेगा। अपने साहस एवं पराक्रम से वह सांसारिक महत्व के कार्यो को सम्पन्न करेंगी। वह सहिष्णु स्वभाव की महिला होंगी तथा शांत मन से अपने कार्यो को पूर्ण करेंगी। उनके उत्कृष्ट कार्यो से अन्य जन भी प्रभावित होंगे। चन्द्रमा के प्रभाव से उनमें कर्तव्य परायणता का भाव भी विद्यमान होगा तथा समाज एवं परिवार के प्रति ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन करेंगी।

आपकी पत्नी सुंदर एवं आकर्षक वर्ण की महिला होंगी तथा उनका कद भी सामान्य रहेगा। शारीरिक संरचना उनकी दर्शनीय रहेगी तथा अंग प्रत्यंग भी पुष्ट एवं सुडौल रहेंगे जिससे उनके सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व में निखार आएगा। जलीय ग्रह चन्द्रमा के भाव से यद्यिप शरीर में किंचित स्थूलता आ सकती है परन्तु सौन्दर्य में कोई कमी नहीं आएगी। वह समय समय पर आधुनिक सौन्दर्य प्रसाधनों का भी उपयोग करेंगी। साहित्य एवं कला में उनकी रूचि रहेगी तथा सुंदर वस्तुओं के संग्रह में तत्पर रहेंगी।

आपका विवाह किसी संबंधी के सहयोग से होगा तथा इसमें महिला संबंधी की भूमिका मुख्य रहेगी। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति मन में प्रबल आत्मसमर्पण का भाव रहेगा जिससे सुख दुख में एक दूसरे का पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। आपके सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य आपसी सहयोग एवं सहमति से ही सम्पन्न करेंगे। इससे आपस में विश्वास तथा समानता का भाव बना रहेगा।

आपका विवाह मध्यम परिवार में होगा तथा सामाजिक एवं आर्थिक रूप से उनकी स्थिति अनुकूल ही रहेगी। सास ससुर से आप मधुर संबंध स्थापित करने में समर्थ होंगे। वे भी आपको यथोचित स्नेह प्रदान करेंगे तथा समयानुसार नैतिक सहयोग भी देंगे जिससे परस्पर आवगमन होता रहेगा।

आपकी पत्नी भी सास ससुर के प्रति पूर्ण सेवा भाव रखेंगी तथा सुख दुख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी एवं अपनी ओर से कोई भी कष्ट नहीं होने देंगी देवर एवं ननदों को भी वह अपने सद्व्यवहार तथा मधुर वाणी से प्रभावित रखेंगी जिससे उनसे यथोचित सहयोग एवं सम्मान की प्राप्ति होगी।

व्यापार या महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल रहेगी एवं इससे लाभ होगा अतः यदि स्त्री या मातृपक्ष से साझेदारी कि जाए तो इससे वांछित उन्नति होगी एवं

आपस में विश्वसनीयता भी बनी रहेगी।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप में आध्यात्मिक शक्ति विद्यमान रहेगी। साथ ही ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि में आपकी श्रद्धा रहेगी तथा परिश्रम पूर्वक इनका ज्ञान अर्जित करने में भी समर्थ रहेंगे। आपके अन्दर सक्रियता के भाव की सदैव प्रबलता रहेगी तथा प्रतिभा से भी युक्त रहेंगे अतः आप कोई भी सृजनात्मक कार्य दूसरों की अपेक्षा आसानी से कर लेंगे। ज्यौतिष आदि के क्षेत्र में आप काफी उन्नति एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे तथा इसमें आपको ख्याति भी प्राप्त होगी। आपको मित्र या बन्धु वर्ग के द्वारा जायदाद संबन्धी लाभ का योग बनता है। साथ ही पैतृक सम्पत्ति भी न्यूनाधिक रूप से आपको अवश्य प्राप्त होगी। जायदाद एवं चल अचल सम्पत्ति के स्वामित्व के द्वारा समाज से आपको इच्छित आदर एवं सम्मान की प्राप्ति होगी। इस प्रकार आप एक वैभवशाली पुरूष के रूप में जाने जाएंगे ।

विवाह आदि के समय आपको आवश्यक मात्रा में धन या उपहार आदि की प्राप्ति होगी तथा अपेक्षानुसार आपके ससुराल पक्ष के लोग आपको ये सब भेंट करेंगे। साथ ही आप आवास को सुदंर सजावट से युक्त रखेंगे तथा समय पर पार्टियों का भी आयोजन करते रहेंगे। बीमा आदि से भी समय समय पर लाभ होगा अतः बीमा आपको अवश्य कराना चाहिए। आपके घर में चोरी की कोई बड़ी घटना नहीं होगी परन्तु सामान्यतया इन घटनाओं से कोई परेशानी नहीं होगी। आपकी सतर्कता की प्रवृति से जीवन में दुर्घटनाएं नहीं होगी तथापि आपको तीव्र गति का वाहन आदि नहीं चलाना चाहिए। आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा सुख पूर्वक अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगे ।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप एक धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा पारिवारिक नियमों का पालन करते रहेंगे। जीवन में आप भौतिक सुख की प्राप्ति के लिए यत्नशील रहेंगे। आपकी ईश्वर की सत्ता में पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा भाग्य बल से जीवन में धनऐश्वर्य अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। अवसरानुकूल तीर्थ स्थानों की यात्रा भी करेंगे तथा आप एक धर्मनिष्ठ पुरूष के रूप में जाने जाएगें।

विभिन्न धर्मो के ऊपर लिखे गए ग्रंथों का आप रूचिपूर्वक अध्ययन करेंगे। साथ ही ध्यान योग, तंत्र तथा अध्यात्म आदि के प्रति भी आपका विश्वास रहेगा तथा इनसे संबंधित विषयों का भी समय समय पर अध्ययन करके ज्ञानार्जन करते रहेंगे। यदि आप अपनी दृढ़ संकल्पता में वृद्धि कर सके तो इससे आपकी अर्न्तप्रज्ञा शक्ति में वृद्धि होगी तथा पूर्वाभास एवं भविष्य वाणी करने में समर्थ हो सकेंगे।

आपकी दैनिक पूजा जीवन में आपको ऐश्वर्य प्रदान करने में शक्ति प्रदान करेंगी परन्तु यदा कदा मानसिक असुन्तल के कारण आपको व्यवधानों का भी सामना करना पड़ेगा। साथ ही पूजा कार्य में भी समय समय पर व्यवधान आएंगे। व्यावसायिक रूप से की गई लम्बी यात्राओं से आपको लाभ यश तथा समाज में मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। इससे आप में स्थायित्व आएगा तथा धन वैभव की भी वृद्धि होगी। आप एक प्रसिद्ध बुद्धिमान एवं विद्वान पुरूष होंगे तथा अपनी योजनाएं बिना किसी की सलाह लिए सम्पन्न करेंगे। साथ ही अपने प्रथम पौत्र से अत्यधिक सुख एवं आनंद प्राप्त करेंगे तथा जीवन में अन्य शुभ कार्य भी आप करते रहेंगे एवं सुख ऐश्वर्य से युक्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप धर्मात्मा सौभाग्यशाली अतिथि सत्कार करने वाले तथा दीनों पर कृपा करने वाले व्यक्ति होंगे तथा परोपकार संबधी कार्यो को पूर्ण करने में सफल रहेंगे।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। साथ ही राहु भी दशम भाव में ही स्थित है। कर्क राशि जलतत्व एवं राहु वायुतत्व युक्त ग्रह है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा श्रमसाध्य के भाव की इसमें न्यूनता रहेगी। कार्यक्षेत्र में आप सतत उन्नति की ओर अग्रसर होंगे तथा समय समय पर इसमें परिवर्तन भी करते रहेंगे। साथ ही ऐसे परिवर्तनों से आपको लाभ ही होगा तथा मानसिक सन्तुष्टि की भी प्राप्ति होगी।

कर्क राशि में दशम भावस्थ राहु के प्रभाव से आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र पेट्रोलियम एवं खनिज तथा खान विभाग, वायुसेना, एयर लाइंस, भारी उद्योग या फैक्टरी कर्मचारी, संदेश वाहक, जहाजरानी कला या संगीत उत्तम एवं अनुकूल सिद्ध होंगे साथ ही राजनीति के क्षेत्र में भी आपको वांछित सफलता की प्राप्ति हो सकती है अतः यदि आप उपरोक्त क्षेत्रों में अपनी आजीविका का आरंभ करेंगे तो इससे आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा उन्नति में अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए लोहे का व्यापार, एयर ट्रेवल एजेंसी, फैक्टरी, उद्य ोग, कलात्मक वस्तुएं, लोहे के उपकरणों का उत्पादन, पेट्रोल पम्प, शराब का व्यापार, खेती एवं बागवानी तथा राजनीति का क्षेत्र शुभ एवं अनुकूल रहेगा साथ ही द्रव्यों का व्यापार जलोत्पन्न वस्तुओं का व्यापार तथा कपड़े आदि के कार्यो से भी आपको वांछित लाभ एवं धन अर्जित होगा तथा सतत उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। अतः यदि आप व्यापार के इच्छुक हो तो उपरोक्त वस्तुओं एवं क्षेत्रों में ही व्यापारिक कार्यो का प्रारंभ करें।

राहु की दशमभाव में स्थिति के प्रभाव से जीवन में आपको वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्च एवं सम्मानित पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगे। समाज में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। साथ ही आपका यश भी दूर दूर तक व्याप्त होगा। आप किसी सामाजिक या सांस्कृतिक संस्था अथवा क्लब आदि के भी सम्मानित सदस्य या पदाधिकारी हो सकते है जिससे आपके सामाजिक सम्मान में वृद्धि होगी परन्तु राहु के प्रभाव से आपको इसमें किंचित विलम्ब एवं व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा। अतः इससे आपको हतोत्साहित नहीं होना चाहिए एवं परिश्रमपूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करना चाहिए।

आपके पिता तेजस्वी पराक्रमी एवं बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। समाज में वे एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग उनके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह का भाव होगा तथा आपकी उच्च शिक्षा के प्रति पूर्ण तत्पर होंगे। आपके कार्यक्षेत्र में उन्नति तथा सफलता में उनका विशेष योगदान होगा तथा उन्हीं के प्रभाव से आप के सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। साथ ही आप भी अपने उत्तम कार्य कलापों से पिता की प्रतिष्ठा में वृद्धि करने में समर्थ होंगे। लेकिन आप दोनों के

मध्य वैचारिक तथा सैद्धान्तिक मतभेदों की प्रबलता रहेगी जिससे संबंधों में कटुता का भाव होगा साथ ही शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यो में एक दूसरे के सहयोग को कम ही लेंगे अतः आपसी मधुरता के लिए आपको ऐसी परिस्थितियों की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। इसके प्रभाव से आप भाग्यशाली व्यक्ति होंगे और आर्थिक दृष्टि से आपका धनार्जन उत्तम रहेगा। आप एक परम महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा मन में कई इच्छाएं एवं उमंगे विद्य मान रहेगी। साथ ही सौभाग्य के बल पर इनको पूर्ण करने में भी समर्थ रहेंगे। आप सरकार, औषधिविज्ञान तथा पिता के द्वारा जीवन में विशेष रूप से लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे तथा इन्ही के द्वारा आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी। इस प्रकार लाभ की दृष्टि से हमेशा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। साथ ही बड़े भाइयों से आपको जीवन में पूर्ण लाभ सुख सहयोग एवं स्नेह की प्राप्ति होगी तथा वे हमेशा आपको अपना सहयोग प्रदान करने में तत्पर रहेंगे।

मित्रों के प्रति आपके मन में पूर्ण विश्वास रहेगा तथा उनके मध्य आपको मान सम्मान एवं आदर की प्राप्ति होगी। साथ ही वे सभी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे। आप एक सामाजिक प्राणी होंगे तथा समूह में मनोरंजन या अन्य कार्य करना आपके लिए आनन्द दायक रहेगा साथ ही सामाजिक जनों की सेवा तथा भलाई करने के कार्यो में भी तत्पर रहेंगे एवं जीवन में विशिष्ट मान सम्मान एवं ख्याति भी प्राप्त कर सकते है। आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथापि यदा कदा गर्मी या पित आदि से उत्पन्न दोषों से किंचित अस्वस्थता की अनुभूति कर सकते है। लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा तथा आप समस्त सासांरिक सुखों का उपभोग करते हुए अपने समय को व्यतीत करेंगे।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न एवं समृद्ध रहेंगे। साथ ही जीवन में प्रचुर मात्रा में अनेक साधनों से धन अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। लेकिन आपका रहन सहन, खान पान उच्च स्तर का रहेगा फलतः बचत अल्प मात्रा में ही होगी तथा व्ययाधिक्य रहेगा। आप भौतिक सुख संसाधनों एवं उपकरणों पर व्यय करेंगे साथ ही वस्त्रादि भी सुदंर एवं कीमती होंगे तथा कीमती वस्त्र पहनकर समाज में अपनी धन सम्पन्नता को प्रदर्शित करेंगे।

आपका पारिवारिक जीवन सुख एवं शान्तिमय रहेगा तथा आवास स्थल भी सुदंर एवं सुसज्जित रहेगा एवं इसकी साज सज्जा पर आप काफी व्यय करेंगे। वास्तव में आप कलात्मक रूप से रहना पसन्द करते है तथा इसके लिए अत्यधिक धन की आवश्यकता रहती है। सुदंर एवं विलासमय वस्तुओं के प्रति आपकी तीव्र रूचि रहेगी तथा इनको प्राप्त करने के लिए आप कितना भी व्यय क्यों न हो करने में तत्पर रहेंगे। साथ ही परिवार एवं मित्रों के साथ महंगे होटलों में खाना या नाश्ता करना भी आपका शौक रहेगा। आपकी सफलता को देखकर आपके शत्रु आपके लिए रूकावटें उत्पन्न करेंगे। अतः कभी कभी मानसिक रूप से तनावग्रस्त भी रहेंगे।

यात्रा करने के लिए आप रूचिशील रहेंगे। साथ ही आप की देश के साथ साथ विदेश संबंधी यात्राएं भी होंगी इनसे आपको उचित लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा यद्यपि इनमें व्यय भी अधिक होगा परन्तु कुछ समय के उपरांत लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे। आप भ्रमण या कार्यवश दोनों प्रकार की यात्राएं सम्पन्न करेंगे। इसके साथ ही विदेश में भी आप काफी समय तक प्रवास कर सकते है।

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि पंचम भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु छठे भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि छठे भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरुअष्टम भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि नवम भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी हो कर 18 अक्टूबर को कर्क राशि दशम भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि नवम भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा, परन्तु मई के बाद बहुत अच्छा हो रहा है। वर्षारम्भ में आप परिश्रम के बल पर कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। अष्टम स्थान के गुरुआपके व्यवसाय में उतार-चढ़ाव के योग बना रहे हैं। कार्य क्षेत्र में कुछ गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। अतः इस समय के अंतराल आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ न करें पुराने चले आ रहे व्यवसाय को ही और सुव्यवस्थित ढंग से चलाएं।

14 मई के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय आप कोई भी कार्य प्रारम्भ करेंगे तो उसमें भाग्य आपका साथ देगा। छठे स्थान के शनि आपके शत्रुओं का दमन करते हुए आपके ब्राण्ड नेम को ऊपर ले जा सकते हैं, जिससे आपके व्यापार में अच्छा लाभ प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को उनके कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरुएवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप आर्थिक बचत करने में सफल रहेंगे। रत्न आभूषण इत्यादि का लाभ भी प्राप्त होगा। अचल संपत्तित के साथ-साथ वाहनादि का भी सुख प्राप्त होगा।

मई के बाद नवम स्थान का गुरुआपकी आर्थिक उन्नति के लिए और भी अच्छा रहेगा। उस समय आपके धनागम में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत कर सकते हैं। मांगलिक कार्यों या सामाजिक कार्यों एवं बच्चे की उच्च शिक्षा पर आप का धन खर्च होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। चतुर्थ एवं द्वितीय स्थान पर गुरुकी दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। घरेलू वातावरण अच्छा रहेगा परन्तु सप्तमस्थ शनि की दृष्टि आपकी पत्नी का स्वास्थ्य खराब कर सकती है या किसी कार्यवश आप पत्नी से दूर रह सकते हैं।

14 मई के बाद तृतीय स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी समाजिक प्रतिष्ठा मे बढ़ोत्तरी होगी। सामाजिक गतिबिधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे जिससे समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। आपको छोटे भाई बहनों का सहयोग प्राप्त होगा ।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। पंचमस्थ शनि स्वगृही होने के कारण आपके बच्चों की उन्नति करेगें। गुरुग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय उच्च शिक्षा प्राप्ति के शुभ योग हैं।

मई के बाद पंचम स्थान का राहु आपकी संतान का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। यह समय गर्भाधान के लिए अशुभ है साथ ही गर्भवती महिलाओं को विशेष सावधानी की आवश्यकता है।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के कारण आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। मौसम जनित बीमारियों से थोड़ी परेशानी हो सकती है। यदि पहले से कोई बीमारी है तो परहेज की आवश्यकता है।

14 मई के बाद लग्न स्थान पर गुरुके दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी। उस समय नैसर्गिक रूप से आपके स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। धार्मिक कृत्यों में अधिक रूचि बढ़ेगी तथा आप मानसिक रूप से संतुष्ट एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सफलता प्रदायक रहेगा। वर्षारम्भ में छठे स्थान में राहु के प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए समय बहुत अनुकूल है।

जो व्यक्ति इलेक्ट्रोनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं उनके लिए समय शुभ है। इस वर्ष आप अपने सारे शत्रुओ को छोड़कर आगे निकलेंगे। बेरोजगार जातकों को रोजगार मिल जायेगा। मई के बाद समय और अनुकूल हो जाएगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा करेंगे।

14 मई के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगे। नवमस्थ गुरुके प्रभाव से धार्मिक यात्राएं भी हो सकती हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यो के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। मानसिक द्वन्दता के कारण पूजा पाठ में एकाग्रता नहीं रहेगी, परन्तु 14 मई के बाद आपका मन धार्मिक कार्यो में आकृष्ट होगा।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरुव मंदिर के पुजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तुओं का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।

इस वर्ष मीन राशि के शनि छठे भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु पंचम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमेंचतुर्थ भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरुनवम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमेंदशम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि एवं एकादशभाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत बढ़ीया रहेगा। आप अपने भाग्य के द्वारा व्यवसाय में उन्नति करेंगे।गुरु एवं शनि ग्रह का अनुकूल स्थान में होने से आपका चौमुखी विकास होगा। आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। उच्च अधिकारियों या वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। जिससे आपके कार्य क्षेत्र में सफलता का प्रतिशत और बढ़ सकता है।

02 मई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ-साथ इच्छित स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है। भूमि से सम्बन्धित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष शुभ फलदायक रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता होने के कारण इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आप भौतिक सुख सुबिधा पर भी खर्च करेंगे। बच्चों की स्वास्थ्य संबंधित परेशानी पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

02 जून के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन के साथ साथ रत्न आभुषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों केमांगलिक कार्यों में भी धन का व्यय होगा। 31 अक्टूबर के बाद धनागम में वृद्धि होगी। जिससे आप आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने मे सफल रहेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। व्यापारिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगेपरन्तु आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से सामाजिक उत्थान के लिए आपका पूर्ण प्रयास रहेगा।

02 जून के बाद पारिवारिक रूप से समय और भी अनुकूल हो रहा है। आपके परिवार में परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक प्रेम में वृद्धि होगी। परिवार के सभी सदस्यों का सहयोग प्राप्त होगा और आपसी आकर्षण भी बढ़ेगा। पिताजी के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा। मालुत पक्ष के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपके बच्चे को सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। दूसरी संतान के लिए समय अच्छा है। उसकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे।

02 जून के बाद समय अधिक प्रभावित हो रहा है। उस समय पंचमस्थ राहु संतान संबंधित परेशानि उत्पन्न कर सकता है। गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है। इस समय के अंतराल मेंबच्चेके स्वास्थ्य से संबंधित कोई भी लापरवाही नहीं करनी चाहिए। 31 अक्टूबर के बाद आपके बच्चों का उन्नति होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। नवमस्थ गुरु की पंचम दृष्टि लग्न पर होगी उसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत है। मानसिक शांति, प्रसन्नताएवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध मेंस्वास्थ्य के प्रति ध्यान देना आवश्यक होगा। खाने-पीने की वस्तुओं में परहेज रखें। कभी कभी स्वस्थ रहते हुए भी कमजोरी जैसा अनुभव होता रहेगा। रात को जल्दी सोना और सुबह जल्दी उठकरघूमना आपके शरीर के लिए लाभदायक रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करने वाले जातकों को सफलता प्राप्त होगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको नौकरी मिल सकती है। तकनीकि शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा के लिए भी यह समय श्रेष्ठतम रहेगा।

02 जून के बाद विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान का राहु उनकी शिक्षा में अवरोध उत्पन्न कर सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। ये यात्राएं आपके लिए अनुकूल या उन्नतिकारक भी सिद्ध हो सकती हैं। इन यात्राओं के दौरान आपकीकिसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। 02 जूनके बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मानोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्म स्थल की यात्रा हो सकती हैअथवा अपने पूरे परिवार सहित दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त कर सकते है। द्वादश स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आप कोई विशेष अनुष्ठान संपन्न करेंगे। आप योग, ध्यान, एवं अपने गुरु के द्वारा दिये गये मन्त्रो का पाठ करेंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप दान पुण्य व गरीबों की सहायता अधिक करेंगे।

- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- गणेशजी के मन्त्र का पाठ करें एवं नित्य प्राणायाम करें।
- एकनारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि छठे भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं छठे भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष चतुर्थ भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत अच्छा रहेगा। आप अपने कार्य व्यवसाय में सफलता प्राप्त करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आप कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं या किसी अनुभवी व्यक्ति से मिल कर अपने व्यापार में उन्नति के लिए कोई नई योजना भी बना सकते हैं। चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अपने घर से दूर स्थानान्तरण हो सकता है। प्रोपर्टी से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को अधिक लाभ प्राप्त नहीं होगा।

जून के बाद सप्तम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके कार्य व्यवसाय में उत्तम वृद्धि होगी। उच्च अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। सफलता के पीछे आपकी पत्नी का पूर्ण सहयोग होगा। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर करे हैं, तो उसमें इच्छित लाभ प्राप्त होगा और अपने साझेदार से संतुष्ट रहेगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष उत्तम रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। षष्टस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके शत्रु पक्ष से आपको धन लाभ होगा। धन निवेश के लिए भी अच्छा समय चल रहा है।

जून के बाद एकादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका रुको हुआधन मिल सकता है व धनागम में वृद्धि होगी। इस समय कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। धन संचित करने में आपकी पत्नी का अहम सहयोग होगा। भाई-बहन या पुत्र के विवाह के अवसर पर भी धन खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य रहेगा। चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से आपके परिवार में विषमता की स्थिति बनी रहेगी। परिवार में एक दूसरे के प्रति वैचारिक मतभेद हो सकता है। परन्तु आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार पारिवारिक वातार्वरण अनुकूल करने की कोशिश करेंगें और आप सफल भी होंगे। आपकी माता का स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता हैं।

दशमस्थ गुरु के कारण आपको पिता का अच्छा सहयोग मिलेगा।

26 जून के बाद आपको प्रेम प्रसंगो में सफलता मिलेगा। यदि आप अविवाहित हैं तो आपका विवाह हो जाएगा। विवाहित व्यक्तियों का धर्मपत्नी के साथ समन्वय मधुर होगा। तृतीय स्थान में गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आप सामाजिक कल्याण के लिए कुछ विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वे अपनी बौद्धिक शक्ति एवं कर्म के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

26 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रगति होने के शुभ योग बने हैं। यदि आपकी सन्तान विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। यदि आप दूसरे बच्चे की इच्छा रखते हैं तो गर्भाधान के लिए उत्तम समय है। 26 नमम्बर के बाद समय कुछ प्रभावित हो सकता है। इस समयान्तराल में सन्तान पर अधिक ध्यान दें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। शारीरिक रूप से स्वस्थ एवं मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगा। मौसम जनित बीमारियों से यदि आप परेशान होते हैं तो जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे। आप अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध एवं शाकाहारी भोजन ही करें।

जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर और भी शुभ हो रहा है, लेकिन साथ ही लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से मानसिक परेशानी या शारीरिक आलस्यता बढ़ सकती है, जिसके फलस्वरूप आप बीमार हो सकते हैं। सुबह-सुबह व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 26 नवम्बर के बाद आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए छठे स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। इस समय के अंतराल में नौकरी भी मिल सकती है।

26 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ेगी। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियो के लिए समय अच्छा है।

यात्रा-तबादला

चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से अपने जन्म स्थल से दुर की यात्रा हो सकती है। स्थान परिवर्तन के योग भी बन रहे है। द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी हो सकती है।

जून के बाद छोटी यात्राओं के साथ साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। वर्षान्त में जलीय स्थल या समुद्र के माध्यम से विदेश यात्रा भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे। चतुर्थ राहु के प्रभाव से आपके नित्य नैमित्य पूजा प्रभावित हो सकती है। 26 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर ईश्वर के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा, जिसके फलस्वरूप आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा व सत्कर्म करेंगे। 26 नवम्बर के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- घर में श्रीयन्त्र स्थापित करें और नित्य उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।
- प्रत्येक दिन प्राणायाम करें।
- अपने माता-पिता की सेवा करें।

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि छठे भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु द्वादश भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। पारिवारिक परेशानी के कारण आपका कार्य व्यवसाय प्रभावित हो सकता है। परन्तु छठे स्थान का शनि आपको सफलता के लक्ष्य तक अवश्य पहुंचाएगा। फरवरी के बाद बड़े अधिकारियों या अनुभवी लोगों का सहयोग मिलेगा। जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने व्यापार में उन्नति करेंगे। यदि आप किसी के साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं तो सफलता मिलेगी। चतुर्थ स्थान का राहु नौकरी करने वाले जातकों का स्थान परिवर्तन करा सकता है।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल हो रहा है। आपको धोखा या व्यापार में हानि हो सकती है। गुप्त शत्रु व विरोधिओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश की जा सकती है। अतः आपको सकारात्मक सोच में वृद्धि कर अपना आत्मविश्वास बनाए रखना होगा। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आप अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। कुछ अनावश्यक खर्चे बढ़ सकते हैं। पारिवारिक खर्च अधिक होने के कारण इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे। 28 फरवरी से एकादश स्थान में गुरु के गोचरीय प्रभाव के चलते आपके आय के स्रोत बढ़ेंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरु हो जाएगा। पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। फंसा हुआ या रुका हुआ धन वापस मिल सकता है।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रभावित हो रहा है। उस समय कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अतः किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करे। लेन-देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल नहीं है। चतुर्थ स्थान के राहु आपके परिवार में विषम परिस्थिति उत्पन्न कर देंगे, जिससे परिवारिक अनुकूलता भंग हो

सकती है। साथ ही परिवार में किसी बड़े व्यक्ति के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। अतः अच्छा यही होगा की आप अपनी सहनशक्ति को बढ़ाएं, नही तो उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपका अच्छा संबंध बना रहेगा। फरवरी से आपको भाईयों सहयोग मिलेगा।

24 मई से घरेलू वातावरण अच्छा होना शुरु हो जाएगा। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावारण बना हरेगा। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से सामाजिक पद व प्रतिष्ठि में वृद्धि होगी। समाज में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। जन कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे। सप्तमस्थ शनि आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं। अतः उनको स्वास्थ्य से संबंधित किसी प्रकार की लापवाही नहीं बरतनी चाहिए।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। द्वादश स्थान के गुरु बच्चे के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं जिससे उसकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। 28 फरवरी से गुरु ग्रह का गोचर एकादश स्थान में हो रहा है जिसके बाद अचानक आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार होना शुरु हो जाएगा।

आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल से आगे बढ़ेंगे। परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। 24 जुलाई से समय फिर से प्रभावित हो रहा है जिसके फलस्वरूप आपके बच्चों की उन्नति रुक सकती है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। द्वादशस्थ गुरु के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे परन्तु 28 फरवरी के बाद एकादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे।

24 जुलाई के बाद बीमारी, दुर्घटना या किसी प्रकार के शरीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीवर से सम्बन्धित बीमारियां हो सकती हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा। सुबह सुबह व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा नहीं तो आपका स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए श्रेष्ठतम रहेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से आप सारे शत्रुओं को पछाड़कर अपने करियर में आगे बढ़ेंगे। फरवरी के बाद से विद्यार्थियों के लिए समय बहुत उत्तम है। तकनीकी शिक्षा अथवा व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे।

24 जुलाई के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आपकी शिक्षा में रुकावटें आ

सकती हैं। आलस्य की भावना आपकी उच्च शिक्षा में व्यवधान डाल सकती है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को उस समय सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता होगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी परन्तु 23 फरवरी के बाद लम्बी यात्राएं भी खूब होंगी।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अपने घर से दूर स्थानान्तरण हो सकता है। यह स्थानान्तरण आपके प्रतिकूल स्थान पर होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप दान पुण्य अधिक करेंगे। भण्डारा, गरीबों को दान और दूसरे की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। फरवरी के बाद एकादशस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्शित रहेगा। परमात्मा की भक्ति एवं मन्त्र पाठ में रूचि लेंगे। सप्तमस्थ शनि ग्रह के प्रभाव से आप अपनी धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे। जैसे- माता का जागरण, चौकी, अखण्ड रामायण पाठ इत्यादि।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- गणेशजी के मन्त्र का पाठ करें। बुधवार के दिन गणेशजी को दूर्वा चढ़ाएं।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु तृतीय भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु लग्न स्थान में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा। सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपको व्यापार में अच्छा लाभ मिलेगा। वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। 29 मार्च से कार्य व्यवसाय में कुछ व्यवधान आ सकता है। गुप्त शत्रुओं द्वारा कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। अतः इस समय के अंतराल में आपको कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए। पहले से चले आ रहे व्यापार को और अच्छे ढंग से चलाना चाहिए।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से बहुत अच्छा हो रहा है। आपको व्यापार व कार्य क्षेत्र में सफलता मिलना शुरु हो जाएगा। भाग्य अनुकूल होने के कारण उन्नति के श्रेष्ठ योग बन रहे हैं। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहें हैं तो इच्छित लाभ की प्राप्ति होगी। आपके मित्र आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। सट्टा, शेयर बजार से जुड़े व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर ही मान-सम्मान मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नती के लिए अच्छा रहेगा। आय में अनुकूलता बनी रहेगी परन्तु 29 मार्च के आय के मार्ग प्रभावित होंगे जिससे आपके आर्थिक क्षेत्र में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है इसलिए आपको आर्थिक मामलों में विशेष सावधानी से काम लेना चाहिए। कुछ खर्चे अचानक आपकी आर्थिक स्थिति को बिगाड़ सकते हैं। अतः अभी से अतिरिक्त धन का संचय कर सकते हैं।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से अच्छा हो रहा है। आप के रुके हुए पैसे मिल सकते हैं जिससे आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होना शुरु हो जाएगा। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से लाभ होगा। अपने व्यापर को और आगे बढ़ाने में भी धन व्यय करेंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। छोटे भाईयों का

अच्छा सहयोग मिलेगा परन्तु 29 मार्च के बाद गुरु का गोचर प्रतिकूल होने से पारिवारिक अनुकूलता भी भंग हो सकती है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति वेमनस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है। परिवार में कुछ लोगों का वर्ताव अच्छा नहीं रहेगा। ऐसे में आपको अपने विवेक से काम लेने होगा। 25 अगस्त के बाद ससुराल पक्ष के लोगों के साथ संबंध खराब हो सकते हैं।

05 अगस्त के बाद समय फिर से अच्छा हो रहा है। आपके परिवार में पुत्रादि का विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा। उसमें आपकी अहम भूमिका होगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से सामाजिक पद-प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष श्रेष्ठ रहेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा रहेगा। पंचम भाव पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति के अच्छे योग बन रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा।

आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय बहुत अच्छा है। उसका विवाह भी हो सकता है। 29 मार्च से 25 अगस्त तक का समय प्रभावित रहेगा। उसके बाद का समय अच्छा रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। लग्नस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि आपकी सेहत के लिए उत्तम है। यदि आप बीमार भी होते हैं तो आपकी सेहत शीघ्र ही अच्छी हो जाएगी। आपकी आरोग्यता व कार्यक्षमता में वृद्धि होगी। 29 मार्च के बाद अचानक आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। कफ, मधुमेह एवं पेट संबंधित बीमारियों के कारण आप परेशान हो सकते हैं। मौसमजनित बीमारियों से भी बचें।

25 अगस्त के बाद स्वास्थ्य में सुधार आना शुरु हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप का खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। सकारात्मक ऊर्जा का संचार होगा जिससे रोगप्रतिरोधक शक्ति और अतिरिक्त मानसिक ऊर्जा प्राप्त होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। व्यवसायिक व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सफलता मिलेगी। 29 मार्च के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। उस समय प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा।

25 अगस्त के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आप पढ़ाई-लिखाई में आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो जाएगा।

यात्रा-तबादला

तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से वर्षारम्भ से ही छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। ज्यादातर यात्राएं अचानक होंगी। 29 मार्च के बाद द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं।

25 अगस्त के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। यात्रा के दौरान या वाहन चलाते समय सावधानी बहुत बरतें, क्योकि अष्टम स्थान का शनि यात्रा के लिए शुभ नहीं होता।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारंभ में लग्न, पंचम व नवम इन तीनों त्रिकोण भावों पर गुरु के गोचरीय प्रभाव के चलते आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन तथा गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेने के अतिरिक्त पूजा-पाठ, मंत्र जाप तथा यज्ञ आदि कर्म अधिक करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन लोहे का तवा गरीब व्यक्ति को दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु तृतीय भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

व्यावसाय से जोड़ कर देखा जाए तो वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही हितकारी होगा। आपको प्रतीत होगा कि आपके कुछ सपने अभी भी अधूरे हैं और इसलिए इस साल आप उन सपनों को पूरा करने के लिए अधिक मेहनत करेंगे और अपने सपनों को साकार करेंगे। मुख्यतः ग्रहों के गोचर अनुकूल होने के कारण किसी भी समस्या का समाधान करना आपके लिए आसान होगा जिसके चलते आप अपने अधिकारियों की नजरों में आएंगे।

17 अप्रैल के बाद अष्टम स्थान के शनि व्यावसायिक जीवन में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना रहे हैं। इस अवधि में आपका अपने प्रति विश्वास ही आपको लगातार विजय दिलाएगा। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचान में कुछ कठिनाईयों का अनुभव करेंगे। आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक क्षमता के अनुसार अपना कार्य करते रहें।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए सिर्फ लाभ को दर्शाता है। अपने लक्ष्य के प्रति आपका उत्साह उजागर हो जाएगा। निवेश करने के लिए भी यह एकदम उपयुक्त समय होगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में भी वृद्धि होगी।

अप्रैल के बाद राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आर्थिक समृद्धि में कमी आएगी। द्वितीय स्थान का राहु अचानक कुछ ऐसे खर्चे ला देगा जिसके चलते आपको आर्थिक तंगी आ सकती है। अतः इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े लोगों की सलाह अवश्य लें, नही तो पैसा फंस सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ से ही आपके परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

राहु ग्रह का गोचर पारिवारिक वातावरण के लिए शुभ नहीं है। परिवार के कुछ

लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहेगा। उस समय आपको अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखना होगा। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध अच्छे नहीं रहेंग। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप सामाजिक गतिविधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए श्रेष्ठ रहेगा। वर्ष का प्रथम माह बच्चों के लिए अच्छा रहेगा। 04 फरवरी से राहु एवं गुरु की युति संतान के लिए अच्छा नहीं है। इस समय के अंतराल में संतान संबंधित चिंताएं बढ़ सकती हैं। अतः उनके स्वास्थ्य एवं पढ़ाई-लिखाई पर आपको विशेष ध्यान देना चाहिए।

1 मई से गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने से आपके बच्चों की उन्नति होगी। आप अपने बच्चों से जितनी अपेक्षा रखते हैं वे उससे भी अच्छा करेंग। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए यह उत्तम समय चल रहा है। आपके बच्चों के साथ मधुर संबंधों में वृद्धि होगी जिससे आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा।

स्वास्थ्य

लग्न स्थान पर शनि की दृष्टि स्वास्थ्य के लिए अच्छी नहीं होती अतः आपको अपने स्वास्थ्य के प्रति थोड़ा सतर्क रहने की आवश्यकता है ताकि आप अपने जीवन का भरपूर लाभ उठा सकें। फिर चाहे व्यावसायिक जीवन हो या व्यक्तिगत जीवन, यदि आप स्वस्थ नहीं होंगे तो इसका बुरा असर आपके जीवन पर पड़ेगा।

राहु ग्रह का गोचर आपके स्वास्थ्य के लिए और प्रतिकूल हो रहा है। अतः आप खुद को बीमार होने से बचाएं। इस दौरान आप तनाव से भी ग्रसित हो सकते हैं। स्वस्थ रहने के लिए आप योग, ध्यान या सुबह-सुबह व्यायाम नियमित रूप से करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रथम माह विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करने की आवश्यकता है। व्यावसायिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

17 अप्रैल के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। इस समय आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना होगा। अपने मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित कर तैयारी करते रहना चाहिए क्योंकि आपकी मेहनत ही आपको लक्ष्य तक पहुंचाएगी।

यात्रा-तबादला

तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से आपके छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी परन्तु 01 मई से नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। इस समय आपकी व्यवसाय से संबंधित यात्रा हो सकती है।

यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी बहुत जरूरी है, क्योकि शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से वाहन दुर्घटना या यात्रा के अंतराल चोरी होने के प्रबल संकेत है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा परन्तु 1 मई से नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रूचि बढ़ेगी।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें। शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाए।
- दुर्गा जी की उपासना करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु द्वितीय भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यावसायिक जीवन में व्यवधान आएगा। इस समय के अंतराल में किसी पर विश्वास करना या कोई नया कार्य प्रारम्भ करना आपके हित में नहीं रहेगा। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय कुछ अच्छा होगा। नए रोजगार, पदोन्नति या किसी व्यवसाय में साझेदार के साथ एक सफल योजना बना सकते हैं।

9 अगस्त के बाद कार्यस्थल पर वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। यदि आप साझेदारी में काम कर रहे हैं तो आप अपने साझेदार से असंतुष्ट रहेंगे। गुप्त या प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। ऐसे में आपको बिना किसी पर विश्वास किये अपने आत्मविश्वास के साथ काम करते रहना चाहिए।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बढ़िया नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान में ग्रह गोचर धन संचय में कमी करेगा। अचानक कुछ ऐसे खर्चे आ जाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। इस समय आपको बड़े निवेश या खरीदारी से बचना होगा।

अगस्त के बाद आपको लाभ होगा। व्यावसायियों को अपने व्यवसाय का विस्तार करने के लिए लुभावने अवसर मिलेंगे। 15 अक्टूबर के बाद रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तु की प्राप्ति हो सकती है। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल जाएगी। यदि आप धन निवेश करना चाह रहे हैं तो यह समय आपके लिए अनुकूल है।

घर-परिवार, समाज

द्वितीय स्थान में गुरु एवं राहु की युति के प्रभाव से आपका पारिवारिक वातावरण अनुकूल रहेगा। गुरु ग्रह का गोचर आपके भाईयों के लिए बहुत शुभ रहेगा। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिबिधियो में आप बढ-चढ कर भाग लेंगे। समाज उत्थान या सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य भी संपन्न करेंगे।

9 अगस्त के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी जिससे आपके

परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। इस वर्ष आपके परिवार में मांगलिक कार्य भी अधिक होंगे।

संतान

वर्षारम्भ से 18 फरवरी तक का समय संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। 9 अगस्त से आपके बच्चों की उन्नति होगी और उनके साथ संबंधो में मधुरता आएगी। आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा।

आपकी दूसरे संतान के लिए यह समय श्रेष्ठतम है। यदि आपका दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है। तो उसका विवाह हो सकता है।

स्वास्थ्य

वर्ष का पूर्वार्द्ध स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं रहेगा। लग्नस्थ मंगल के प्रभाव से कुछ न कुछ परेशानी बनी रहेगी। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे। यदि पहले से किसी लम्बी बीमारी से परेशान हैं तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय कुछ अच्छा होगा। आप मानसिक रूप से संतुष्ट व शारीरिक रूप से रोग मुक्त रहेंगे।

9 अगस्त से राहु का गोचर लग्न स्थान में होने के कारण अचानक आप फिर से बीमार हो सकते हैं। ऐसे में अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। कुछ समय ऐसा भी आएगा जब आप खुद को थका हुआ महसूस करेंगे किन्तु कोई बड़ी स्वास्थ्य संबंधित समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आप तनाव व चिंतामुक्त रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्षारम्भ में आपको गुप्त शत्रुओं का सामना करना पड़ सकता है। 18 फरवरी के बाद भाग्य का सहयोग पूर्ण रूप से मिलने के फलस्वरूप प्रतियोगियों को परास्त कर आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों को नये-नये तकनीकी विषय की ओर रूझान होगा। मैनेजमेंट, प्रशासनिक सेवा, शिक्षण से जुड़े लोगों को रिसर्च व ट्रेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है।

9 अगस्त के बाद लग्नस्थ राहु के प्रभाव से आप अचानक आलसी हो जाएंगे और यही आलस्य आपकी सफलता में रुकावट उत्पन्न करेगा। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो 15 अक्टूबर के बाद नौकरी मिलेगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ यात्रा की दृष्टि से अनुकूल है। 18 फरवरी के बाद गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी-मोटभ यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी।

नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप धार्मिक तीर्थ यात्रा भी करेंगे। 14

जून के बाद विदेश यात्रा भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में घरेलू परेशानी के कारण धार्मिक कार्य कम ही करेंगे। राहु एवं गुरु ग्रह की युति आपके दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित कर सकती है। अष्टमस्थ शनि के कारण तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र इत्यादि के प्रति आपका आकर्षण बड़ेगा। गुप्त विद्या या तान्त्रिक क्रियाओं की सिद्धि के लिए आप साधना भी कर सकते हैं।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को लड्डू का भोग लगाकर गरीब लोगों को बांट दें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गा जी की उपासना करें या राहु मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं अष्टम भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु लग्न स्थान में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं तृतीय भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिएयह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। अष्टमस्थ शनि के कारणव्यावसायिक जीवन में थोडे बहुत झटके आएंगे।आपके कार्यों में गुप्त शत्रु या विरोधियों द्वारा रूकावटें डाली जा सकती हैं। बिना किसी पर विश्वास किये आपको अपना कार्य करते रहना चाहिए और इस अंतराल में जल्दबाजी में कोई महत्वपूर्ण निर्णय नहीं लेना चाहिए नहीं तो उसका परिणाम प्रतिकूल होगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।जो व्यक्ति नए रोजगार की तलाश में है उन्हें शनि के गोचर के बाद सफलता अवश्य मिलेगी। उस समय आप अपने सपनों को साकार करने के लिए अपने लक्ष्यों की ओर बेझिझक, पूर्ण विश्वास के साथ बढ़ेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह वर्ष अनुकूल नहीं रहेगा। वर्ष से प्रारम्भ में ही कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अष्टमस्थ शनि के कारण धोखा या धन हानि का योग बना हुआ है। अतः शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीको पर अंकुश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है।

पारिवारिक सदस्य की बीमारी दूर करने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। किसी को उधार पैसा न दें नही तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।शनि ग्रह के गोचर के बाद समय अच्छा हो रहा है। फिर भी आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस विषय में सोच विचार करना बहुत जरूरी है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष के प्रारम्भ में पारिवारिक वातावरण में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी जिससे परिजनों के बीच सामंजस्य बिठाने में कठिनाई पैदा होगी। परिवार के कुछ लोगों का बर्ताव ठीक नहीं रहेगा। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय अनुकूल नहीं है।

गुरु ग्रह का गोचर पारिवारिक वातावरण के लिए बहुत अच्छा रहेगा। परिवार में एक दूसरे के साथ भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। माता के लिए समय काफी शुभ है।

23 अक्तूबर से आपका समाजिक स्तर बढ़ेगा।

संतान

पंचम स्थान पर राहु एवंशनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से बच्चों कोस्वास्थ्य संबंधित परेशानी होगी जिससे उनकीशिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित होगी। मई के बाद समय अच्छा हो रहा है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपकी दूसरे संतान के लिएसमय अच्छा हो रहा है। आपके दूसरे बच्चों के साथ प्रेम समन्वय में बृद्धि होगी। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय श्रेष्ठ है। यदि आप अपने बच्चों के मनोबल को बढ़ाते रहें तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे।

स्वास्थ्य

पूरे वर्ष लग्न स्थान के राहु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव कि स्थिति बनाए रखेंगे। व्यापारिक व्यस्तता के कारण आप समय पर अपना खान-पान नहीं कर पाएंगे जिसके परिणामस्वरूप आपके स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाये रखें व लापरवाही ना करें। किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें।

सुबह जल्दी उठ कर व्यायाम करना लाभप्रद रहेगा। मई के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। उसके बाद आपकी स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दूर होना शुरु हो जाएगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। 5 मई के बाद माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिये समय बहुत शुभ है।

विदेशी भाषा सीखने के लिए 12 अगस्त के बाद समय काफी शुभ है यदि आप अपने शत्रुओं को परास्त करना चाहते हैं, तो नीतियों में बदलाव करना पड़ेगा।

यात्रा-तबादला

नवमस्थ गुरु के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आप लम्बी-लम्बी यात्राएं भी करेंगे। धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। 5 मार्च के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तर आपके अनुकूल स्थान पर भी हो सकती है।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे या अपने परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप तीर्थयात्रा और धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। कोई भी शुभ कार्य योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें अन्यथा पूजादि कार्यों में व्यवधान आने की आशा है।आप अपने कार्य व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे और कर्म ही पूजा है इस वाक्य को फलीभू करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें एवं प्राणायाम करें।
- बुधवार के दिन चींटियों को दाना डालें एवं भूखे व्यक्तियों को खाना खिलाएं।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें एवं शनि ग्रह का दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य-व्यवसाय के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। व्यापार में बदलाव या फिर नौकरी में पदोन्नति की भी संभावना बन रही है। 18 मार्च से अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा जिससे आपके कार्यों में लाभ की मात्रा और बढ़ जाएगी। किसी बड़ी कंपनी के साथ मिलना या उसके साथ कार्य करने का अवसर भी प्राप्त होगा। कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी। यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। राहु ग्रह का गोचर अच्छा नहीं होने कारण अचानक आपके कार्यों में कुछ परेशानियां आ सकती हैं लेकिन आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसका भी निदान निकाल लेंगे।

नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के अन्दर गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सफल होंगे। यदि आप नौकरी में है तो बड़े अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे। आपको पुरस्कुत भी किया जाएगा। कार्य स्थल पर आपका मान-संमान भी बढ़ेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। द्वादश स्थान का राहु आर्थिक स्थिति में उतार-चढाव करते रहेंगे। लगभग सभी वित्तीय मामलों में आपको निराशा ही हाथ लगेगी और हानि का सामना करना पड़ेगा। अतः जोखिम भरे कार्यों में निवेश न करें। शीघ्र पैसा बनाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाएं। 18 मार्च के बाद आय भाव पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। साथ ही फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा।

शिक्षा, शेयर व बैंक से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आपके सामने कई लाभकारी सौदे आएंगे। इसका भरपूर लाभ उठाने के लिए आप सतर्क रहें।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए उत्तम रहेगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से परिवार में सुख, शान्ति का वातावरण बनेगा। इन सबके पीछे आपका ही महत्वपूर्ण योगदान होगा। क्योंकि आप भी बहुत से ऐसे कामों को अंजाम देने वाले हैं जो पारिवारिक जीवन के लिए हितकर होंगे। आपके माता पिता के लिए समय काफी शुभ है।

मार्च के बाद चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में किंचित परेशानि आ सकती है। परन्तु आप नकारात्मक परिस्थितियों को भी सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर देंगे। पंचमस्थ राहु के प्रभाव से आपके प्रेम संबंधो में मधुरता बढ़ेगी। बच्चों के साथ भवनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। अपने परिजनों के साथ आप किसी धार्मिक स्थल की यात्रा करेंगे या घर परिवार में शुभ कृत्यों का आयोजन होगा।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। 18 मार्च से पंचम स्थान में गुरु ग्रह का गोचर संतान के लिए श्रेष्ठ है। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो सबसे अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी।

आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय अच्छा है। यदि वे किसी प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं तो अपने लक्ष्य में अवश्य सफल रहेंगे। उनके सारे विरोधी शान्त होंगे। इस वर्ष वे अच्छा उन्नति करेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में व्यावसायिक व्यस्तता के कारण आप अपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं देंगे। मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। द्वादश स्थान का राहु अचानक आपको बीमार कर सकता है। परन्तु 18 मार्च से लग्न स्थान पर शुभ ग्रह की दृष्टि आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का विकास करेगी। आप अपने दैनिक कार्यों में स्फुर्तिवान बने रहेंगे।

आप अपने प्रियजनों और परिजनों के साथ अधिक से अधिक समय बिताएंगे। शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए आप घर में कोई विशेष धार्मिक आयोजन करेंगे। जो आपकी मनोकामनाओं को पूरा करने में सहयोग करेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

इस वर्ष विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए 18 मार्च के बाद का समय बहुत अच्छा है। प्रतियोगिता परीक्षार्थी परीक्षा में सफल होंगे। जो व्यक्ति अपना व्यापार प्रारम्भ करना चाहते हैं। उनके लिए यह समय अनुकूल है।

आपके लिए रोजगार के नये अवसर भी पैदा होंगे। जिससे आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से वर्षारम्भ में आपकी विदेश यात्रा के योग बन रहे हैं। तृतीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि छोटी-मोटी यात्राएं कराती रहेगी। 18

मार्च के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आपकी लम्बी यात्राएं भी कराएगी।

आप अपने परिवार सहित किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे। यह यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक होगी। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आपके घर में धार्मिक व मांगलिक कार्यक्रम अधिक होंगे। 18 मार्च से पूजा-पाठ, यज्ञ-अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी।

- आप गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना भी कर सकते हैं। ईश्वर के प्रति आपकी निष्ठा एवं विश्वास बढ़ेगा।
- प्रत्येक दिन सूर्य को (तांबे के लोटे में लाल अक्षत, लाल फूल एवं रोली डालकर) जल दें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- बुधवार के दिन गणेशजी को दुर्वा चढ़ाएं व गणेश अथर्वशीष का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं नशम भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में आपको ज्यादा से ज्यादा मुनाफा होगा। यह समय आपकी सभी मनोकामनाओं को पूरा करने वाला है। लॉटरी, सट्टा इत्यादि कार्यों में अपना भाग्य आजमा सकते हैं। आप को अच्छी सफलता मिल सकती है। नवम स्थान का शनि अपेक्षाकृत ज्यादा मुनाफा देने वाला है, लेकिन आपकी सभी मनोकामनाएं जुलाई के बाद ही पूरी होंगी। हालाँकि जो लोग कारोबार या रीयल एस्टेट से जुड़े हैं, उनको थोड़ा मायूस होना पड़ सकता है। वैसे चिंता करने की बात नहीं है। क्योंकि 12 अगस्त के बाद राहु ग्रह का गोचर व्यावसायिक जीवन में अच्छी उन्नति ले कर आ रहा है।

बड़ी-बड़ी योजनाएं और अवसर आपके द्वार पर दस्तक देंगे। बस आपको पूर्ण विश्वास के साथ आगे की ओर कदम बढ़ाना है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण होगा। सवाल यह नहीं उठता है कि आप किस प्रकार की नौकरी कर रहें हैं, हर हाल में आपको सराहना, सहयोग और ऐसी खुशी मिलेगी जिसकी तलाश आप एक लम्बे समय से कर रहे थे। वर्तमान नौकरी के अलावा अन्य स्रोतों से भी आपको लाभ मिलेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए उत्तम रहेगा। संचित धन में वृद्धि होगी। धनागम के स्रोत बढ़ेंगे। नवीन संपत्ति खरीदने की दिशा में प्रयासरत रहेंगे। इस संबंध में आपको सफलता भी मिलेगा। 28 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में आपको क्रय विक्रय के मामले में सावधान रहना चाहिए। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं नहीं तो द्वादश स्थान के राहु आपका अनावश्यक खर्च बढ़ा सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आय के स्रोतों में बढ़ोत्तरी होगी। रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिलेंगे। कार्य व्यवसाय में भी आपको अच्छा लाभ मिलेगा, जिससे पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। एकादशस्थ राहु के कारण अचानक धन लाभ होगा और आय के सारे बन्द मार्ग खुलेंगे।

घर-परिवार, समाज

इस वर्ष आपकी पारिवरिक स्थिति बेहतर रहने वाली है। सभी लोगों के साथ स्नेह

और आपसी सौहार्द के साथ पेश आएं। परिवार के लोगों के सुझावों पर अमल करना आपके लिए फायदे का सौदा हो सकता है, लेकिन इसके विरुद्ध जाना घातक हो सकता है। जुलाई के बाद चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि परिवार में कुछ परेशानियों को जन्म दे सकती है, लेकिन कुछ ज्यादा हानि होने की संभावना नहीं है।

माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं, अतः उनका समुचित ख्याल रखें और व्यवहार में संयम बरतें। पिता के साथ आपके संबंध बेहतर रहेंगे। साल का उत्तरार्द्ध आपके लिए बेहतर साबित होगा और कारोबार में मुनाफा होगा। अपने जीवनसाथी के साथ मां-बाप की सेवा कर पुण्यार्जन करें।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ काफी शुभ रहेगा। यदि संतान की इच्छा रखते हैं तो गर्भाधान के लिए उत्तम समय चल रहा है। यदि आपके बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान मे उनका प्रवेश हो जाएगा।

जुलाई के बाद पंचम स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रतिकूल कर सकती है जिसके कारण उनकी शिक्षा-दिक्षा में रुकावटें आ सकती हैं। अतः उस समय अपने बच्चों के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। शारीरिक अनुकूलता बनाये रखने के लिए आप संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहेंगे। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे। परन्तु 28 मार्च के बाद आप छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं। राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण मानसिक अशान्ति व आलस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है। खान पान एवं दिनचर्या की अनुशासित बनायें।

वर्ष का उत्तरार्द्ध स्वास्थ्य के लिए अनुकुल रहेगा। खुद को मानसिक तौर पर खुश रखने की कोशिश करें। पर्याप्त मात्रा में पानी पीना और नियमित रूप से टहलना आपकी अच्छी सेहत का राज हो सकता है। हरी पत्तेदार सब्जियों को अपने आहार में शामिल करें। उपरोक्त सामान्य बातों का पालन कर आप निश्चित तौर पर स्वास्थ्य के धनी हो सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता मिलने का योग बन रहा है। व्यवसायी इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे तो अच्छा लाभ मिलेगा। आप विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए काफी शुभ है।

जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको वर्ष के उतरार्द्ध में नौकरी मिल जाएगी।

आपके लिए यह बहुत ही अच्छा समय चल रहा है। आप जिस क्षेत्र में काम कर रहे हैं उसमें आपको सम्मान मिलेगा।

यात्रा-तबादला

नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आपकी लम्बी यात्रा के योग बन रही है। 28 मार्च के बाद आप विदेश यात्रा भी करेंगे। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। यात्रा के अंतराल में किसी से मित्रता भी हो सकती है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध सामान्य रहेगा। छोटी यात्रा तो होती रहेंगी। विशेष किसी प्रकार की यात्रा का योग नहीं बन रहा है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आप अधिक से अधिक धार्मिक कार्य करेंगे। जैसे मन्दिर निर्माण, भण्डारा, गरीबों की सहायता इत्यादि। तीर्थ स्थलों की यात्रा कर खूब पुण्यार्जन करेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- दुर्गा कवच का पाठ करें या दुर्गा बीसा यन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसका पूजन करे।

दशा विश्लेषण

महादशा :- गुरु
(03/07/2023 - 03/07/2039)

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा 03/07/2023 को आरम्भ और 03/07/2039 को समाप्त होगी। इसकी अवधि सोलह वर्ष है।

गुरु चतुर्थ भाव में स्थित है और मातृभूमि, माता, निजी मामले, गुप्त जीवन, खेती, बगान पैतृक सम्पत्ति, शिक्षा-वृत्ति, जल, तालाब, दूध, नदी और झील के द्योतक इस भाव को बली कर रहा है। गुरु स्वभाव से एक शुभ ग्रह है। चौथे भाव में स्थित इस ग्रह की आपकी जन्मकुण्डली के आठवें, दसवें और बारहवें भावों पर दृष्टि है और यह इन भावों पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। अतः सोलह वर्षों की यह दशा आपके लिए अनुकूल, सुख तथा समृद्धिदायक होगी।

स्वास्थ्य :

चतुर्थ भाव में स्थित गुरु चतुर्थ भाव को बली कर रहा है। आपका जीवन सुखी और स्वस्थ होगा और कोई गम्भीर बीमारी या कष्ट नहीं होगा। आप अपना कार्य सामान्य ढंग से पूरा करेंगें।

धन-सम्पत्ति :

चतुर्थ भाव में स्थित गुरु की दृष्टि (बारहवें भाव के अतिरिक्त) आठवें और 'मंगलीय कार्य' तथा व्यवसाय के दसवें भाव पर है। इस दशा के दौरान आपको सम्पत्ति में वृद्धि करनें के पर्याप्त अवसर मिलेंगे। आप नयी गाड़ियाँ तथा नया मकान खरीद सकते हैं। आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी।

व्यवसाय :

चतुर्थ भाव में स्थित गुरु की दृष्टि (12वें भाव के अतिरिक्त) 8वें तथा व्यवसाय, दीर्घायु और 'सुखकार्य' के 10वें भाव पर है, अतः आप अपने व्यवसाय में सफल होंगे, कार्यक्षेत्र में आगे रहेंगे। आप नौकरीपेशा हों अथवा व्यवसायी, आपको अपनी व्यावसायिक वृत्ति में प्रगति के अच्छे अवसर मिलेंगे। आपके कार्य की आपके सहकर्मी तथा वरिष्ठ कर्मचारी सराहना करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

चतुर्थ भाव अर्थात माता, जन्म और 'सुखस्थान' के भाव में स्थित गुरु के कारण इस दशा के दौरान आपका पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। आपके जीवनसाथी आपके सहयोगी तथा बच्चे आज्ञाकारी होंगे। फलस्वरूप आपका पारिवारिक जीवन सद्भावपूर्ण रहेगा। परिवार में समरसता लाने में आपकी माता की भूमिका अहम होगी।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

चतुर्थ भाव, जो शिक्षा का भाव भी है, में स्थित गुरु के कारण आपकी शिक्षा उत्तम

होगी और आप सफल होंगे।

अंर्तदशा :- गुरु - गुरु
(03/07/2023 - 21/08/2025)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 03/07/2023 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 1 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 03/07/2023 को प्रांरभ होकर 21/08/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, उच्चज्ञान, जीवन और धन का कारक है।

इस अवधि में आपके माता से मधुर संबंध रहेंगे। अचल संपत्ति और वाहन का सुख मिलेगा। शिक्षा उत्तम होगी; परीक्षा में सफल होंगे। चरित्र उच्चकोटि का होगा, प्रसन्नचित्त रहेंगे। अध्ययन के लिए समय बहुत अच्छा है। निवास के परिवर्तन के लिए भी शुभ समय है। अध्यात्म, धर्म और दान देने की ओर प्रवृत्ति होगी। कार्यों में सफल रहेंगे।

आपके जीवनसाथी सम्मानित होंगे। आपके पिता के जीवन में अप्रत्याशित घटना घट सकती है। माता का स्वास्थ्य उत्तम होगा, प्रसन्न, संपन्न और सौभाग्यशाली होंगी। आपके भाई-बहनों के लिए धनार्जन, पारिवारिक सुख, शत्रुओं पर विजय का संकेत है।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो यात्राएं होंगी, खर्चे बढ़ेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो हर प्रकार से लाभ होगा। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ होगा। व्यापारियों का लाभ बढ़ेगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। छाती के रोगों से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए बृहस्पति के मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :- गुरु - शनि
(21/08/2025 - 03/03/2028)

आपकी बृहस्पति की महादशा 03/07/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 12 दिन रहेगी। आपके लिए यह 21/08/2025 को प्रारंभ होकर 03/03/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में आपके पास आर्थिक संसाधन पर्याप्त होंगे। अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। शिक्षा उत्तम होगी। पारिवारिक जीवन में स्थायित्व आएगा। आपके कार्य की जनता द्वारा सराहना होगी। अदालत में जीत होगी। प्रत्येक कार्य जिम्मेदारी, दक्षता और सलीके से करेंगे। सफलता प्राप्त करने में थोड़ा संघर्ष करना पड़ेगा। ऐसे कार्य जिनमें लगन, परिश्रम और दक्षता की आवश्यकता हो, आपके लिए उपयुक्त रहेंगे।

आपके जीवनसाथी का उत्थान होगा। आपके पिता को साझेदारी से लाभ होगा। माता सफल रहेंगी; उनकी ज़िम्मेदारी बढ़ सकती है। आपके भाई-बहनों के लिए धनलाभ,

सुख-सुविधाएं, उत्तम शिक्षा, शत्रुओं का मुकाबला करने की शक्ति का संकेत है।

आपकी संतान को सफल होने के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी और प्रसन्न होंगे, यात्राएं होंगी।

अगर आप सेवारत हैं तो धनलाभ होगा; आय बढ़ेगी। परामर्शदाताओं को साझेदारों से लाभ होगा। व्यापारियों का लाभ उत्तम होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। छाती में मामूली संक्रमण हो सकता है; पेट में दर्द या अन्य तकलीफ से बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए काले तिल, उड़द, चमड़ा और सरसों का तेल दान करें।

अंर्तदशा :- गुरु - बुध
(03/03/2028 - 09/06/2030)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 03/07/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तृतीय अंतर्दशा बुध की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 03/03/2028 को प्रारंभ होकर 09/06/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धि, स्मृति और हाज़िरजवाबी का कारक है।

इस अवधि में आप लेखन, पठन, अध्यापन आदि में रुचि लेंगे। सब कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण होंगे। महत्वपूर्ण फैसले करेंगे। व्यापार में प्रवीण होंगे। कला में रुचि होगी। संचार माध्यम या कंप्यूटर से जुड़ सकते हैं। अध्यात्म में रुचि होगी। दूरस्थ स्थान के लोगों से संपर्क हो सकता है।

आपके जीवनसाथी की लंबी यात्रा हो सकती है, धनी बनेंगे। आपके पिता को व्यापार या निवेश से लाभ हो सकता है। माता के शुभ कार्यों पर खर्चे बढ़ेंगे; अध्यात्म, ध्यान आदि में रुचि लेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए ज्ञान-विज्ञान में रुचि, धनलाभ, निवेश से लाभ और शिशु जन्म का संकेत है।

आपकी संतान के नये मित्र बनेंगे, सम्मान मिलेगा, परीक्षा में सफल होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो तरक्की करेंगे, धनलाभ होगा, नये मित्र बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय में सफलता मिलेगी। परामर्शदाता सफलता और प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे, धनी बनेंगे। व्यापारी भाग्यशाली और धनी होंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। स्नायविक तनाव से बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध मंत्र का जाप करें।

ॐ बुं बुधाय नमः

योग

शशक योग

स्वगेहतुङ्गाश्रयकेन्द्रसंस्थैरुच्चोपगैर्वाचनसूनुमुख्यैः।
क्रमेण योगा रुचकाख्यभद्रहंसाख्यमालव्यशशाभिधानाः।।
लघुर्द्विजास्योऽद्रिगतः सकोपः शठोऽतिशूरो विजनप्रचारः।
वनाद्रिदुर्गेषु नदीषु सक्ताः प्रियातिथिर्नातिलघुः प्रसिद्धः।।
नानासेनानिचयनिरतो दन्तुरश्चापि किंचि-
द्धातोर्वादे भवति कुशलश्चंचलो लोलनेत्रः।
स्त्रीसंसक्तः परधनहरो मातृभक्तः सुजङ्घो
मध्ये क्षामः सुललितमती रन्ध्रवेदी परेषाम् ।।
पर्यङ्कशङ्खशरशस्त्रमृदङ्गमाला-
बीणोपमाःखलु करे चरणे च रेखाः।
वर्षाणि सप्ततिमितानि करोति राज्यं
प्राप्तं शशाख्यनृपतिः कथितो मुनीन्द्रैः।।

।। मानसागरी ।। अ.4/श्लोक 2, 9, 1-3।।

यदि जन्मपत्रिका में स्वराशि अथवा उच्चहोकर शनि केन्द्र में हो तो शशक योग बनता है।

इस योग में समुत्पन्न जातक छोटे दाँत और छोटे मुखवाला, पर्वत पर रहने वाला, क्रोधी, हठी, महावीर, वन, पर्वत, नदी किनारे आदि में निवास करने वाला, अतिथि सेवा करने वाला, मध्यम कद का व्यक्ति होता है। सेनाओं को एकत्रित (इक्ट्ठा) करने में आसक्त, खनिज विद्या में निपुण, स्त्री में आसक्त, पराये धन हरण करने वाला, माता में भक्ति रखने वाला, श्रेष्ठ बुद्धि वाला, दूसरे के छिद्रों को जानने वाला, हाथ पाँव में पलङ्ग, शङ्ख, वाण, शस्त्र, मृदङ्ग, माला वीणा आदि के चिह्नों से युक्त और 70 वर्ष पर्यन्त राज्य करने वाला होता है।

योग कारक ग्रह : शनि

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप जातक उद्योगपति, राजदूत, मुखिया, मैकेनिकल इन्जीनियर, रसायनिक इन्जीनियर या माइन्स इन्जीनियर, भवन निर्माण, लौहकार्य, ट्रांसपोर्ट कार्य, नौकरी, महाव्यवसायी, भारी उद्योग के मालिक, राजनेता, मंत्री, राजनीतिक क्षेत्र में वांछित सफलताएं प्राप्त होंगी।

वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक्।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ।।

।। सारावली ।। अ.14/श्लोक 1, 6।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्विक प्रवृत्ति वाले होंगे।

अमलयोग

चन्द्राद्योम्न्यमलाह्वयः शुभखगैर्योगो विलग्नादपि।
क्ष्मेशः स्यादमले धनी सुतयशः संपद्युतो नीतिमान्।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 19-20 ।।

यदि पत्रिका में लग्न या चंद्रमा से दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो अमला योग होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूमि के स्वामी, धनी, नीतिवान् पुत्र एवं संपत्ति से युक्त यशस्वी व्यक्ति होंगे।

जलधियोग

भावैः सौम्ययुतेक्षिततैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।
गोसंपद्धनधान्यशोभिसदनं बन्धुप्रपूर्णं वर-
स्त्रीरत्नाम्बरभूषणानि महितस्थानं च सर्वोत्तमम्।
प्राप्नोत्यम्बुधियोगजः स्थिरसुखो हस्त्यश्वयानादिगो
राजेड्यो द्विजदेवकार्यनिरतः कूपप्रपाकृत्पथि।।
।। फलदीपिका ।। अ.6/श्लोक 44, 48।।

यदि जन्मकुंडली में सुखस्थान में शुभग्रह हों अथवा चतुर्थस्थान पर शुभग्रह की दृष्टि पड़ रही हो और चतुर्थेश अस्त न हो तथा अपनी स्वराशि या उच्चराशि में स्थित होकर उत्तम स्थान में हो तो जलधि (समुद्र) योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शनि योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप धन-धान्य गोधन से युक्त उच्च भवन में निवास करेंगे तथा बंधु-बाधवों से सुख प्राप्त करेंगे। पत्नी, रत्न, वस्त्र, आभूषण आदि सुख से सुखी होंगे। आप स्थिर लक्ष्मीवान होंगे तथा धार्मिक

कार्यों में रूचि रखेंगे। हर प्रकार का सुख आपके भाग्य से प्राप्त होता रहेगा।

नीचभंग राजयोग

नीचस्थितो जन्मनि यो ग्रहः स्यात्तद्राशिनाथोऽपि तदुच्चनाथः।
स चन्द्रलग्नाद्यदि केन्द्रवर्ती राजा भवेद्धार्मिकचक्रवर्ती।।
।। फलदीपिका।। अ. 7/श्लोक 26।।

यदि जन्मकाल के समय कोई ग्रह नीच राशि में स्थित हो तथा इस नीच राशि का स्वामी चंद्रमा से केंद्र में हो और जो ग्रह नीच है और उसका उच्चनाथ भी चंद्रमा से केंद्र में हो तो नीचता भंग हो जाती है। अर्थात् उत्तम राजयोग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,चंद्र — योग की संभावना : 108 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप निश्चय ही राजसुख का भोग करेंगे। सभी आधुनिक सुख-सुविधाओं से युक्त होकर राजा के समान प्रतिष्ठित होंगे।

पृथ्वीपति योग

पत्यौ कुटुम्बस्य तृतीयराशौ स्थिते यदा पुंग्रहसौम्यदृष्टे।
शुभ स्थिते खेचरनायके स्यात्स्वतुङ्गगे सर्वजनावनीशः।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 3/श्लोक 17।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव का स्वामी तीसरे शुभ ग्रह तथा पुरुष ग्रह (सूर्य, मंगल, गुरु) से दृष्ट हो और शुभग्रह की राशि में या अपनी उच्च राशि में हो तो जातक पृथ्वी का राजा होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल — योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कई देशों में सेवा करने वाले राष्ट्राध्यक्ष, राजदूत और उच्चस्तरीय राज्याधिकारी होंगे।

नौका योग

होरादिकष्टकेभ्यः सप्तर्क्षगतैः क्रमेण योगाः स्युः।
सलिलोपजीविविभवा बह्वाशाः ख्यातकीर्तयो हृष्टाः।
कृपणा बलिनो लुब्धा नौसम्भूताश्चलाः पुरुषाः ।।
।। सारावली ।। अ. 21/श्लोक 11, 21।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्न से सप्तम स्थान तक ही सातों ग्रह स्थित हों तो नौका योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,चंद्र,मंगल,बुध,गुरु,शुक्र योग की संभावना : 45 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में नौकायोग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप जल द्वारा जीविका करके अधिक विभव तथा धन लाभ कर्त्ता, प्रसिद्ध, यशस्वी, आशावान, प्रसन्न चित्त, कृपण, बली, लालची और चंचल स्वभाव के प्राणी होंगे।

भ्रातृवृद्धि योग

भ्रातृपे कारके वापि शुभयोगनिरीक्षिते ।
भावे वा बलसंपूर्णे भ्रातृणां वर्धनं भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो. -16 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय स्थान तथा तृतीय भाव कारक शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो एवं पूर्णबली हो तो भाइयों की वृद्धि होती है।

योग कारक ग्रह : बुध,मंगल योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भाइयों में वृद्धि हो, ऐसा प्रतीत होता है।

युद्ध कुशल एवं कलह प्रवीण योग

धैर्यान्वितो विक्रमराशिनाथसंयुक्तराश्यंशपतौ यदंशे ।
तदंशनाथे स्वगृहादिवर्गे युद्धे विदग्धः कलहप्रवीणः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-33 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश जिसकी राशि अंश में है, वह ग्रह अपने राश्यादि वर्ग में हो तो जातक धैर्यवान, युद्ध में चतुर और कलह करने में निपुण होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शनि योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप धैर्यधारण करने वाले, युद्ध में चतुर और कलह प्रिय प्राणी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

धीर पुरुष योग

जीवान्विते धीरतया समेतः सर्वार्थशास्त्रार्थविशारदः स्यात् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-41 ।।

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश गुरु से युक्त हो तो सब अर्थ एवं शास्त्रार्थ पारंगत होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप विद्व

ान एवं धैर्यवान होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

कंठरोग योग

पापे तृतीये गलरोगमत्र वदन्ति मांद्यादियुते विशेषात् ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-47 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तीसरे भाव में पाप ग्रह हो विशेषतः मांद्यंशादि युक्त हो तो कंठरोग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको कंठ रोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,राहु,केतु,गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

दीर्घायु भ्रातृ योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ.-285।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय भाव में शुभग्रह हो तो दीर्घायु भाई होते हैं।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भाई दीर्घायु होंगी, ऐसा प्रतीत होता है।

हृदय रोग योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ.-285।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश के साथ केतु स्थित हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

योग कारक ग्रह : केतु,गुरु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप हृदय रोग के रोगी होंगे ऐसा प्रतीत होता है।

मातृस्नेह योग

यदा लग्नसुखेशौ वा मित्रभूतौ परस्परम् ।
शुभेक्षितौ शुभैर्युक्तौ मातृस्नेहं विनिर्दिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-148 ।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश चतुर्थेश परस्पर मित्र हों, शुभ ग्रहों से युक्त और दृष्ट हो तो माता का विशेष स्नेह प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,शुक्र योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अपनी माता का विशेष स्नेह प्राप्त हो ऐसा प्रतीत होता है।

वाहनादि प्राप्ति योग

वाहनेशे बलयुते वाहने शुभसंयुते ।
शुभग्रहेण संदृष्टे वाहनादिफलं भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-152 ।।

यदि जन्मपत्रिका में चतुर्थेश बलिष्ठ होकर सुख स्थान में शुभ युक्त या दृष्ट हो तो वाहन आदि सुख प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शनि योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको उत्तम वाहन सुख प्राप्त हो ऐसा प्रतीत होता है।

सुन्दर भवन प्राप्ति योग

तृतीये सौम्यसंयुक्ते गेहेशे स्वबलान्विते ।
लग्नेशे बलसंपूर्णे हर्म्यं प्राकारसंयुतम् ।।
।। जातकपारिजात ।। अ.12/श्लो.-148 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय भाव में शुभ ग्रह हो, चतुर्थेश बलिष्ठ हो और लग्नेश पूर्ण बली हो तो जातक को सुंदर भवन प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र,शनि योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको

सुंदर भवन प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

पुत्रनाश योग

पापमध्ये तु यद्भावे तदीशेऽपि तथा स्थिते ।
कारके पापसंयुक्ते पुत्रनाशं वदेत्तदा ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-14 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम भाव या पंचमेश पाप ग्रहों के बीच हो, तथा संतान कारक ग्रह भी पाप युक्त हो तो पुत्रनाश योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शनि,केतु,गुरु — योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको संतान सुख में बाधा हो ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ।
वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-35 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश जिसके नवांशक में हो वह शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शनि — योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीव्र बुद्धि के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

एकपुत्र योग

पुत्रेशांशपतिः स्वभांशकगतो यद्येकपुत्रं वदेत् ।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.-11 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम स्थान का स्वामी जिस नवांश में हो, उस नवांश का स्वामी निज नवांश में हो तो एक पुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शनि — योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको मात्र एक पुत्र का सुख प्राप्त हो ऐसा प्रतीत होता है।

तीन पुत्र प्राप्ति योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ.- 296 ।।

यदि जन्मपत्रिका में मकर राशि का शनि 6 अंश 40 कला तक हो तो तीन पुत्र होते हैं।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 60 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको तीन पुत्र प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

शिर मुख या गुल्म रोग योग

बलहीनेऽरिनाथे वा लग्नस्थे वा धरासुते।
मूर्धार्तिर्मुखरोगो वा गुल्मविद्रधिभाग्भवेत्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि-अ.-5/श्लो.-42 ।।

यदि जन्मकुंडली में षष्ठेश निर्बल हो या लग्नस्थ हो अथवा लग्न में मंगल हो तो शिर में पीड़ा या मुखरोग अथवा गुल्मरोग होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको शिर रोग, मुखरोग या गुल्म रोग से पीड़ित होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

पुनर्जन्म योग

महीजोमहीं सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।

।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में मंगल हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में मंगल स्थित हो अथवा द्वादशेश मंगल से संबंध स्थापित करता हो तो जातक मरणोपरांत शीघ्र जन्म लेकर पृथ्वी पर आता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,बुध | योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत पुनर्जन्म लेकर पृथ्वी पर आएँगे। ऐसा प्रतीत होता है।

वैकुण्ठवास योग

वैकुण्ठं शशिजो सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनाकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में बुध स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में बुध हो अथवा द्वादश भाव के स्वामी बुध से कोई संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत वैकुंठवासी होता है।

योग कारक ग्रह : बुध | योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत वैकुंठवासी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : सूर्य,बुध,मंगल | योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुस्त्री योग

लाभदारेश्वरौ युक्तौ परस्परनिरीक्षितौ ।

बलाढ्यौ वा त्रिकोणस्थौ बहुस्त्रीसहितो भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-31।।

यदि जन्मकुण्डली में लाभेश सप्तमेश से युक्त हों अथवा परस्पर देखते हों और बलिष्ठ हो या त्रिकोणस्थ हो तो बहुस्त्री योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 172 में 1

आपकी कुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका संबन्ध कई से होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

सुलक्षणी स्त्री योग

दारेशे शुभसंयुक्ते शुभखेचरवीक्षिते ।
शुभग्रहाणां मध्यस्थे सत्कलत्रादिभाग्भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-40 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश शुभ ग्रह से युक्त, शुभ ग्रह से दृष्ट तथा शुभ ग्रहों के मध्य में हो तो जातक को सुलक्षणी स्त्री प्राप्त होती है।

योग कारक ग्रह : मंगल,बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका जीवनसाथी सुलक्षणी होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

गजकेसरी योग

''केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति।
दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात्।।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 1 ।।

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है और चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेशरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : मंगल,गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

गोपुरांश योग

''सगोपुरांशो यदि गोधनानि ''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "गोपुरांश" भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में "गोपुरांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।

पारावतांश योग

''करोति पारावतभागयुक्तो विद्यायशः श्रीविपुलं नराणाम्।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 35 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "परावतांश" भाग में ग्रह स्थित हो, वह प्राणी विद्या, यश, अचल लक्ष्मी तथा अतुल सम्पत्ति से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 6 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "पारावतांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप विद्वान, यशस्वी, लक्ष्मीवान, अतुल सम्पत्तिवान व्यक्ति होंगे।

केमद्रुम योग

''चेत्वित्तव्ययगाः भवन्ति न खगाः केमद्रुमः स्यात्तदा।
प्राचीनैर्मुनिभिः स्मृताः श्रुतिमिताः योगाः शशाङ्कोद्भवाः।।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 43 ।।

यदि जन्मपत्रिका में चन्द्र से द्वितीय अथवा द्वादश भाव में कोई भी ग्रह न हों तो "केमद्रुम" योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 32 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "केमद्रुम" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धन(अर्थ), पुत्र, पत्नी, भाई से हीन, नौकरी पेशा वाले (दास) एवं परदेश में निवास करेंगे।

वासि योग

''व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।

वेशि योग

''धनखेटैर्वेशी दिनेशात्''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : गुरु,शनि,केतु,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वेशि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।